₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

नवम्बर 2014

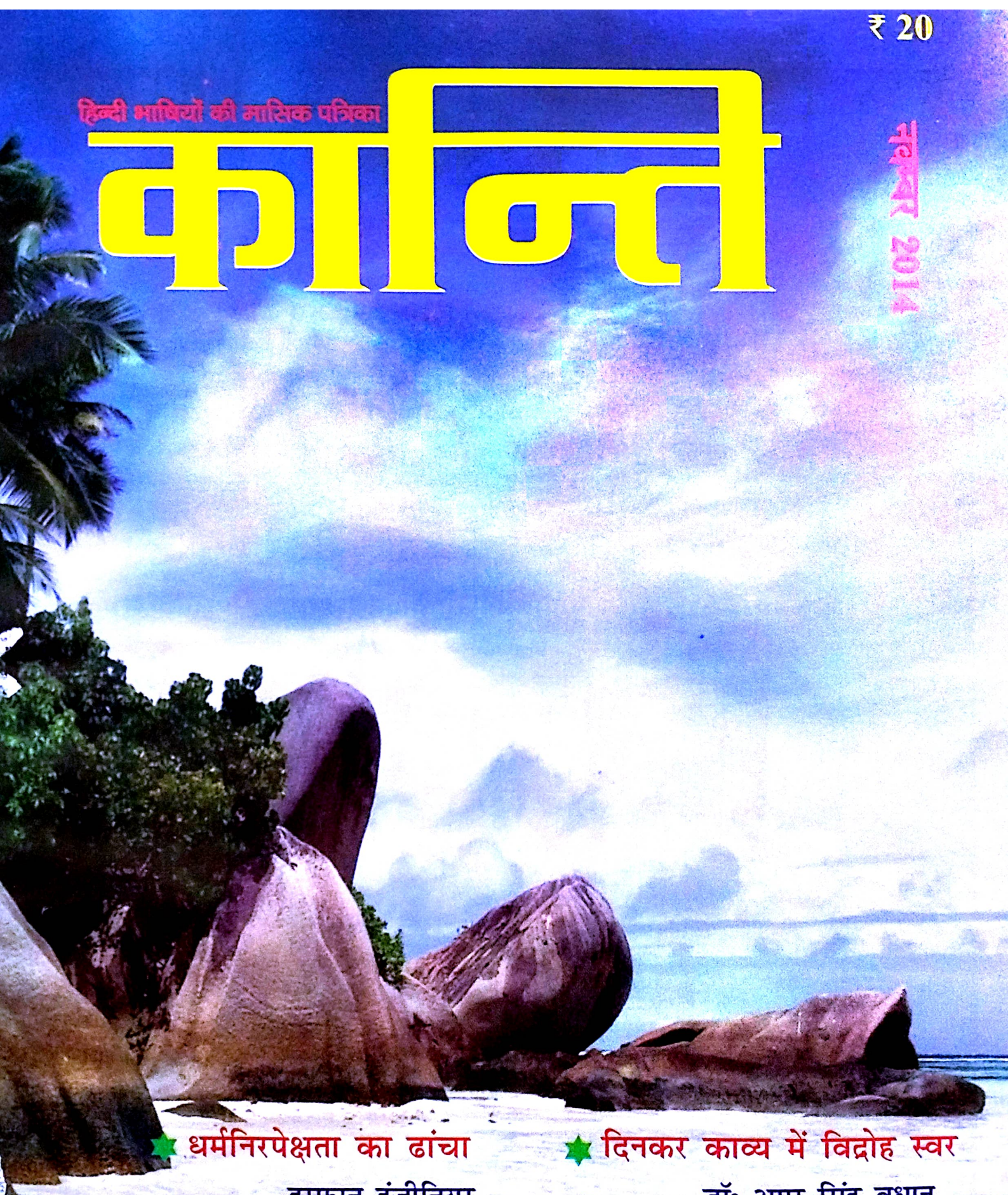

- धर्मनिरपेक्षता का ढांचा —इरफ़ान इंजीनियर
- दिनकर काव्य में विद्रोह स्वर —डॉ॰ अमर सिंह वधान
- साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण क्यों ? —राम पुनियानी
- जब मुझे सत्य का ज्ञान हुआ —स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य
- शान्ति और प्रेम का संदेश —इन्तिज़ार नईम
- हम नहीं हैं अब पीड़िता ! —फ्लेविया एग्नेस

S. Riyaz Khadri

RIYAZ
Decorators
Real Estate
Medical Store
Consultancy
Enterprises

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

RIYAZ DECORATORS

On hire Shamiyana Pandal, Sound System Lighting Chairs, Table and Crockery etc. Items

SHOP : Opp. Zuari Complex, Block No. 3, Patrong Baina-Vasco, Goa-403 802

RES : Fire Wood Depot, Sasmolem Baina, Vasco-Goa



S. Riyaz Khadri

RIYAZ Real Estate

Sales, Purchase & Letting of Commercial/Residential Properties & Development Plots

Off. : 2519501/6970673
Res. : 2517612
Fax : 2517992
Mob. : 9422060878
9423888457

Off. Shop No. 4, Navprasth Estate, Near Kharpreshwar Mandir, Patrong Baina, Vasco-da-Gama, Goa - 403 802

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 5 नवम्बर 2014

ऐ ईमान लाने वालो ! अल्लाह के लिए ख़ूब उठने वाले, इन्साफ़ की निगरानी करने वाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

दशा-दुर्दशा

एक पुराने फ़िल्मी गीत के
शब्दों में थोड़ी-सा बदलाव–
''देख तेरे संसार की हालत
क्या हो रही भगवान
कितना बिगड़ गया इन्सान !''

दिन-ब-दिन विश्व परिदृश्य
डरावना होता जा रहा है
चारों ओर से तबाही बरबादी
नरसंहार के दुखद समाचार
आते ही जा रहे हैं !

इ़राक़ हो या सीरिया
फ़िलिस्तीन हो या मिस्र
यूक्रेन हो या रूस
मारकाट ही तो मची है
मर रहे हैं बेचारे बेगुनाह
जिनकी सुनने वाला भी
अब कोई नज़र नहीं आता !
सिविलियन हवाई जहाज़ के
सैकड़ों यात्री-मर्द औरतें बच्चे–
बेक़सूर मार गिराये जाते हैं और
जैसे कहीं कोई सुगबुगाहट भी नहीं होती !
कहां सो रहे हैं संयुक्त राष्ट्र और सुरक्षा परिषद ?
शायद उनकी हालत भी पुरानी
लीग ऑफ़ नेशंस जैसी हो चुकी है
नहीं सुनता नहीं मानता कोई उनकी !
मात्र बतकही के लिए अपनी
दुकान सजा कर बैठे हैं !

क्या करें आम आदमी
कैसे झेले यह तनाव ?

ओमप्रकाश बजाज
जबलपुर (म०प्र०)



कहां क्या है ?

दशा-दुर्दशा	–ओमप्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
ज्ञान (हदीस मंजरी)		6
पलटिए, अपने रब की तरफ़ (संपादकीय)		7
जनता पर बोझ बना संविधान (आपके पत्र)		9
इस्लाम क्या है ? (आस्था)	–मरयम जमीला	13
जब मुझे सत्य का ज्ञान हुआ (अभिमत)	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	16
इन्सानों के मौलिक अधिकार	–डॉ॰ उबैदुल्लाह फ़हद फ़लाही	17
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का मानवता को संदेश (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	20
कसक (कहानी)	–जयप्रकाश वाल्मीकि	21
शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास (दृष्टिकोण)	–डॉ॰ अर्चना रानी वालिया	24
धर्मनिरपेक्षता का ढांचा (विशेष आयोजन)	–इरफ़ान इंजीनियर	26
साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण क्यों ?	–राम पुनियानी	29
दीवाना (कहानी)	–शीरीं नियाज़ी	31
दीवाली का मतलब दीवाला नहीं ! (इक दूजे को जानें)	–डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव	35
निरंकुश और घमंडी बनाता पैसा और सत्ता (ज्वलंत सामयिक)	–सी॰ के॰ रहमानी	37
शान्ति और प्रेम का संदेश (सद्भावना)	–इन्तिज़ार नईम	39
नग़मा-ए-अम्नो मुहब्बत (कविता)	–इन्तिज़ार नईम	39
दिनकर काव्य में विद्रोह स्वर (साहित्यिकी)	–डॉ॰ अमर सिंह वधान	41
लघुकथाएं		45
हम नहीं हैं अब पीड़िता ! (व्यथा)	–फ्लेविया एग्नेस, आंड्रे डी मेलो	47
महान चिकित्सक इसहाक़ इसराईली	–मौलाना सिराजुद्दीन नदवी	49
बिल्ली और अंधविश्वास (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	50

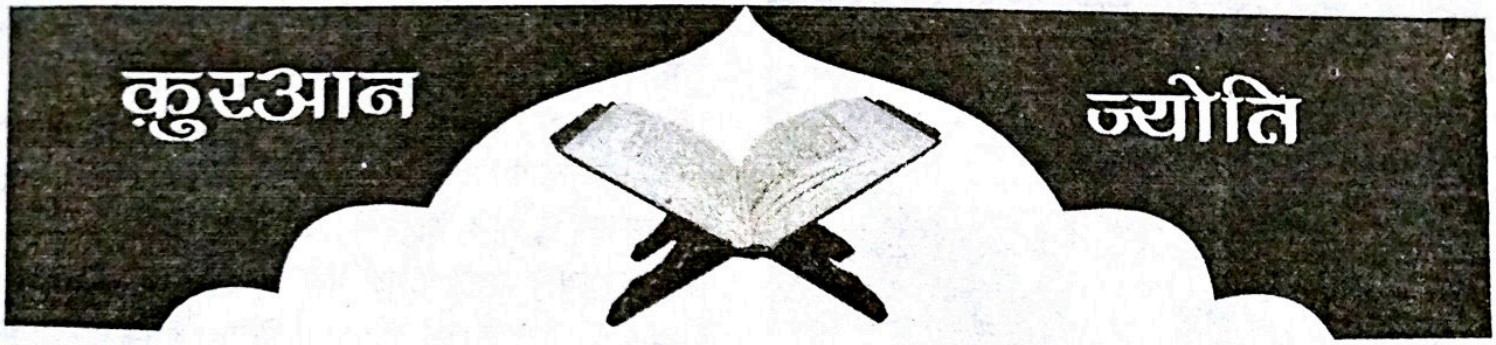

(60) साथ ही ये (सदक़े) छुड़ाने[65] और क़र्ज़दारों की मदद करने में[66] और अल्लाह के रास्ते में[67] और मुसाफ़िर की सहायता में[68] इस्तेमाल करने के लिए हैं। एक कर्तव्य है अल्लाह की ओर से, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और गहरी सूझ-बूझ वाला है।

(61) इनमें से कुछ लोग हैं जो अपनी बातों से नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह आदमी कानों का कच्चा है।[69]

–क़ुरआन, 9 : 60,61

---

65. गरदनें छुड़ाने से तात्पर्य यह है कि दासों को स्वतंत्र कराने में ज़कात का माल ख़र्च किया जाए।

66. अर्थात ऐसे ऋणी (क़र्ज़दार) जो अगर अपने माल से अपना पूरा क़र्ज़ (ऋण) चुका दें तो उनके पास निसाब (इतना माल जिससे ज़कात अनिवार्य हो जाता है) की मात्रा से कम माल बच सकता है।

67. 'अल्लाह के रास्ते' का शब्द आम है। तमाम वे नेकी के काम, जिनमें अल्लाह की प्रसन्नता हो, इस शब्द के अर्थ में सम्मिलित हैं। इसी कारण उलमा के एक गिरोह ने यह मत व्यक्त किया है कि इस आदेश के अनुसार ज़कात का माल हर प्रकार के नेक कामों में ख़र्च किया जा सकता है। लेकिन अधिकतर इस बात को मानते हैं कि यहां 'अल्लाह के रास्ते' में से तात्पर्य 'अल्लाह के रास्ते का जिहाद' है, अर्थात् वह जिद्दोजहद जिसका अभिप्राय कुफ़्र की व्यवस्था को मिटाना और उसकी जगह इस्लामी व्यवस्था को स्थापित करना हो। इस जिद्दोजहद में जो लोग काम करें, उनके सफ़र ख़र्च के लिए, सवारी के लिए अस्त्र-शस्त्र और सामग्री जुटाने के लिए ज़कात से मदद दी जा सकती है, चाहे वे निजी तौर पर खाते-पीते लोग हों और अपनी निजी ज़रूरतों के लिए उनको मदद की ज़रूरत न हो। इसी तरह जो लोग स्वेच्छा से अपनी तमाम सेवाएं और अपना तमाम समय, अस्थायी या स्थायी रूप से, इस काम के लिए दे दें उनकी ज़रूरतें पूरी करने के लिए भी ज़कात से अस्थायी या स्थायी मदद दी जा सकती है।

68. मुसाफ़िर, भले ही अपने घर का ख़ुशहाल हो, लेकिन सफ़र की हालत में अगर वह मदद का मुहताज हो जाए तो उसकी मदद ज़कात की मद से की जाएगी।

69. मुनाफ़िक़ नबी (सल्ल॰) पर जो दोष आरोपित करते थे उनमें से एक यह बात भी थी कि नबी (सल्ल॰) हर आदमी की सुन लेते थे और हर एक को अपनी बात कहने का अवसर दिया करते थे। यह गुण उनकी दृष्टि में दोष था। कहते थे कि आप कानों के कच्चे हैं, हर एक की बात मान लेते हैं। इस आरोप की चर्चा अधिकतर इस कारण की जाती थी कि सच्चे ईमान वाले इन मुनाफ़िक़ों के षड्यंत्रों और इनकी दुष्टताओं और इनकी विरोधी बातों का हाल नबी (सल्ल॰) तक पहुंचा दिया करते थे और इस पर ये लोग जल-भुनकर कहते थे कि आप हम जैसे सज्जनों और इज़्ज़तदारों के विरुद्ध हर कंगाल और हर फ़क़ीर की दी हुई ख़बरों पर भरोसा कर लेते हैं।

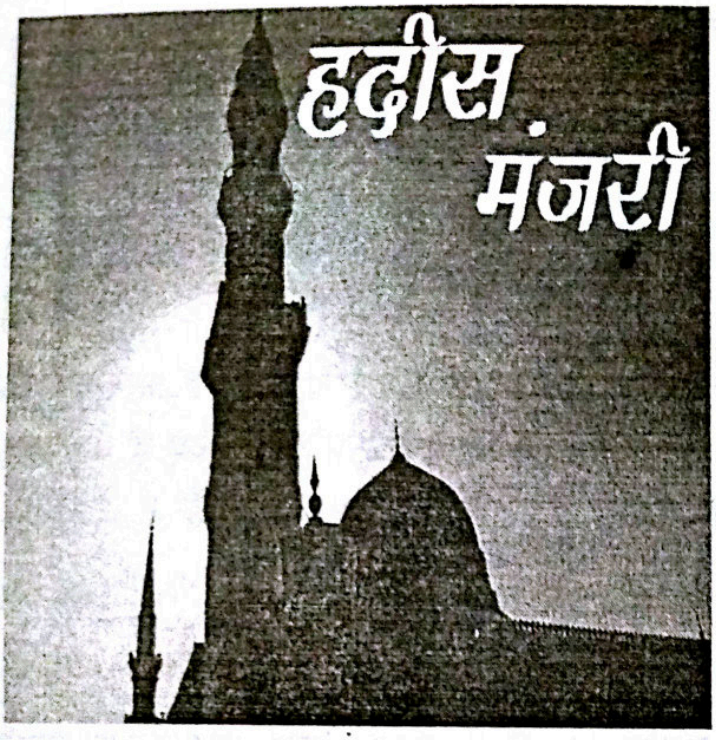

ज्ञान

● हज़रत मुआविया (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह जिस किसी के साथ भलाई का इरादा करता है उसे दीन की समझ प्रदान करता है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ईर्ष्या (आशय है स्पर्धा से) केवल दो आदमियों के सिलसिले में की जा सकती है : एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने धन दिया फिर उसको सत्य-मार्ग में लुटाने का दैवयोग प्रदान किया, और दूसरा वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने हिक्मत (तत्वदर्शिता, निर्णय-शक्ति) प्रदान की, तो वह उसके अनुसार निर्णय करता है और उसकी शिक्षा देता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिस मार्गदर्शन और ज्ञान के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है उसकी मिसाल ऐसी है जैसे वर्षा जो धरती पर हुई, तो उस (धरती) का जो भाग अच्छा था उसने जल को ग्रहण कर लिया और हरियाली और हरी-हरी घास उग आयी और उसका जो भाग कठोर था उसने जल को रोक लिया, तो अल्लाह ने उससे लोगों को फ़ायदा पहुंचाया। लोगों ने उससे वह जल पिया और जानवरों और खेतों को सिंचित किया और खेती-बाड़ी की और वह वर्षा भूमि के एक ऐसे भाग पर भी हुई जो चटियल है, वह न जल को रोक सकता है और न हरियाली उगा सकता है । यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने अल्लाह तआला के (उतारे हुए) दीन में समझ प्राप्त की और उस चीज़ से फ़ायदा उठाया जिसके साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है, तो उन्होंने सीखा और सिखाया । और यह उन लोगों की मिसाल है जिन्होंने न तो इस तरफ़ सिर उठाकर देखा और न अल्लाह के उस मार्गदर्शन को अपनाया जिसके साथ मुझे भेजा गया है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सह्ल बिन साअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने हज़रत अली (रज़ि॰) से कहा : "अल्लाह की क़सम, यदि अल्लाह तुम्हारे द्वारा किसी एक आदमी को सत्य-मार्ग पर लगा दे, तो यह तुम्हारे लिए लाल ऊंटों से बेहतर है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "मेरी ओर से पहुंचाओ यद्यपि एक ही आयत हो और बनी इसराईल (यहूदियों और ईसाइयों) से सुनी हुई रिवायत बयान करो, इसमें कोई दोष नहीं और जो व्यक्ति जान-बूझकर झूठी बात मुझसे जोड़े वह अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले ।"

–बुख़ारी

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति किसी मार्ग में ज्ञान की खोज करता हुआ चला अल्लाह उसके लिए जन्नत का मार्ग सुगम कर देगा ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने सन्मार्ग की तरफ़ बुलाया उसे उन लोगों के सवाब के बराबर सवाब मिलेगा जो उस पर चले हों और इससे उनके सवाब में कमी नहीं की जाएगी ।" –मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

पलटिए, अपने रब की तरफ़

इस्लाम क़यामत के आने पर पूर्ण धारणा रखने की शिक्षा देता है । क़यामत का अर्थ है महाप्रलय, पुनरुत्थान । यह ऐसा दिन है जब मौजूदा सांसारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी । सारे जीवधारी मर जाएंगे । इसके बाद अल्लाह एक दूसरी सृष्टि की रचना करेगा । सारे लोग पुनः ज़िन्दा करके उठाये जाएंगे और उन्हें उनके अपने कर्मों का बदला दिया जाएगा । यही क़यामत का दिन होगा । पवित्र क़ुरआन में है–''(इन्सान) पूछता है, 'आख़िर क़यामत का दिन कब आएगा ? तो जब निगाह पथरा जाएगी और चन्द्रमा प्रकाशहीन हो जाएगा, और सूर्य, चन्द्रमा मिलाकर एक कर दिये जाएंगे । उस दिन इन्सान कहेगा कहां भागकर जाऊं ? कदापि नहीं, वहां शरण लेने की कोई जगह न होगी । उस दिन तेरे रब ही के सामने जाकर ठहरना होगा । (75:6-12) क़यामत अचानक आएगी, मगर कब आएगी, सिर्फ़ अल्लाह को मालूम है । लेकिन इसके लक्षण ज़रूर हैं, जिनके आधार पर क़यामत की कल्पना की जाती है । इन्सान अपनी करतूतों से प्रकृति के उपादानों का विनाश कर रहा है, जो भी बिगाड़ और विनष्टीकरण का कारण है । आज इन्सान ख़ुद प्राकृतिक संसाधनों को मिटाने पर लगा हुआ है । लगातार प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप कर इन्सान ने ख़ुद को प्रकृति के सामने ला खड़ा किया है जहां प्रकृति उसका विनाश कर सकती है...जंगलों की कटाई कर असंतुलन पैदा किया जा रहा है...हवा को प्रदूषित कर दिया गया है तो जल को भी इन्सान ने नहीं बख़्शा । जब से पृथ्वी बनी है, छिटपुट विनाश के कई चरण हुए हैं, कई प्रजातियां विलुप्त हुई और कई नयी आयी हैं । भूगर्भीय साक्ष्य भी पृथ्वी पर कई प्राचीन विनाशकारी हलचल को दर्शाते हैं, चाहे वे भूकम्प के रूप में, ज्वालामुखी के रूप में या फिर बाढ़ के रूप में जिसकी परिणति इससे पहले कई बार हिमयुग के रूप में हुई है तो कई बार भयंकर बाढ़, तूफ़ान आदि के रूप में । यह अल्लाह की चेतावनियां और उसके वजूद की निशानियां भी हैं । वही स्रष्टा है और संहारक भी । अब विज्ञान भी इस तथ्य को मानने लगा है । भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान के मशहूर प्रोफ़ेसर स्टीफन हॉकिंग ने पिछले दिनों दुनिया को चेतावनी दी है कि जिस 'गॉड पार्टिकल्स' ने सृष्टि को स्वरूप और आकार दिया है, उसमें पूरी दुनिया को ख़त्म करने की भी क्षमता है । प्रोफ़ेसर हॉकिंग की 'संडे टाइम्स' (लंदन 7 सितंबर 2014) को दी इस रिपोर्ट ने विज्ञान जगत में खलबली मचा दी है । वैज्ञानिक इस विषय को लेकर काफ़ी रोमांचित हैं । हॉकिंग का कहना है कि अगर वैज्ञानिक गॉड पार्टिकल्स को हाई टेंशन (उच्च तनाव) पर रखेंगे तो इनसे 'कैटास्ट्रॉफिक वैक्यूम' तैयार होगा । यानी इससे बुलबुलानुमा गैप तैयार होंगे । इससे ब्रह्मांड में गतिमान कण टूट-टूटकर उड़ने लगेंगे और आपस में टकराकर चूर-चूर हो जाएंगे । हालांकि भौतिकविदों ने इस मसले को आपदा की आशंका मानकर किसी तरह का प्रयोग नहीं किया है । लेकिन प्रोफ़ेसर हॉकिंग ने दुनिया के वैज्ञानिकों को सचेत ज़रूर किया है । सैद्धांतिक भौतिकीविदों ने हिग्स बॉसन के बारे में लिखा है कि उनकी नयी किताब स्टारमस में नील आर्मस्ट्रांग, बज एलड्रीन, क्वीन गिटारिस्ट ब्रायन में आदि के लेक्चर्स का चयन है । इसी साल नवंबर में यह किताब आने वाली है । इसमें भी गॉड पार्टिकल्स से जुड़ी जानकारियां होंगी । यूनिवर्स की हर चीज़ (तारे, ग्रह और हम भी) पदार्थ से बनी है । मैटर अणु और

परमाणुओं से बना है और मास वह फिजिकल प्रॉपर्टी है, जिससे इन कणों को ठोस रूप मिलता है । मास जब ग्रैविटी से गुज़रता है, तो वह भार की शक्ल में भी मापा जा सकता है, लेकिन भार अपने आप में मास नहीं होता, क्योंकि ग्रैविटी कम-ज़्यादा होने से वह बदल जाता है । मास आता कहां से है, इसे बताने के लिए फिजिक्स में जब इन तमाम कणों को एक सिस्टम में रखने की कोशिश की गयी तो फॉर्म्युले में गैप दिखने लगे । इस गैप को भरने और मास की वजह बताने के लिए 1965 में पीटर हिग्स ने हिग्स बोसोन या गॉड पार्टिकल का आइडिया पेश किया ।

क़यामत की धारणा धर्मग्रन्थों में मौजूद है । इस विषय पर इस्लाम में विशद विवरण है । ईसाई धर्म में भी क़यामत की धारणा विद्यमान है । हिन्दू धर्म में भी महाप्रलय का उल्लेख है । अन्य धर्मग्रंथों के साथ ही महाभारत में कलियुग के अंत में प्रलय होने का ज़िक्र है, लेकिन यह किसी जल प्रलय से नहीं बल्कि धरती पर लगातार बढ़ रही गर्मी से होगा । महाभारत के वनपर्व में उल्लेख मिलता है कि सूर्य का तेज इतना बढ़ जाएगा कि सातों समुद्र और नदियां सूख जाएंगी । संवर्तक नाम की अग्नि धरती को पाताल तक भस्म कर देगी । वर्षा पूरी तरह बंद हो जाएगी । सब कुछ जल जाएगा, इसके बाद फिर बारह वर्षों तक लगातार बारिश होगी । जिससे सारी धरती जलमग्न हो जाएगी । लगभग ढाई सौ पहले के चर्चित भविष्यवक्ता नास्त्रेस्देमस की इस बारे में भविष्यवाणी मौजूद है । नास्त्रेस्देमस ने प्रलय के बारे में बहुत स्पष्ट लिखा है कि मैं देख रहा हूं कि एक आग का गोला पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है, जो धरती से मानव के काल का कारण बनेगा। एक अन्य जगह वे लिखते हैं कि एक आग का गोला समुद्र में गिरेगा और पुरानी सभ्यता के समस्त देश तबाह हो जाएंगे । माया कलेंडर के अनुसार, 21 दिसंबर 2012 के बाद दुनिया को नहीं होना चाहिए, हालांकि यह भविष्यवाणी ग़लत साबित हो चुकी है । साउथ ईस्ट मेक्सिको के माया कैलेंडर में 21 दिसंबर 2012 के बाद की तिथि का वर्णन नहीं है । कैलेंडर उसके बाद पृथ्वी का अंत बता रहा है । माया कैलेंडर के मुताबिक़ 21 दिसंबर 2012 में एक ग्रह पृथ्वी से टकराएगा, जिससे सारी धरती ख़त्म हो जाएगी । क़रीब 250 से 900 ईसा पूर्व माया नामक एक प्राचीन सभ्यता स्थापित थी । ग्वाटेमाला, मैक्सिको, होंडुरास तथा यूकाटन प्रायद्वीप में इस सभ्यता के अवशेष खोजकर्ताओं को मिले हैं । कहा जाता है कि माया सभ्यता के काल में गणित और खगोल के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ था । अपने ज्ञान के आधार पर माया लोगों ने एक कैलेंडर बनाया था । कहा जाता है कि उनके द्वारा बनाया गया कैलेंडर इतना सटीक निकला है कि आज के सुपर कम्प्यूटर भी उसकी गणनाओं में 0.06 तक का ही फ़र्क़ निकाल सके और माया कैलेंडर के अनेक आकलन, जिनकी गणना हज़ारों सालों पहले की गयी थी, सही साबित हुए हैं । मगर क़यामत की तारीख़ के सिलसिले में माया कैलेंडर असफल सिद्ध हो चुका है । फिर भी अमेरिका के कुछ वैज्ञानिकों ने कुछ समय पहले घोषणा की है कि 13 अप्रैल 2036 को पृथ्वी पर प्रलय हो सकता है । खगोलविदों के अनुसार अंतरिक्ष में घूमने वाला एक ग्रह एपोफिस 37014.91 किमी/प्रति घंटा की रफ़्तार से पृथ्वी से टकरा सकता है । इस प्रलयंकारी भिड़ंत में हज़ारों लोगों की जान भी जा सकती है । हालांकि नासा के वैज्ञानिकों का कहना है कि इसे लेकर घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है । हक़ीक़त यह है कि क़यामत का आना यक़ीनी है, मगर यह कब आएगी, इसका ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है । अत: परलौकिक जीवन को सफल बनाने के लिए अनिवार्य है कि इन्सान इस दुनिया में सुकर्म करे, जिससे पालनकर्ता प्रभु उससे राज़ी हो ।

जनता पर बोझ बना संविधान

आज भारतवर्ष जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है । यह एक लोकतांत्रिक देश है इस कारण यह संसार का सबसे बड़ा ''लोकतंत्र'' भी है । भारत का संविधान भी संसार में सबसे बड़ा है । यह एक लिखित संविधान है जो लगभग 1800 पृष्ठों में लिखा गया है । संविधान लिखित भी होते हैं और अलिखित भी । ग्रेट ब्रिटेन (इंग्लैंड) का संविधान आज भी अलिखित है । यह परंपरा पर चलता है । जबकि वहां के लोगों ने पूरे संसार पर राज किया है । किसी समय इनका साम्राज्य संसार के अधिकांश देशों पर फैला था । हमारा संविधान प्रतिवर्ष संशोधित होता रहा है अर्थात इतना बड़ा होने पर भी यह पूर्ण नहीं है । यह आसानी से संशोधित हो सकता है यह भी इसकी बड़ी कमी या ख़राबी है ।

इस प्रकार कई अर्थों में हमारा संविधान लोकतांत्रिक विडंबनाओं से भरा हुआ है । मूल रूप से पहले हमारा संविधान समाजवाद के नज़दीक था, फिर धीरे-धीरे 'साम्यवाद' हुआ और अब 'पूंजीवादी' हो गया है । वास्तव में यह सदा 'जनविमुख' ही रहा है । वह क़ानून किस काम का जो लागू न हो । 'क्रियांवित' न किया जा सके । केवल अलमारियों में धरा रहे । उदाहरणार्थ देखिए–हमारे देश में अनिवार्य शिक्षा क़ानून देश भर में लागू है । जनता यदि शिक्षित हो जाएं तो कई समस्याओं का निदान हो जाता है परंतु जनसंख्या का बड़ा भाग आज भी निरक्षर है । सामान्य वोटर वोट तो देता है परंतु उसके 'वोट' का क्या मूल्य है यह वह नहीं जानता । वरन् वह वोट देकर चोट खाता आया है फिर जनप्रतिनिधि अपनी सुनता है । । अपने घर की सुनता है । आम जनता की कभी नहीं सुनता । जो करे न धरे । घर भरे वह सच्चा नेता होता है । अनिवार्य शिक्षा क़ानून के तारतम्य में यह भी उल्लेखनीय है कि बच्चे को पढ़ाना किसी भी तरह से अनिवार्य नहीं है । लोग बच्चों को पढ़ने नहीं भेजते और उन्हें कोई सज़ा या दंड नहीं मिलता । इस कारण यह क़ानून नाममात्र का क़ानून बनकर रह गया है ।

ललित नारायण उपाध्याय
ईशकृपा सदन
96, आनंद नगर, खंडवा (म०प्र०)

सुमधुर वाणी की उपयोगिता

धर्म वह ज्ञान है जो मनुष्य को वाणी व जीने की कला सिखाता है । धार्मिक ग्रंथों में सुमधुर वाणी की उपयोगिता बतायी गयी है । वेद का कहना है–''वाचस्पतिवाच न स्वत:'' प्रत्येक मानव को मधुर वाणी का उपयोग करना चाहिए । दूसरों के प्रति कठोर वाणी का प्रयोग करने से मानवता का ह्रास होता है । सच्चा चरित्र व नैतिकता का स्तर नीचे हो जाता है ।

प्राय: यह देखा जा रहा है कि अधिकांश व्यक्ति अपनी बातों को मनवाने के लिए अनेक आडम्बरों का आश्रय झूठ, छल, कपट की भाषा में लेते हैं और अनाचार, पापाचार की आग फैलाते हैं ।

जो व्यक्ति अपनी वाणी में मधुरता का प्रयोग करते हैं, उत्तम व्यक्ति होते हैं । उनका नाम गंधर्व होता है । सच्चा मानव वही है, जिसमें चार गुण हों, उसमें से एक गुण वाणी में माधुर्य । इसके अतिरिक्त सत्कर्म की प्रेरणा, सत्कर्म का संरक्षण व ज्ञान से पवित्रता । उत्तम वक्ता हम सबकी वाणी को मधुर बनाता है । मधुर वाणी बोलने वाला वक्ता तथा उत्तम ज्ञानी हम सबके ज्ञान को पवित्र बनाता है । मधुर वाणी बोलने वाला वक्ता हमें शुभ पथ पर चलने की ओर प्रवृत्त करता है तथा सदैव सत्कर्मों का प्रवाह करते रहने की प्रेरणा देता रहता है । कहा गया है कि–

''ऐसी वाणी बोलिये, मन की आपा खोय ।
औरत को शीतल करे, आपह शीतल होय ।''

सुमधुर वाणी की उपयोगिता धार्मिक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बहुत महत्व है । वर्तमान युग में हमारे देश में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का जो जकड़जाल फैला हुआ है, इसको पूर्णतया नष्ट करें । पुरातन भारतीय सभ्यता व संस्कृति की ओर प्रेरित कर सुमधुर वाणी का प्रयोग आदर्श मानव समाज का महत्वपूर्ण सिद्धि प्रदान करता है ।

हम चाहते हैं कि दुनिया यज्ञमय हो, सुख और शांति की राह पर चले । हमारी मनोकामना है कि धरती के सारे मानव सत्कर्म करने की ओर अग्रसर हो तथा परमेश्वर की सच्ची

भक्ति की राह पर चले । जितने भी दुनिया में महापुरुष हुए हैं, उन्होंने स्वयं में अपनी वाणी को माधुर्य बनाया । फिर दूसरों को मधुर वाणी बोलने को प्रेरित किया । जैसे कहा गया है कि 'प्रसुव यज्ञपति भगाय', भग शब्द का अर्थ है उन्नति अभ्युदय, महानता आदि । महापुरुषों की चारित्रिक विशेषताओं को ग्रहण कर मानव अपने हृदय में संतोष व आनन्द की सरिता प्रवाहित कर सकता है । मधुर व शुभ वाणी से यदि मानव परमेश्वर की प्रार्थना करता है, तो उसके हृदय में सत्कर्म करने का प्रवाह बढ़ता रहता है । साथ ही नकारात्मक सोच को त्याग करके सकारात्मक सोच की ओर मानव प्रेरित होता है । ऐसे भी व्यक्ति होते हैं कि हमें (ज्ञान) वाणी से देने वाला भी कड़वी तीखी बात सुनकर हमारा उपहास उड़ाकर हमें राह बताना चाहे । आज दुनिया में चारों ओर होता भी ऐसा ही है । अंत में मधुर वाणी से हम मन, वचन और कर्म से शुभ सोचें, शुभ करें और शुभ प्रेरणाएं दूसरों को दें । जिनमें भी ऐश्वर्य प्रकाश और आनंद प्राणी मात्र के कल्याणमय भोग के लिए उसने पृथ्वी पर प्रदान किये हैं । हमें मिलते रहे प्रेम की राह पर उसके ही होकर चलते रहें ।

रामस्वरूप झैवर

शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज॰)

'कान्ति' में सब कुछ मिलता है

सितम्बर 2014 ई॰ का अंक बहुत ही अच्छा लगा । साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में 'कान्ति' पत्रिका समतावादी विचारों को खुलकर परोसती है ।

संपादकीय में उत्तर प्रदेश की हालत पर विस्तार से लिखा गया है । इसमें कहा गया है कि सभी दलों को मिलकर शांति और सद्भाव का माहौल पैदा करना चाहिए । साम्प्रदायिकता एक प्रकार का ज़हर है, इससे कटुता फैलती है ।

पाठकों के पत्र में भ्रष्टाचार से कब मिलेगी आज़ादी, लड़कियों के प्रति सोच बदलनी होगी, कुछ विचारणीय बातें आदि अच्छे लगे । कविता, लघुकथा ग़ज़ल और आजकल प्रचलित शब्दों के अर्थ, सब कुछ तो पढ़ने को मिलता है ।

और तो और 'लो आ गये अच्छे दिन' भी पढ़ लो और लोकतांत्रिक विचारों की हक़ीक़त से रू-ब-रू हो जाओ ।

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय

कटवरिया सराय, नयी दिल्ली-16

इंटरनेट के घातक परिणाम से बच्चों की सुरक्षा

आजकल मोबाइल, स्मार्ट फ़ोन, लैपटॉप पर गेम्स तथा इंटरनेट की सुविधा के कारण पूरी दुनिया हाथ में आ गयी है । इस पर दिन रात बैठे रहने से संदेशों का आदान-प्रदान बहुत अधिकता से हो रहा है । बच्चों में भी इसकी प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ गयी है, जिस कारण उनमें चिड़चिड़ापन, असामाजिकता तथा खानपान आदि के समय में बदलाव आ गया है । उनमें मित्रों एवं परिजनों से दूरी भी दिखती नज़र आ रही है ।

इस प्रकार के व्यवहारों से ऐसा जान पड़ता है कि मानो उन्हें मोबाइल का बुख़ार चढ़ गया है । इन उपरोक्त वस्तुओं से दूरी बनाने हेतु देश-विदेश के ग़ैर-शासकीय संगठनों ने कार्य करना आरंभ कर दिया है, जिसमें दिल्ली का एक ग़ैर-शासकीय संगठन 'सेन्टर फॉर चिल्ड्रेन इन इंटरनेट एंड टेक्नॉलोजी डिस्ट्रेस' ने अपना एक सेन्टर स्थापित कर बच्चों को इंटरनेट से दूर रखकर खेलकूद के प्रति उनका ध्यान केन्द्रित कर रही है । दूसरी ओर इनसे भ्रामक एवं अश्लील सामग्री भी फैलायी जा रही है । अतएव इनकी रोकथाम हेतु प्रशासन को कड़ा रुख़ अपनाना चाहिए ।

मलिक

नागपुर

शराब का फैलाव

'कान्ति' मासिक का जुलाई 2014 अंक मिला धन्यवाद । आपका संपादकीय शराब का फैलाव । एक बड़ा आत्मघाती क़दम के अंतर्गत आपने सही लिखा, "शराब का प्रकोप हर राज्य में तेज़ी से फैलता जा रहा है जिससे आम जनता बहुत परेशान और त्रस्त है । निस्संदेह अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है । इस बुराई से दूर ही रहना चाहिए । शराबबन्दी हो सकती है अगर हर नागरिक इसके सेवन से तौबा कर ले । लेकिन...?

विचारणीय के अंतर्गत हाथों की लकीरों में क़िस्मत देखने वालों विचार करो कि हाथों की लकीरों में तुम्हारा भविष्य है । बस कर्म तो करो । बिना कर्म किये कुछ भी हासिल नहीं ।

कहानी मां जी अच्छी लगी । लघुकथा छलावे आजकल के बनते-बिगड़ते रिश्तों पर अच्छा तमाचा है । सुख-चैन भी अच्छी लघुकथा है । ग़ज़लें भी मनभावन हैं । यह शेर

अच्छा लगा–

वही टूटा हुआ दर्पण बराबर याद आता है
उदासी और आंसू का समन्दर याद आता है ।

सुरेन्द्र कुमार अंशुल
अंबाला शहर (हरियाणा)

दलित साहित्य का भी समावेश करें

'कान्ति' पत्रिका की प्रगतिशील विचारधारा से प्रेरित होकर दो-चार बार अपनी रचनाएं भेजी है । किन्तु खेद है कि दलित साहित्यिक रचना को 'कान्ति' में स्थान नहीं मिल पाया । किन्तु अब पुनः आशा करके एक कहानी ''कसक'' भेज रहा हूं । इसमें दलितों के संघर्ष के जिद्दोजहद को दर्शाया गया है ।

मेरा निवेदन है कि पत्रिका में दलित सरोकारों, साहित्य को भी स्थान दिया करें । आशा है, कसक को प्रकाशित करने की कृपा करेंगे । यह भी निवेदन है कि जिस अंक में इस रचना को प्रकाशित करें, उस अंक की एक प्रति भी भिजवाने की कृपा अवश्य करें । मैं आपका आभारी रहूंगा ।

जयप्रकाश वाल्मीकि
जयपुर (राज०)

बधाई

'कान्ति' का अगस्त 2014 अंक पढ़ा । आपको कोटि-कोटि बधायी । संपादकीय, स्वाधीन भारत और धर्मनिरपेक्षता सटीक है । ''ईशभय और चरित्र निर्माण'' लेख प्रेरणादायक है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं ।

श्रीमती अंजनी रस्तोगी
अरविन्द महिला विकास क्लब,
मढ़ई चौक, बदायूं-243601

शुभकामनाएं

(1)

पूरे 'कान्ति' परिवार को रक्षा बंधन और स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं । इन पर्वों पर हमें सामूहिक संकल्प लेना चाहिए कि देश की सभी महिलाओं की जीवन भर रक्षा करते रहेंगे । देश पर भी कोई आंच नहीं आने देंगे । नफ़रत और साम्प्रदायिकता की राजनीति करने वालों की चालें कामयाब नहीं होने देंगे ।

सुरेन्द्र सिंह रघुवंशी
पचामा, उदयपुरा
रायसेन (मध्य प्रदेश)

(2)

सर्वप्रथम आपको बधाई । आप पिछले कई सालों से पत्रकारिता में बेहद अच्छा काम कर रहे हैं । कृपया इसका ऐसा ही स्वरूप बनाए रखें । मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं ।

अभिजीत राणे
समूह संपादक-मुंबई मित्र/वृत्त मित्र
मुंबई (महाराष्ट्र)

(3)

रमज़ान के पावन माह में रोज़े-ईद की, मेरी ओर से समस्त 'कान्ति' परिवार को हार्दिक शुभ कामनाएं ।

आप सभी के जीवन में ईद खुशियों का पैग़ाम लेकर आए, वैसे भी रमज़ान का माह पवित्र, संयम, नियम, साफ़-सुथराई, परोपकार का प्रतीक है और ईद माह का अमूल्य उपहार । एक बार पुनः आपको सपरिवार ईद की मुबारकबाद ।

शशिप्रभा शर्मा
1936/3, पन्नापुरी, हापुड़ (उ०प्र०)

''और ईमान वाली
स्त्रियों से कह दो कि वे भी
अपनी निगाहें बचा कर रखें और
अपने गुप्तांगों की रक्षा करें ।
और अपने शृंगार
प्रकट न करें, सिवाय उसके जो
उनमें खुला रहता है और अपने सीनों
पर अपने दुपट्टे डाले रहें ।
(क़ुरआन)

Saukar
Fish
Vascoda
Gama
GOA

A Well Wisher

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=
बुलूगुल मराम	275/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउर्रहमान मो०	275/=
हुक़ूक़ुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=
हुक़ूक़ुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=
हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि:	28/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	28/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	28/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=
इस्लाम और हिन्दूधर्म में समानताएं	50/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है	60/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना	28/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार	60/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा	50/=
मांसाहार उचित या अनुचित	60/=
जन्नत का बयान इकबाल कीलानी	120/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
तौहीद के मसाइल इकवाल कीलानी	120/=

सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
तौहीद के आंसू इकबाल कीलानी	65/=
हमारी दावत किताब व सुन्नत	40/=
चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब	20/=
मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	30/=
और मैं मर गया	32/=
मसला उर्स और ग्यारहवीं	30/=
इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
किताबुत्तौहीद	75/=
कुरआन की शीतल छाया	85/=
अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
जादू का इलाज	85/=
कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लामी अक़ीदा	22/=
इस्लाम क्या है	50/=
मासूरह दुआएं	30/=
हिसनुल मुसलिम (उच्चारण सहित)	50/=
नमाज़े मोहम्मदी (उच्चारण सहित)	35/=
परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

इस्लाम क्या है ?

❖ मरयम जमीला

इस्लाम की मूल धारणा दृढ़ सोच है कि इन्सान अल्लाह का बन्दा है । अरबी में अल्लाह के बन्दे को अब्दुल्लाह कहते हैं । यह नाम मुस्लिम देशों में आम है । इस्लाम का वास्तविक अर्थ है अल्लाह की मर्ज़ी के आगे झुक जाना । वे सारे लोग जो अल्लाह के आज्ञापालन की ज़िन्दगी को अपनाते हैं, वे मुसलमान कहलाते हैं । चूंकि अल्लाह की सत्ता सर्वश्रेष्ठ है और वही समस्त जगत का शासक है, इसलिए मुसलमान ज़ेहन को गिरजा और राज्य के विभाजन की ईसाई कल्पना बिल्कुल तर्कहीन नज़र आती है । इस्लामी शासन का उद्देश्य अल्लाह के क़ानून को लागू करना है, जो कुरआन और नबी (सल्ल०) की सुन्नत में सुरक्षित है ।

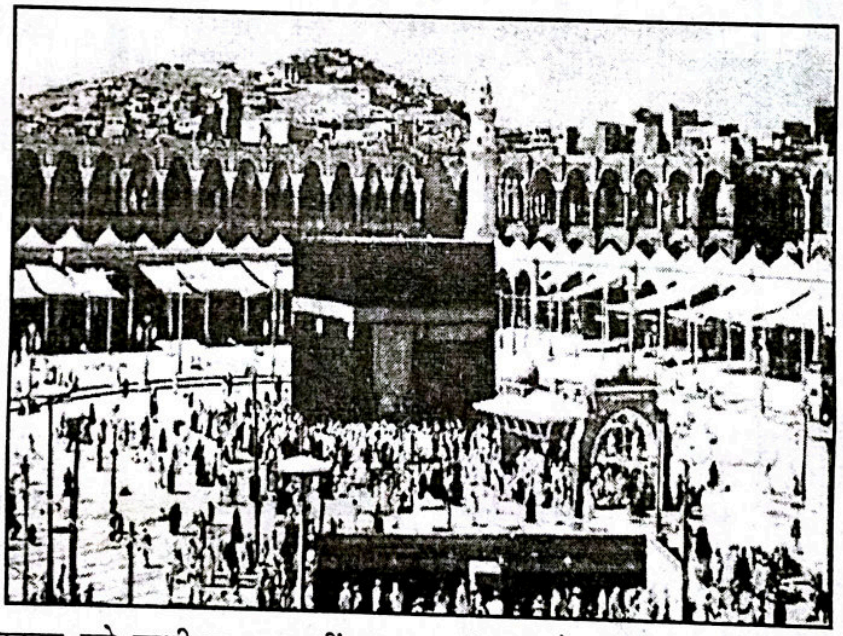

मुसलमान शासक न तो खुद क़ानून की हैसियत अपना सकता है और न अपने तौर पर कोई नया क़ानून बनाने का अधिकार रखता है । अल्लाह के बनाए क़ानून को कभी बदला नहीं जा सकता, हां उसकी व्याख्या की जा सकती है, वह भी कड़ी सीमाओं में ।

हर चीज़ का मालिक अल्लाह है, इन्सान की अपनी कोई चीज़ नहीं है । वह पूरी तरह अल्लाह का मुहताज है । हर वह चीज़ जो इन्सान के क़ब्ज़े और इस्तेमाल में है, यहां तक कि उसका शरीर भी अल्लाह ने उसे उधार दिया है, ताकि वह उसे अपने सामर्थ्य भर विवेकपूर्ण ढंग से काम में लाये । अगर कोई व्यक्ति इस ज़िम्मेदारी से दामन बचाता है तो वह ऐसी सज़ा पाएगा कि दूसरे शिक्षा लें ।

इन्सान का दायित्व है कि वह अल्लाह की बन्दगी का हक़ अदा करने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपना सब कुछ, अपनी निजी खुशी, अपना ऐशो-आराम, अपनी इच्छाएं, सुविधाएं, धन-दौलत, यहां तक कि अपनी ज़िन्दगी भी कुरबान कर देने में कोई झिझक महसूस न करे । इसका पुरस्कार उसे शाश्वत सुख के रूप में मिलेगा । अल्लाह का बन्दा होने का अर्थ मनुष्य के अत्याचारों से मुक्ति है । सच्चा मुसलमान किसी मनुष्य से नहीं डरता वह केवल अल्लाह से डरता है ।

मानवजाति की सबसे बड़ी मुसीबत ग़रीबी, बीमारी या अशिक्षा नहीं (बल्कि कुफ़्र सत्य का इन्कार) है । अल्पायु गर्भवती दुल्हनें, कुंवारी माएं, घातक बीमारियां, भ्रूण हत्याएं, यौन उत्पीड़न नाजायज़ बच्चे, आवारा शराबी और उग्र देश-भक्ति, सब कुफ़्र के परिणाम हैं । कुफ़्र अल्लाह के ख़िलाफ़ खुला विद्रोह है, जिसे कभी बर्दाशत नहीं किया जा सकता । एक मुसलमान अपने जैसे दूसरे इन्सान के चरित्र का अंदाज़ा उसकी आस्था और दिन-प्रतिदिन के जीवन में उसके व्यवहार के आधार पर करता है ।

किसी व्यक्ति के वंश, राष्ट्रीयता, सम्पत्ति या सामाजिक प्रतिष्ठा का उसके वास्तविक मानव चरित्र से कोई संबंध नहीं । एक व्यक्ति जिस चीज़ पर ईमान लाने का दावा करता है, अगर उसका पालन करने की कोशिश नहीं करता तो वह

मात्र एक कपटाचारी है, वास्तव में वह ईमान ही नहीं रखता । एक मुसलमान के लिए उसके किसी कर्म का आधार उसकी आस्था पर है ।

सच्चा मुसलमान मौत से नहीं डरता, मौत वह घाटी है जिससे गुज़रकर एक मुसलमान अबदी ज़िन्दगी से जा मिलता है और अल्लाह का सामीप्य हासिल करता है । मुसलमान जब बीमार होता है तो स्वस्थ होने के लिए हर संभव इलाज करवाता है । लेकिन अगर मान लें कि सारे स्वास्थ्य उपाय उसे ठीक करने में असमर्थ्य होते हैं तो वह बड़े इत्मीनान से अल्लाह के फ़ैसले के आगे खुद को डाल देता है । उसका यह ईमान है कि अल्लाह ने हरेक जीवधारी के जीवन की अवधि पहले ही निर्धारित कर रखी है । कोई व्यक्ति न तो उस निर्धारित समय से पहले मर सकता है और न दुनिया भर के डॉक्टर मिलकर उसकी मौत को एक क्षण के लिए भी टाल सकते हैं ।

मुसलमान न तो दूसरे धर्मों पर अत्याचार करता है और न उसके मानने वालों के साथ अन्याय । न ही वह किसी को जबरन मुसलमान बनाने की कोशिश करता है । इस्लामी हुकूमत में धार्मिक अल्पसंख्यक स्वतंत्र होते हैं, उन्हें अपने धार्मिक नियमों पर चलने, अपने बच्चों को अपनी मर्ज़ी के अनुसार शिक्षा देने और अपनी सभ्यता को बचाये रखने की पूरी आज़ादी होती है । साथ ही उन्हें जान व माल की पूरी सुरक्षा प्राप्त होती है । इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार दूसरे धर्मों को मानने वाले भी इन्सान होने के नाते समान अधिकार, न्याय और सद्व्यवहार के पात्र होते हैं ।

इस्लाम के दरवाज़े सभी इन्सानों के लिए खुले हुए हैं । वह ग़ैर-मुस्लिमों को अपनी आग़ोशे रहमत में लाने के लिए बड़ी कोशिशें करता है । ईसाइयों की तरह मुसलमानों को पेशेवर धर्मप्रचारकों की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि हर मुसलमान इस्लाम का प्रचारक होता है अपने सामर्थ्य भर इस्लाम फैलाना उसकी ज़िम्मेदारी होती है । यह एक सच्चाई है कि दुनिया के लंबे-चौड़े क्षेत्रों में विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया और अफ़्रीक़ा में इस्लाम अरब और भारतीय व्यापारियों द्वारा फैला । इसके लिए न तो कभी अन्याय और अत्याचार का रास्ता अपनाया गया और न ही कभी उन देशों को राजनीतिक तौर पर गुलाम बनाया गया । ऐसा केवल इसलिए हुआ कि इन व्यापारियों ने पहले इस्लाम को पेश किया फिर व्यापार की ओर ध्यान दिया ।

मुसलमान यह ईमान रखते हैं कि इन्सान को अल्लाह का सामीप्य उसके नियमों के पालन से ही प्राप्त हो सकता है । इसके अलावा वे इबादत और नैतिकता के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं खींचते । वे आत्मा को उसके शरीर से अलग करके नहीं देखते, क्योंकि उनका विश्वास है कि कोई आस्था अपने प्रदर्शन के बिना प्रभावी नहीं होती । वुज़ू और नमाज़ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के ढंग के अनुसार अदा करना अनिवार्य है । नमाज़ एक मुसलमान के भीतर सुचरित्र और संवेदनशीलता को बढ़ावा देती है, इसलिए कि जब वह नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह के अलावा कोई उसे देखने वाला नहीं होता कि उसने इसे ठीक-ठीक अदा किया है या नहीं । व्यक्तिक स्वास्थ्य सुरक्षा और सफ़ाई पर कोई मज़हब इतना ज़ोर नहीं देता, जितना इस्लाम । शारीरिक पवित्रता आत्मा की स्वच्छता को प्रभावित करती है, मनुष्य का आंतरिक रूप उसके बाहरी रूप में दिखायी पड़ता है ।

ब्रह्मचर्य जीवन को इस्लाम निंदनीय ठहराता है और सभी से दात्पत्य जीवन गुज़ारने की अपेक्षा की जाती है । इस्लाम एक से अधिक और हद से हद चार निकाह करने की अनुमति है । हालांकि मुस्लिम समाज में इसे प्रोत्साहित नहीं किया जाता है, लेकिन इस अनुमति से नाजायज़ संबंध बड़ी हद तक ख़त्म हो जाते हैं ।

क़ुरआन और हदीस का फ़ौजदारी नियम वह महत्वपूर्ण विषय है, जिसे लेकर दूसरों ने बहुत ग़लतफ़हमी फैलायी है । इस्लाम जिन कार्यों को समाज के विरुद्ध अपराध बताता है, पश्चिमी देशों में उन्हें कम ही अपराध समझा जाता है और चोरी के सिवा शायद ही किसी अपराध पर सज़ा दी जाती है । मुसलमान न तो इसके समर्थक हैं कि क़ानून की ख़ूबी की निर्भरता, उसकी नर्मी पर है और न उनकी विश्वास यह है कि अपराधी समाज से अधिक सहानुभूति के पात्र हैं । मुसलमानों का विश्वास है कि इस्लामी क़ानून

समाज को अपराध मुक्त बनाने में मानव निर्मित क़ानूनों से अधिक प्रभावशाली हैं ।

इस्लाम के मानने वालों का विश्वास है कि एक स्वस्थ समाज बनाने के लिए महिलाओं और पुरुषों का स्वतंत्र मेल-जोल ठीक नहीं । यही कारण है कि मुसलमान संयुक्त सामाजिक आयोजन, सहशिक्षा, निकाह से पहले लड़की लड़कों के बीच संबंध बर्दाश्त नहीं कर सकता । अनिवार्य है कि न तो पुरुष परस्त्री की ओर देखें और न स्त्री परपुरुष की ओर । हर समय शरीर को ढकने वाला वस्त्र धारण किया जाए । महिलाओं को अगर किसी काम से बाहर जाना हो तो पूरे शरीर को नक़ाब से ढक्कर जाएं । उसका शरीर किसी भी हाल में बेपरदगी और आवारा नज़रों का निशाना न बने । इस्लाम पुरुषों को घर से बाहर की सामाजिक ज़िम्मेदारियां सौंपता है और महिलाओं को घर के भीतर की । कारोबार या राजनीति के क्षेत्र में पुरुषों से प्रतियोगिता महिलाओं का काम नहीं । मुसलमान खूब अच्छी तरह जानता है कि महिला जब एक बार घर को छोड़ देती है तो घर बाक़ी नहीं रहता ।

किसी व्यक्ति के वंश, राष्ट्रीयता, सम्पत्ति या सामाजिक प्रतिष्ठा का उसके वास्तविक मानव चरित्र से कोई संबंध नहीं । एक व्यक्ति जिस चीज़ पर ईमान लाने का दावा करता है, अगर उसका पालन करने की कोशिश नहीं करता तो वह मात्र एक कपटाचारी है, वास्तव में वह ईमान ही नहीं रखता । एक मुसलमान के लिए उसके किसी कर्म का आधार उसकी आस्था पर है ।

ब्रह्मचर्य जीवन को इस्लाम निंदनीय ठहराता है और सभी से दात्पत्य जीवन गुज़ारने की अपेक्षा की जाती है । इस्लाम एक से अधिक और हद से हद चार निकाह करने की अनुमति है । हालांकि मुस्लिम समाज में इसे प्रोत्साहित नहीं किया जाता है, लेकिन इस अनुमति से नाजायज़ संबंध बड़ी हद तक ख़त्म हो जाते हैं । कोई व्यक्ति अगर किसी दूसरी महिला से संबंध बनाना चाहता है तो उसे पहले उससे निकाह कर उसके पोषण और सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार होना पड़ेगा ।

इस्लाम संगीत, चित्रकला और मूर्तिकला का विरोधी है, इस बारे में इसकी राय सभी धर्मों से अलग है । यही कारण है कि मुस्लिम शहरों में ओपेरा हाउस, थियेटर, अजंता एलोरा जैसी कलाकृतियां नहीं मिलेंगी । इस्लामी कला ने अपना पूरा प्रदर्शन अरबी लेखन कला में किया या भवन निर्माण कला में, जिसमें आज तक कोई क़ौम उससे आगे नहीं बढ़ सकी ।

वाध्य यंत्र की इस्लामी समाज में कहीं जगत नहीं है, इसलिए इसके बजाने वाले इस्लामी समाज में अगर हैं तो सबसे निचले पायदान पर । इस्लाम का मनना है कि संगीत मनुष्य के मन-मस्तिष्क को अल्लाह से ग़ाफ़िल कर देते हैं और अंतत: उसे वासना की गहराइयों में पहुंचा देते हैं ।

स्टेज, सिनेमा या टेलीविज़न पर स्वांग भरने की, इसलिए निंदा की जाती है । ऐसे खेल-तमाशे जिनमें कोई व्यक्ति एक चरित्र के रूप में शरीक हो या तमाशाई के रूप में, किसी तरह ठीक नहीं, क्योंकि ये लोगों को सपनों की दुनिया इतना गुम कर देते हैं कि वास्तविक जीवन से उनकी रुचि कम हो जाती है ।

चूंकि कुरआन अल्लाह की रचना है और इसलिए इसमें किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है । यह समस्त मानवता के मार्गदर्शन के लिए है । यह अल्लाह का अंतिम संदेश है । इसलिए इसमें किसी तरह की भी तब्दीली नहीं की जा सकती । इसे विकसित करने की भी ज़रूरत पड़ने वाली नहीं है । इस्लाम एक संपूर्ण दीन है । मुसलमानों के नज़दीक उन्नति यह है कि वे अपने जीवन को कुरआन मजीद के शब्दों और उसकी आत्मा के अनुरूप ढाल लें । उनके जीवन का उद्देश्य भौतिक सफलता नहीं बल्कि आख़िरत के जीवन के लिए सामान इकट्ठा करना है ।

इस्लाम मुसलमानों से पूर्ण समर्पण और आज्ञापालन की मांग करता है । मुसलमान दिन रात के प्रत्येक क्षण में मुसलमान रहता है । इस्लाम में नियम एवं अनुशासन का जो महत्व है, दूसरे धर्मों के मानने वाले उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । इसके नियम एक मुसलमान के जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के हर पहलू पर हावी हैं । मुसलमान जगा हुआ हो या सोचा हुआ वह हर समय इन नियमों में बंधा होता है । उसे एक क्षण के लिए भी अपनी इस्लामी हैसियत को भुलाने की अनुमति नहीं ।

जब मुझे सत्य का ज्ञान हुआ

कई साल पहले दैनिक जागरण में श्री बलराज मधोक का लेख 'दंगे क्यों होते हैं ?' पढ़ा । इस लेख में हिन्दू-मुस्लिम दंगा होने का कारण कुरआन मजीद में काफ़िरों से लड़ने के लिए अल्लाह के फ़रमान बताए गये थे । लेख में कुरआन मजीद की वे आयतें भी दी गयी थीं ।

इसके बाद दिल्ली से प्रकाशित एक पम्फलेट 'कुरआन की चौबीस आयतें, जो अन्य धर्मावलंबियों से झगड़ा करने का आदेश देती हैं ।' किसी व्यक्ति ने मुझे दिया । इसे पढ़ने के बाद मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि मैं कुरआन पढ़ूं । इस्लामी पुस्तकों की दुकान में हज़रत मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ां साहब जालंधरी द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद मुझे मिला । कुरआन मजीद के इस हिन्दी अनुवाद में वे सभी आयतें मिलीं, जो पम्फलेट में लिखी थीं । इससे मेरे मन में यह ग़लत धारणा बनी कि इतिहास में हिन्दू राजाओं व मुस्लिम बादशाहों के बीच जंग में हुई मार-काट तथा आज के दंगों और आतंकवाद का कारण इस्लाम है ।

दिमाग़ भ्रमित हो चुका था इस भ्रमित दिमाग़ से हर आतंकवादी घटना इस्लाम से जुड़ती दिखायी देने लगी ।

इस्लाम, इतिहास और आज की घटनाओं को जोड़ते हुए मैंने एक पुस्तक लिख डाली 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'The History of Islamic Terrorism' के नाम से सुदर्शन प्रकाशन, सीता कुंज, लिबर्टी गार्डेन, रोड नम्बर-3, मलाड (पश्चिम) मुंबई 400064 से प्रकाशित हुआ । मैंने इस किताब में जिहाद के संदर्भ में कुरआन मजीद की जिन आयतों का उल्लेख किया है उन्हें मैंने हज़रत मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ां साहब जालंधरी तथा हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारिख़ साहब द्वारा हिन्दी में अनुवादित कुरआन मजीद में से जैसा लिखा है, वैसा ही लिया है । मैंने हाल में इस्लाम धर्म के विद्वानों (उलेमा हज़रात) के बयानों को पढ़ा कि इस्लाम का आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है । इस्लाम प्रेम, सद्भावना व भाईचारे का धर्म है । किसी बेगुनाह को मारना इस्लाम धर्म के विरुद्ध है । बाद में आतंकवाद के ख़िलाफ़ फ़तवा भी जारी हुआ ।

इसके बाद मैंने कुरआन मजीद में जिहाद के लिए आयी आयतों के बारे में जानने के लिए मुस्लिम विद्वानों से संपर्क किया । जिन्होंने मुझे बताया कि कुरआन मजीद की आयतें भिन्न-भिन्न तत्कालीन परिस्थितियों में उतरीं । इसलिए कुरआन मजीद का केवल हिन्दी अनुवाद ही न देखकर यह भी देखा जाना ज़रूरी है कि आयत किस परिस्थिति में उतरी तभी उसका सही मतलब और मक़सद पता चल पाएगा । साथ ही ध्यान देने योग्य है कि कुरआन इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारी गयी थी अत: कुरआन को सही मायने में जानने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी जानना भी ज़रूरी है ।

उन्होंने मुझ से कहा–"आपने कुरआन मजीद की जिन आयतों का हिन्दी अनुवाद अपनी किताब में लिया है, वे आयतें अत्याचारी, काफ़िर, मुश्रिक लोगों के लिए उतारी गयीं जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से लड़ाई करते और मुल्क में फ़साद करने के लिए दौड़े फिरते । सत्य धर्म की राह में रोड़ा डालने वाले ऐसे लोगों के विरुद्ध ही जिहाद का फ़रमान है, कुरआन में । इस्लाम की सही जानकारी न होने के कारण लोग कुरआन मजीद की पवित्र आयतों का मतलब समझ नहीं पाते । उन्होंने मुझ से कहा कि यदि आपने पूरी कुरआन मजीद के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी पढ़ी होती, तो आप भ्रमित न होते ।"

मुस्लिम विद्वानों के सुझावों को सुनने के बाद सबसे पहले पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी पढ़ी ।

सत्य को जानने के बाद मुझे लगा कि मैं अनजाने में भ्रमित था । अनजाने में भ्रमित होने के कारण ही मैंने अपनी उक्त किताब 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' में आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ा है इसका मुझे हार्दिक खेद है ।

इसके लिए मैं अल्लाह से, पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से व सभी मुस्लिम भाइयों से सार्वजनिक रूप से माफ़ी मांगता हूं तथा अपने लिखे व बोले शब्दों को वापस लेता हूं । सभी जनता से मेरी अपील है कि उस पुस्तक में जो लिखा है उसे शून्य समझें । ● **स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य**

इन्सानों के मौलिक अधिकार

■ डॉ॰ उबैदुल्लाह फ़हद फ़लाही

माता-पिता में मां को विशेष दर्जा प्राप्त है, इसीलिए मां का वर्णन क़ुरआन में विशेष रूप से किया गया है–

"हमने मनुष्य को अपने-मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की । उसकी मां ने उसे (पेट में) तकलीफ़ के साथ उठाए रखा और उसे जना भी तकलीफ़ के साथ । और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह है, यहां तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुंचा और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने कहा–

"ऐ मेरे रब ! मुझे संभाल कि मैं तेरी उस अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञता दिखाऊं जो तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर की है । और यह कि मैं ऐसा अच्छा कर्म करूं जो तुझे प्रिय हो, और मेरे लिए मेरी औलाद में भलाई रख दे । मैं तेरे आगे तौबा करता हूं और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूं ।"

(क़ुरआन, 46:15)

यहां क़ुरआन मजीद ने मां-बाप के साथ सद्व्यवहार करने का आदेश दिया है । इसके बाद जिन तीन त्याग और क़ुरबानियों का वर्णन है वह केवल मां की हैं, बाप के किसी त्याग का वर्णन नहीं हुआ है । इसका कारण क्या है ? भाष्यकारों ने इसके बारे में लिखा है कि औलाद के प्रारंभिक पालन-पोषण में जो हिस्सा मां का होता है, बाप का नहीं होता है । मां का संबंध कमज़ोर जिंस से है, इसलिए उसके सेवाभाव के पहलू को ज़्यादा उजागर किया गया है ।

आमतौर से औलाद के भौतिक लाभ का संबंध बाप से होता है, उससे उनको धन-सम्पत्ति और जायदाद विरासत में मिलने की उम्मीद होती है, मगर मां के आम हालात में इसकी उम्मीद कम होती है, इसलिए उसकी क़द्र औलाद नहीं करती । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मां को तीन गुना ज़्यादा सद्व्यवहार का अधिकारी बताया है-

"हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने आप (सल्ल॰) की सेवा में हाज़िर होकर सवाल किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! मेरे सद्व्यवहार का सबसे ज़्यादा अधिकारी कौन है ? आपने इरशाद फ़रमाया तुम्हारी मां । उसने दूसरी बार सवाल किया, फिर कौन है ? आपने फ़रमाया, तेरी मां । उसने तीसरी बार पूछा, फिर कौन ? आपने फ़रमाया, तेरी मां । चौथी बार उसने पूछा, फिर कौन ? आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, तेरा बाप ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

बीवी के हक़ के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है– "उनके साथ भले ढंग से रहो-सहो अगर वे तुम्हें पसन्द न हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो मगर अल्लाह ने उसी में बहुत कुछ भलाई रख दी हो ।"

(क़ुरआन, 4:19)

क़ुरआन करीम ने ईमान वालों को आदेश दिया कि अगर तुम्हें बीवी नापसन्द है, तो उसे तंग करने की कोशिश न करो कि यह न्याय, विवेक, शराफ़त व पुरुषत्व के ख़िलाफ़ है । नफ़रत के योग्य चीज़ केवल चारित्रिक पतन है, रूप-रंग नहीं । बीवी सभ्य समाज व सभ्यता की हर स्थिति में हक़दार है । ऐसी स्थिति में एक मुसलमान का रवैया यह होना चाहिए कि वह अल्लाह से डरे और सुशीलता व सद्व्यवहार का प्रदर्शन करे और बाह्य रंग-रूप की तुलना में उच्च चरित्र व मानवीय गुणों को प्रधानता दे । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हज्जतुलविदाअ के ख़ुतबे में इसी बात को इस तरह फ़रमाया था, "औरतों के बारे में अल्लाह तआला से डरो, क्योंकि तुमने उन्हें अमानत के रूप में अपने निकाह में लिया है ।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने विधवाओं के अधिकारों को अदा करने की शिक्षा दी है । आपने विधवा औरत से निकाह करके उन्हें सामाजिक व आर्थिक संरक्षण के साथ मान-सम्मान प्रदान करके समाज में एक उदाहरण पेश किया । अल्लाह तआला बेवा औरतों से निकाह के सिलसिले में फ़रमाता है–

"तुम में से जो लोग बेजोड़े के (अविवाहित) हों और तुम्हारे ग़ुलामों व लौंडियों में से जो नेक हों, उनके निकाह कर दो । अगर वे ग़रीब हों तो अल्लाह अपने अनुग्रह से उनको धनी कर देगा, अल्लाह बड़ी समाई वाला और सर्वज्ञ

है ।" (कुरआन 24:32)

मौलाना अमीनुल हसन इस्लाही (रह०) कहते हैं कि 'अयामा' बहुवचन है अय्यम का । उस मर्द को भी कहते हैं जो पत्नी से वंचित हो और उस औरत को भी कहते हैं जो पतिविहीन हो । अर्थात रांड व रंडुवे दोनों के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है । बल्कि अपने विस्तृत अर्थ में यह उन मर्दों और औरतों के लिए भी प्रयोग होता है, जो अविवाहित रह गये हों ।

इन परिस्थितियों के लिए निर्धनता बड़ी हद तक ज़िम्मेदार होती है और कुछ परिस्थितियों में विशेष रूप से औरतों के मामले में ख़ानदानों, बिरादरियों और क़बीलों के रस्म-रिवाज का बड़ा दख़ल होता है । कुछ ख़ानदानों में विधवा-विवाह को लज्जाजनक समझा जाता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बेवाओं के अधिकारों की तरफ़ इस तरह ध्यान आकृष्ट करवाया–

"बेवाओं और मिस्कीनों के लिए दौड़-भाग करने वाला मुजाहिद फ़ी सबी लिल्लाह की तरह है या उस व्यक्ति की तरह है, जो हमेशा दिन में रोज़ा रखे और रातों में आराम करे ।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुसलमानों को एक-दूसरे का भाई बताया है । उनकी मिसाल एक शरीर से दी है, जिसके विभिन्न अंग एक-दूसरे के दुख-दर्द में शरीक रहते हैं । आपने एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक अधिकारों को अदा करने की नसीहत की है–

"तुम ईमान वालों को देखोगे कि वह एक-दूसरे के साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार करने, एक-दूसरे से मुहब्बत करने और एक-दूसरे से सहानुभूति व नरमी का रवैया रखने में एक शरीर की भांति हैं कि किसी एक हिस्से को कष्ट पहुंचे, तो शरीर के सारे हिस्से अनिद्रा और बुख़ार में ग्रस्त हो जाते हैं ।"

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से उल्लिखित है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच अधिकार हैं । सलाम का जवाब देना, मरीज़ की सेवा करना, जनाज़ों के साथ चलना, दावत को क़बूल करना और छींकने वाले को यरहमुकल्लाह कहकर जवाब देना ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

कुरआन करीम ने पड़ोसी के हक़ को अदा करने पर ज़ोर दिया चाहे वह मुस्लिम हो या अनेकेश्वरवादी, दोस्त हो या दुश्मन, नेक हो या बद । सूरह निसा में एकेश्वरवाद की शिक्षा, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार और रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों के अधिकारों को अदा करने के बाद पड़ोसियों के हक़ का भी वर्णन किया गया है–

"और तुम सब अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, नातेदारों और यतीमों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और पड़ोसी नातेदार से, अपरिचित पड़ोसी से, पहलू के साथी और मुसाफ़िर से, और उन दास-दासियों से जो तुम्हारे अधिकार में हों, एहसान का मामला रखो, यक़ीन जानो अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारने वाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे ।"

(कुरआन, 4:36)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह तआला ने पड़ोसी की तीन क़िस्में बतायी हैं–

1. अल-जारज़िल क़ुर्बा–जो पड़ोसी भी है और उसके साथ रिश्तेदारी का भी संबंध है ।

2. अल-जारुल जुम्ब–जुम्ब का अर्थ अजनबी से है अर्थात वह पड़ोसी है, लेकिन नातेदारी का संबंध उसके साथ नहीं है ।

3. अस्साहिब अल जुम्ब–जो व्यक्ति सामयिक व अस्थायी रूप से किसी मजलिस, किसी दुकान या किसी होटल में हमारा साथी बन जाए वह अस्साहिब अल-जुम्ब कहलाता है ।

हज़रत अबू शुरैह ख़ुजाई (रज़ि०) उल्लिखित है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"अल्लाह की क़सम ! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम ! वह मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम ! वह मोमिन नहीं ।" कहा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन मोमिन नहीं ? आपने फ़रमाया–

"वह व्यक्ति जिसका पड़ोसी उसकी बुराई से सुरक्षित न हो ।" (बुख़ारी)

मेहमान चाहे मुस्लिम हो या अनेकेश्वरवादी, उसका हक़ है कि उसका पूरा सेवा-सत्कार किया जाए । हज़रत अबू-शुरैह अदवी (रज़ि०) बयान करते हैं कि मेरे दोनों कानों ने सुना और मेरी दोनों आंखों ने देखा जब नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"जो व्यक्ति अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी का सम्मान करे, और जो व्यक्ति अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि अपने मेहमान का पूर्ण सत्कार करके सम्मान करे।" पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल ! उसका सत्कार कब तक है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक दिन एक रात और सामान्य आतिथ्य की मुद्दत तीन दिन है और जो इससे अधिक हो वह उस पर सदक़ा है और जो व्यक्ति अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि अच्छी बात ज़बान से निकाले या फिर चुप रहे।" (बुख़ारी)

क़ुरआन मजीद ने यह स्पष्टीकरण भी कर दिया कि मुसलमानों के सद्व्यवहार और नेकी के पात्र वे ग़ैर-मुस्लिम भी हैं, जो इस्लाम और मुसलमानों से वैर नहीं रखते और न उनके विरुद्ध युद्ध किया है। मुसलमानों को हिदायत दी गयी है कि वे इन अनेकेश्वरवादियों के साथ अच्छा व्यवहार करें, जिन्होंने उनके साथ बुरा बर्ताव नहीं किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"अल्लाह तुम्हें इस बात से नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ नेकी व इन्साफ़ का बर्ताव करो जिन्होंने धर्म के मामले में तुम से युद्ध नहीं किया है और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला है। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है। वह तुम्हें जिस बात से रोकता है वह तो यह है कि तुम उन लोगों से दोस्ती करो जिन्होंने तुम से धर्म के मामले में युद्ध किया है और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला है और तुम्हें निकालने में एक-दूसरे की सहायता की है। उनसे जो लोग दोस्ती करें वही ज़ालिम हैं।"

(क़ुरआन, 60:8,9)

क़ुरआन की इस आयत की सबसे अच्छी व्याख्या, वह घटना है जो हज़रत अस्मा बिन्ते अबूबक्र (रज़ि०) और उनकी मां (जो उस वक़्त तक मुसलमान न हुई थीं) के मध्य पेश आया था। हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की एक बीवी क़तीला बिन अब्दुल उज़्ज़ा मुसलमान नहीं हुई थीं और हिजरत के बाद मक्का में रह गयी थीं। हज़रत अस्मा (रज़ि०) इन्हीं की बेटी थीं। सुलह हुदैबिया के बाद जब मदीना और मक्का के बीच आने-जाने का मार्ग खुल गया तो वह अपनी बेटी से मिलने के लिए मदीना आयीं और कुछ उपहार भी लायीं। हज़रत अस्मा (रज़ि०) से उल्लिखित है, वे बयान करती हैं कि उस समय क़ुरैश ने नबी (सल्ल०) से संधि की थी, मेरी मां अपने बाप के साथ आयी तो मैंने नबी (सल्ल०) से कहा कि मेरी मां आयी हैं और वह मुसलमान नहीं हैं। आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"तुम अपनी मां के साथ नातेदारी रखो (अर्थात अच्छा व्यवहार करो)।" (बुख़ारी)

इस्लाम ने अधिकार का क्षेत्र केवल इन्सानों तक ही सीमित न रखा, बल्कि जानवरों के साथ भी सद्व्यवहार करने की शिक्षा दी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) के बेटे अब्दुर्रहमान अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक सफ़र में हम अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ थे। आप शौच के लिए गये। इसी बीच हमने एक छोटी-सी लाल चिड़िया देखी, जिसके साथ दो छोटे-छोटे बच्चे भी थे। हमने उन बच्चों को पकड़ लिया। वह चिड़िया आयी और सिर पर मंडराने लगी। इतने में आप (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और फ़रमाया–

"किसने इन बच्चों को पकड़कर इसको सताया है ? इसे इसके बच्चे लौटा दो।" (अबू दाऊद)

इस हदीस से मालूम हुआ कि किसी जानवर को सताना व कष्ट पहुंचाना वैध नहीं है। इसके अनुचित कर्म दयालुता के बिल्कुल विपरीत हैं। इनसे बचना चाहिए।

एक दूसरी हदीस में है–

हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"एक बार एक व्यक्ति रास्ते पर चल रहा था कि उसे बड़ी तेज़ प्यास लगी। उसे एक कुआं मिला। उसने उसमें उतरकर पानी पिया। फिर बाहर निकला, क्या देखता है कि एक कुत्ता ज़बान निकाले हांप रहा है और गीली मिट्टी चाट रहा है। उस व्यक्ति ने कहा कि प्यास से इस कुत्ते की वैसी ही दशा हो गयी है जैसी दशा मेरी हो गयी थी। फिर वह कुएं में उतरा और अपने मोज़े को पानी से भर लिया। फिर उसे अपने मुंह से थामा और कुएं से निकल आया। और उस कुत्ते को पिला दिया। इस पर ख़ुदा ने उसकी क़द्रदानी की और उसको क्षमा कर दिया।" लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल, क्या जानवरों के सिलसिले में भी हमारे लिए कोई पुण्य और फल है ? आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "प्रत्येक आर्द्र जिगर में (तुम्हारे लिए) प्रतिदान है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मानवता को सन्देश

■ डॉ० मुहम्मद अहमद

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मानवता को जो मौलिक शिक्षा दी, वही पहले के नबियों की भी शिक्षा थी । आप (सल्ल०) ने बताया-लोगो ! तुम्हारा वास्तविक स्वामी वही है, जिसने तुमको पैदा किया । उसकी ही बन्दगी करो । वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं और उसके जैसा कोई नहीं । अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है । तुम उसी की आज्ञा का पालन करो । उससे बड़ा और महान कोई नहीं । मैं भी उसी का बन्दा हूं । उसके हुक्मो पर चलता हूं । अल्लाह ने मुझे अपना पैग़म्बर बनाया है । उसने वे सब बातें बता दी हैं, जिनसे वह खुश होता है और वे बातें भी बता दी हैं, जो उसे पसन्द नहीं । जो लोग मुझे अल्लाह का रसूल मानेंगे, उसकी भेजी हुई किताब अर्थात कुरआन को सच्चा जानेंगे और अल्लाह के उन आदेशों पर चलेंगे, जो उसने भेजे हैं, वही-सफल होंगे । सांसारिक जीवन परीक्षा का जीवन है । वास्तविक जीवन तो आख़िरत अर्थात परलोक का जीवन है । मरने के बाद एक दिन सारे इन्सान फिर ज़िन्दा किये जाएंगे । सब अल्लाह के सामने पेश होंगे, जो सांसारिक जीवन में उसकी मर्ज़ी पर चला होगा, वह उस जीवन में हमेशा सुख भोगेगा और जिसने उसके हुक्मों को न माना होगा, उसके लिए दुखद यातना है ।

नबी (सल्ल०) ने 23 वर्ष की अपनी पैग़म्बराना ज़िन्दगी में लाखों इन्सानों की ज़िन्दगियां बदल दीं । उन्हें विशुद्ध एकेश्वरवादी बनाया और उनमें अल्लाह के सिवा दूसरों की बन्दगी कदापि न करने की सुदृढ़ धारणा विकसित की । आप (सल्ल०) ने उनको इकट्ठा करके एक नयी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था बनायी । आपने इस व्यवस्था को अमल में लाकर सारी दुनिया को दिखा दिया कि आपके द्वारा पेश किये गये उसूलों के आधार पर कैसा समाज और जीवन बनता है । इस महान कारनामे के आधार पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को 'सरवरे आलम' या 'विश्व नेता' कहते हैं । आपका यह कार्य किसी विशेष जाति या क़ौम के लिए न था, बल्कि सारे मानव समाज के लिए था । यह मानवता की संयुक्त धरोहर है, जिस पर किसी का अधिकार किसी से कम या अधिक नहीं है । जिसकी भी इच्छा हो, इससे लाभ उठा सकता है, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ उठाये । अल्लाह की किताब कुरआन में है-"ऐ नबी ! हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है ।"

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन में ही अरब के एक बड़े क्षेत्र पर सत्य का राज्य क़ायम हो गया । राज्य में ग़रीबों, उपेक्षितों और पीड़ितों को पूरा सम्मान मिला । आपने कहा-"तुम अपने गुलामों को वैसा ही खाना खिलाओ जैसा तुम खुद खाते हो, और वैसा ही कपड़ा पहनाओ जैसा तुम खुद पहनते हो, क्योंकि वे भी अल्लाह के बन्दे हैं । उनको कष्ट देना उचित नहीं ।" आपने कहा-"ऐ लोगो ! जान लो तुम्हारा रब एक है । तुम्हारा पिता अर्थात हज़रत आदम एक है । किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर कोई प्राथमिकता नहीं, न किसी ग़ैर-अरबी को किसी अरबी पर, न गोरे को काले पर, न काले को गोरे पर, प्राथमिकता अगर किसी को है तो सिर्फ़ तक़वा और परहेज़गारी से है" अर्थात रंग, जाति, नस्ल, देश, क्षेत्र किसी श्रेष्ठता का आधार नहीं है । बड़ाई और श्रेष्ठता का आधार ईमान और चरित्र है । आप (सल्ल०) ने कहा, "वह आदमी ईमान वाला नहीं है, जो खुद तो पेट भरकर खाये और उसका पड़ोसी भूखा सोये ।"

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन से पहले औरतों के साथ अच्छा सलूक नहीं किया जाता था । उनका हर तरह शोषण किया जाता और उन्हें भोगविलास की वस्तु समझा जाता था । आपने इस गन्दी मानसिकता को बदल दिया और औरतों को उनके स्वाभाविक अधिकार देकर समाज में उन्हें आदर-सम्मान प्रदान किया । आपने कहा-"मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह है, जो तुममें अख़्लाक़ की दृष्टि से सबसे अच्छा हो और तुममें सबसे अच्छा वह है, जो अपनी औरतों के प्रति अच्छा हो ।" आपने कहा-"औरतों के मामले में अल्लाह से डरो । तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर अधिकार है ।" इसी तरह लड़कियों के प्रति भेदभाव और अत्याचारपूर्ण रवैये को सदा के लिए समाप्त करते हुए आपने यह भी कहा कि जो आदमी अपनी बेटियों का भली-भांति पालन-पोषण करेगा और बेटे व बेटियों के प्रति भेदभाव नहीं करेगा, वह जन्नत में मेरे साथ रहेगा ।

कसक

■ जयप्रकाश वाल्मीकि
(जयपुर, राज॰)

सर्दियों के दिन थे । सूरज की पहली किरण के साथ ठाकुर भूप सिंह जी के घर की औरतों का रोना और विलाप शुरू हो गया । आसपास के लोग आशंका से भरे ठाकुर सान के घर के आसपास आये तो पता लगा कि रात में ही बड़ी ठुकराइन यानी कि ठाकुर भूपसिंह जी की माताजी परलोक सिधार गयी है । अब उनकी जात-समाज और रिश्तेदारों का आना भी शुरू हो गया । कुछ समय बाद शव यात्रा जैसे ही घर से रवाना हुई, घर की औरतों ने माताजी के बिस्तर और वह पलंग जिस पर माताजी सोती थीं और उसी पर उन्होंने अंतिम सांस ली थी को माताजी की जूतियों के साथ बाहर रखवा दिया ।

अंतिम संस्कार के बाद सब लोग जा चुके थे । अब घर में ठाकुर साहब, उनका परिवार, नज़दीकी रिश्तेदार ही थे । शाम का वक़्त होने को था । ठाकुर भूप सिंह उद्दिग्न मन से बाहर आकर खड़े हो गये । उनका ध्यान घर की बाउंड्री के डंडे से सटे पड़े माताजी के बिस्तर, कपड़े और पलंग पर गया । वे बड़े बेतरकीब से पड़े बड़े ही अशोभनीय लग रहे थे । वे इन पर सोच ही रहे थे कि ठुकराइन भी बाहर आ गयी ।

"सुनिये जी !"

"बाहर क्यों खड़े हो ? अन्दर आकर आगे के कामकाज के बारे में बातचीत कर लो, घर के छोटे-बड़े लोग मौजूद हैं ।"

ठकुराइन की बात सुन ठाकुर साब वहीं खड़े-खड़े बोले–"कर लेंगे बातचीत भी । पर इस सामान को यहां से उठवाया क्यों नहीं ?" वे आपस में बतिया ही रहे थे कि मुन्नालाल और उनकी पत्नी बाज़ार से साग-सब्ज़ी लेकर आते दिखायी दिये । दोनों उन्हें देखने लगे । दोनों को लगा जैसे उनकी समस्या का समाधान होने वाला है ।

मुन्ना लाल ठाकुर साब के घर के सामने दो-तीन घर छोड़कर रहते हैं । अभी ज़्यादा समय नहीं हुआ मुन्नालाल को यहां आये । सालो पहले जब यहां कोई नहीं रहता था । तब मुन्नालाल ने एक सोसायटी से यहां प्लाट खरीद लिया था । जब यह आबादी बढ़ी तो मुन्नालाल ने भी यहां छोटा-सा घर बनाकर रहना शुरू कर दिया था ।

वे एक सरकारी दफ़्तर में चपरासी का काम करते हैं । पर रहते हैं, बड़ी ही शालीनता और इज़्ज़त से । वे स्वजाति बंधुओं की तरह सूअर भी नहीं पालते और अपनी पत्नी को भी कहीं कामकाज करने नहीं भेजते । उनके बच्चे साफ़-सुथरी ड्रेस में स्कूल जाते हैं । परंतु भारतीय समाज में कोई कैसे भी रहे, किन्तु आपसी परिचय की शुरुआत जाति की पूछताछ से ही होती है और मुन्नालाल ने कभी किसी से जाति नहीं छिपाई । इस तरह सभी को विदित हो गया कि मुन्नालाल किस जाति से है और इसका परिणाम यह हुआ कि तब से ही उन्हें जातीय दंश झेलना पड़ रहा । कॉलोनी में कोई सामूहिक कार्यक्रम होती तो कॉलोनीवासी उन्हें हीन समझकर न चन्दा लेते, न बुलाते । सभी उपेक्षाओं

मुन्नालाल को दुख इस बात को लेकर हुआ था कि वर्मा जी या उनके घर वालों में से किसी ने भी हरिजनों का घर पूछने पर उसी का घर क्यों बतलाया । गांधी जी ने तो सभी अछूत जातियों को "हरिजन" था । बदलते परिवेश में "हरिजन" नाम गाली का पर्याय बन गया है । दलित जातियों के बहुत से लोग भी हरिजन नाम को जाति के नाम पर उन्हीं की समाज पर थोप देना मुन्नालाल को और भी ज़्यादा कष्टदायी लगा । इस घटना के बाद मुन्नालाल मन ही मन सोचने लगा कि इससे ज़्यादा उनके समाज की और क्या अधोगति होगी ।

के बाद भी मुन्नालाल अपने मन में मगन रहते ।

मुन्नालाल का सपना था कि उनके बच्चे पढ़-लिखकर भंगीपन से मुक्ति पाये । मुन्नालाल पहले अपनी बिरादरी की जिस बस्ती में रहते थे, वहां उन्हें अपने बच्चों का पढ़ना-लिखना संदिग्ध लगता था । बस्ती के कई बच्चे या तो आवारा-से इधर-उधर घूमते रहते या झुंड बनाकर अश्लील हंसी-मज़ाक़ करते रहते । बच्चों के इस तरह के हालातों पर उनके मां-बाप कुछ नहीं कहते । मुन्नालाल ने कई बार लोगों को समझाया । कुछ हां-हां करते, कुछ पीठ पीछे हंसी उठाते । परिणाम वही ढाक के तीन पात देखकर सोचते संगत का असर ज़रूर आता है और वे अपने बच्चों को इस तरह की संगत से दूर रखना चाहते थे । इसी विचार के तहत मुन्नालाल ने यहां पर यह प्लाट लिया था । उसके बच्चे जब स्कूल जाने लायक़ हुए तो वे यहां आकर रहने लग गये थे । जैसा उसने सोचा था, ठीक वैसा ही फलीभूत भी हो रहा था । उसके दोनों बच्चे हर साल पढ़ाई में अव्वल आते और खेलकूद के साथ-साथ स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते । अत: इस कॉलोनी में रहकर मुन्नालाल को इस बात का संतोष था कि उसके सपने धीरे-धीरे यथार्थ में बदल रहे हैं ।

ख़ैर, मुन्नालाल अपनी पत्नी के साथ ठाकुर भूपसिंह के मकान के पास से जैसे ही निकलने लगे, तब ठाकुर भूपसिंह ने उन्हें आवाज़ देकर पास बुलाया और कहने लगे–अरे, ओ मुन्ना ! माताजी का यह सामान ले जाओ, तुम्हारे काम आ जाएगा ।'' पर यह क्या ? मुन्नालाल ने विनम्रता से कहा–''ठाकुर साब ! मैं ऐसा कोई सामान नहीं लेते, आप किसी और को दे देना ।'' फिर बेपरवाह से अपने घर की ओर आगे बढ़ गये । ठाकुर और ठुकराइन विमुग्न से उन दोनों को जाते देखते रह गये । मुन्नालाल के सामान न ले जाने का उत्तर ठाकुर भूपसिंह और उनकी पत्नी के बीच थोड़ी देर के लिए निस्तब्धता ला दी । उस निस्तब्धता को तोड़ते हुए ठाकुर साब नाराज़ होकर कुछ बोले । पति की रो में रो मिलाकर ठुकराइन भी कहने लगी–''मुझे तो ताज्जुब हो रहा है, इन चंडालों की बात सुनकर ।'' फिर रुककर कहने लगी–''बाप-दादा जूठन खाते हुए और उतरन पहनते हुए मर गये और अब इनके नखरे देखो । उसकी ज़ोरू के आड़े पल्ले की साड़ी पहने हुइ थी, कैसे इतराती हुई जा रही थी ।''

ठकुराइन की बात सुनकर उनके पड़ोस की पंडिताइन भी आ गयी । दोनों की क्रोध से भरी भाव भंगिमा देखकर पूछा–''क्या हुआ ?'' ठकुराइन ने पूरी बात बतायी । वह भी स्तब्ध हो उठी–''ओह ! तीन लोक से मधुरा न्यारी ।'' फिर पंडिताइन कहने लगी–''भाई साब ! कल सड़क वाली जमादारनी को दे देना, पर रात भर मृत व्यक्ति का सामान इस तरह घर के द्वार पर पड़ा रहना अशुभ होता है । घोर कलयुगे आ गया । तब ही तो यह लोग उद्दंड हो रहे हैं ।''

''पंडिताइन जी !''

कलयुग को तो अभी सतयुग में बदल देता, अगर यह शहर नहीं हमारा गांव होता ।'' अब पंडित जी भी बाहर आ गये थे । उन्होंने भी अपने गांव की घटना का बखान शुरू कर दिया ।

वे बताने लगे–''गांव में हमारे घर के बीच पालतू कुतिया मर गयी थी । अब उसे उठाये बग़ैर शाम का खाना कैसे बने, इसलिए गांव के बल्लू हरिजन को बुलवाया । पर वह नहीं आया । भाई के घर जाकर उस दिन खाना खाया । सुबह उठकर पिताजी ने यह बात गांव के मुखिया को बतायी । दूसरे दिन बल्लू आया तो पिताजी ने कहा–

''अरे ब्रल्लू ! अब तुम्हें ज़्यादा खाने को मिल गया है, अब हमारे यहां काम करने की क्या ज़रूरत है । हमारी तरह सभी ने उससे काम करवाना बन्द कर दिया । तब बल्लू खुद की जोरू और बच्चों को साथ लेकर आया । उसकी जोरू गिड़गिड़ाने लगी–''अन्नदाता ! कल इनकी तबियत ठीक नहीं थी । अब कोई न कोई ज़रूर आयेगा...हमें माफ़ी दे दो।'' इस तरह एक ही दिन में बल्लू की बुद्धि ठिकाने आ गयी ।'' अब यह गांव तो है नहीं, अब आप तो सुबह का ही इन्तिज़ार करो । ऐसी सलाह देकर पंडित, पंडिताइन चले गये । लेकिन ठाकुर भूपसिंह को रह-रहकर इस बात का सोच हो रहा था कि गांव भले ही न हो, किन्तु यहां भी उनकी प्रतिष्ठा कम नहीं है । उसकी हैसियत को देखकर ही तो उन्हें कॉलोनी का सर्वे-सर्वा बना रखा है, एक यह मुन्नालाल है, जिसने उनकी अवहेलना कर दी । स्वयं भले ही न लेता । पर उनका मान रखने के लिए मृत माताजी के कपड़े-लत्ते घर से थोड़ी दूर ही रख जाता ।

उधर घर आकर मुन्नालाल की पत्नी सहजभाव से खाना बनाने लग गयी । पर मुन्नालाल बड़ा ही बेचैन और

उद्वेलित-सा हो उठा । यहां आकर रहने के बाद यह दूसरी घटना घटी थी कि कॉलोनी के लोग उसे उसकी जाति का अतीत स्मरण कराने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं । एक साल पहले की बात है । वह जब तैयार होकर ऑफ़िस जा रहा था तो उसी समय एक वृद्ध महिला आकर कहने लगी थी–''भाया ! कहाके गाय रो बछड़ो मर गयो, उ न उठ्या आ ।'' मुन्नालाल उसका चेहरा देखने लगा था । वह महिला फिर से बोली थी–''काई पीसा लेवल्यो ।'' मुन्नालाल ने विनम्रता से कहा थां–

''माताजी ! मैं यह काम नहीं करता ।''

क्यों ? कांई थे हरिजन कोनी ?''

थाने कुण बता दो कि यह घर हरिजना को है–''मुन्नालाल ने पूछा तो उस वृद्ध महिला ने हाथ के इशारे से बतलाया था–''वो सामने वाले घर का ।'' वृद्ध कॉलोनी में वे वर्मा जी के नाम से जाने जाते हैं ।

मुन्नालाल को दुख इस बात को लेकर हुआ कि वर्मा जी या उनके घर वालों में से किसी ने भी हरिजनों का घर पूछने पर उसी का घर क्यों बताया । गांधी जी ने तो संभी अछूत जातियों को ''हरिजन'' कहा था । बदलते परिवेश में ''हरिजन'' नाम गाली का पर्याय बन गया है । दलित जातियों के बहुत से लोग भी हरिजन नाम को जाति के नाम पर उन्हीं के समाज पर थोप देना मुन्नालाल को और भी ज़्यादा कष्टदायी लगा । इस घटना के बाद मुन्नालाल मन ही मन सोचने लगा कि इससे ज़्यादा उनके समाज की और क्या अधोगति होगी ।

यही सोचकर कभी वे गाय के मृत बछड़े को उठवाने वालों को उनके पास भीजवा देते हैं, तो कभी स्वयं वे लोग अपने मृत जनों के कपड़े-लत्ते उसे देने लगते हैं । मुन्नालाल सोचने लगा कि उनकी जाति के प्रति समाज की सदियों पुरानी सोच को वह अकेला तुरत-फुरत नहीं बदल सकता तथा एक-एक से प्रतिकार करना भी उनके बीच स्वयं को हास्यस्पद बनाना है । अंत में मुन्नालाल ने यह सोचकर इस बात को दिल से निकाल दिया कि बदलाव पीढ़ियों में आता है । उसके बच्चों का रहन-सहन बोल-चाल बेहतर होगा तो एक दिन वह भी आएगा, जब लोग उसके घर आकर मृत बछड़ा उठाने और मृत लोगों का सामान ले जाने की बात कहने से झिझकेंगे । मुन्नालाल को विश्वास था कि वह एक दिन ज़रूर आएगा ।

अगले दिन प्रातः ही ठाकुर भूपसिंह के घर के बाहर तू-तू, मैं-मैं के कारण लोगों का ध्यान उस तरफ़ गया । एक सड़क पर झाड़ू देने वाली महिला थी । दूसरा हाथ गाड़ी लेकर सड़क पर कचरा उठाने वाला था । ये दोनों नगापालिका के कर्मचारी थे और उन दोनों से अलग एक तीसरा भी था, जो ठाकुर भूपसिंह को अपना वर्षों पुराना जजमान बता रहा था । तीनों में वाक्युद्ध चल रहा था, इस बात को लेकर की बड़ी ठकुराइन का पलंग, कपड़ों पर उसका हक़ है । मुन्नालाल दूर से यह दृश्य देख रहा था । ठाकुर भूपसिंह भी आवाक ! कहां एक की बात पर उन्हें मलाल था, कहां तीन-तीन आ गये !

ख़ैर तीनों ने सामान का आपसी बंटवारा कर लिया और ले जाने लगे इसी दौरान ठाकुर भूपसिंह का ध्यान मुन्नालाल पर गया, तो उनके मन में कल से चुभी फांस फिर से तीव्रता से अखरने लगी । उन्हें कल मुन्नालाल द्वारा इन्कार करने की बात की पीड़ा सताने लगी कि मुन्नालाल का दिमाग़ कैसे फिर गया है, पर यह उनका गांव तो था नहीं जो वे मुन्नालाल को अपने लठैतों के हाथों पकड़वा कर नीम पर बंधवा कर सड़ाके लगवाते, अपने दादा और पिता की तरह ।

इधर मुन्नालाल के मन में भी इस बात का दर्द उभर रहा था कि उनकी जाति के लोग कब सुधरेंगे । स्वाभिमान को त्याग कर जैसे कुत्ते चुसी हुई हड्डी पर लड़ते हैं, वैसे लड़ रहे थे । काश, उनमें भी उस जैसी भावना के अंकुर का स्फुरण होता ।

इधर मुन्नालाल उधर ठाकुर भूपसिंह दोनों के मनों में अलग-अलग तरह की टीस थी, कसक थी, लेकिन परिस्थितिवश दोनों विवश थे ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

शिक्षा, व्यावहारिक ज्ञान और समग्र विकास

❖ डॉ॰ अर्चना रानी वालिया
(कोटद्वार, उत्तराखंड)

शिक्षा क्या है ? यदि एक वाक्य में कहा जाए तो ''जीने की कला'' का नाम ही शिक्षा है । शिक्षा की उत्पत्ति 'शिक्षा' धातु से हुई है और इसका अर्थ विद्या प्राप्त करना अथवा ज्ञानार्जन करना है । शिक्षा का अर्थ ही ज्ञानार्जन द्वारा संस्कारों अथवा व्यवहारों का निर्माण करना है ।

''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात शिक्षा ही है जो मनुष्य को बंधनों से मुक्त करती है अथवा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दासता से मुक्त कर सर्वांगीण विकास करती है । शिक्षा का उद्देश्य है देश के लिए प्रशिक्षण तथा राष्ट्र के लिए प्रेम । मस्तिष्क विकास के लिए मात्र पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं है, उसके लिए प्रकृति और जीवन से प्रत्यक्ष अनुभूतिजन्य ज्ञान की आवश्यकता है । शिक्षा के माध्यम से चिंतन-मनन, कल्पना, स्मरण आदि के लिए समय-समय पर वाद-विवाद, भाषण, कविता, संगोष्ठी, सम्मेलन, प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए प्रेरक स्तंभ है । मैं भावी पीढ़ी को वास्तविकता से अवगत करा नैतिकता का पाठ पढ़ाना चाहती हूं । नैतिकता का अर्थ है–नीति के अनुसार व्यवहार या सद्व्यवहार । आपसी प्रेम, भाईचारा, दया, करुणा, सबका मंगल चाहना–ये नैतिकता के सर्वमान्य उदाहरण हैं । आज नैतिकता की बातें दकियानूसी मानी जाने लगी हैं ।

नैतिकता जो धर्म और कर्म पर आधारित है । नैतिकता का अनुसरण करने वाला मनुष्य कंगाली में भी सुखी है । नैतिकता ही है, जो मनुष्य को पशुत्व से ऊपर उठा देवत्व की ओर ले जाती है । भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसका बौद्धिक पिछड़ापन है । इस कमी को दूर करने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षा द्वारा बालक का बौद्धिक विकास किया जाए, ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके । शिक्षा सिर्फ़ क्षमताओं में पर्याप्त प्रशिक्षण ही नहीं है, और न ही ज्ञान का प्रशिक्षण है । बल्कि मनुष्य को बुद्धि और मानवता से पूर्ण बनाना है । इसमें जीवन के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण शामिल है ।

एक ऐसा दृष्टिकोण, जो शरीर और मस्तिष्क के संतुलन को बनाए रखता है । स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक हैं । बालक का शारीरिक विकास करना शिक्षा का प्रथम उद्देश्य है । शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे व्यक्ति सुसंस्कृत, सभ्य एवं शिष्ट बन सके तथा उसमें उच्च विचारों, मानवीय गुणों तथा कलात्मक रुचियों का विकास हो । समाज के हित के लिए व्यक्ति को अपना सब कुछ बलिदान कर देना चाहिए । व्यक्ति समाज का एक अंग है, एक घटक है, उसका विकास समाज में रहकर होता है । उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर होती है । देखा जाए तो व्यक्ति का जीवन समाज का दिया हुआ है अथवा कहा जा सकता है कि व्यक्ति समाज का ऋणी है । ऐसी स्थिति में समाज को प्रत्येक व्यक्ति से सेवा प्राप्त करने का अधिकार है ।

शिक्षा का उद्देश्य नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होना चाहिए । शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर बल देना है । प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक सभी शैक्षिक संस्थाओं को इस पवित्र कार्य को पूरा करना चाहिए । उनका सही उद्देश्य मूल्यों पर ज़ोर देना है, जो कि निश्चित रूप से बौद्धिक है तथा शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है । प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक बच्चे को अच्छी शिक्षा प्रदान करे ।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने मात्र से ही कोई विद्वान या गुणी नहीं हो जाता । पढ़ाई के साथ-साथ गुण भी होने चाहिए । शिक्षा की परिभाषा के अनुसार ''व्यक्ति के व्यवहार में सुधार ही शिक्षा है । पढ़-लिखकर भी यदि व्यक्ति में तहज़ीब, स्नेह, आदरभाव, दया अनुशासन, कर्तव्य बोध इत्यादि गुणों का विकास न हो पाये तो उसकी शिक्षा निरर्थक ही मानी जाएगी । अर्थात शिक्षा का वैज्ञानिक और व्यावहारिक दोनों पक्ष सुदृढ़ और मज़बूत होने चाहिए, जिससे शिक्षार्थी ज्ञान की तथ्यात्मकता से परिचित होकर अपने जीवन में उसका अनुकरण कर सकें ।

वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक परंपराओं एवं ज्ञान का संरक्षण कर नयी पीढ़ी को सौंपना है । ताकि ज्ञानार्जन द्वारा संस्कारों एवं व्यवहारों का निर्माण संभव हो सके । शिक्षा के संदर्भ में अन्य ऊंची-ऊंची धारणाएं एवं बड़ी-बड़ी बातें निरर्थक बन जाती हैं, यदि वह दूसरे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक न हो । इन तथ्यों से शिक्षक, विद्यार्थी एवं समस्त जनमानस अवश्य सहमत होगा, ऐसा विश्वास किया जा सकता है ।

शिक्षा समाज का महत्वपूर्ण अंग है । सामाजिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है । शिक्षा से व्यक्ति का बहुमुखी विकास होता है । शिक्षा से हमें व्यावसायिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त होता है । व्यावहारिक ज्ञान का व्यक्ति के सामाजिक ज़ीवन में महत्वपूर्ण स्थान है । उदाहरण के लिए एक कुशल चिकित्सक यदि व्यवहार कुशल नहीं है तो उसके पास रोगी चिकित्सा हेतु जाने से हिचकिचाते हैं, जिसका सीधा प्रभाव उसके व्यवसाय पर पड़ता है । अर्थात उसका आर्थिक विकास प्रभावित होता है ।

आज आवश्यकता है शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन की । आज शिक्षा का व्यावसायीकरण हो रहा है तथा साथ ही इस बात पर बल दिया जा रहा है कि हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी हो, जिसमें शिक्षण के साथ-साथ प्रशिक्षण भी हो । इस बात का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी के सामने स्कूल/कॉलेज से निकलने पर व्यवसाय की समस्या न आये । जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि सफल व्यवसाय के लिए व्यावहारिकता अनिवार्य है । इस आधार पर हम कह सकते हैं कि हमारी शिक्षा पद्धति में व्यावहारिक ज्ञान अर्थात नैतिकता को महत्व देना अतिआवश्यक है, जिसका आज नितांत अभाव है ।

इस परिवर्तन के लिए मात्र शासन उत्तरदायी नहीं है । हमें स्वयं, शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा सामाजिक संस्थाओं को इस ओर पहल करने की आवश्यकता है । शिक्षा का आधार है–विद्यालय, जहां उच्च-आदर्शों, राष्ट्रीय चरित्र एवं श्रेष्ठ संस्कारों की आधारशिला रखी जाती है । विद्यालय के स्वस्थ वातावरण तथा आचार्यों की निष्ठा के द्वारा ही देश की भावी-पीढ़ी को सही दिशा प्रदान की जा सकती है । आज के विद्यालय–जब मैं आज के विद्यालयों की ओर दृष्टिपात करती हूं, तो मन दुखी हो जाता है, चिंता की रेखाएं उभर आती हैं तथा मन आक्रोश से भर जाता है । आज के विद्यालय केवल पुस्तकीय ज्ञान देने वाले केन्द्र बनकर रह गये हैं । जहां किसी कार्यालय की भांति विभिन्न आचार्य अपने कालांशों में अपने विषय पढ़ाकर चले जाते हैं । यह शिक्षा के व्यावसायीकरण का प्रभाव है ।

मैं एक ऐसे विद्यालय की कल्पना करती हूं । जो भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं तथा वर्तमान युग की चुनौतियों को भी स्वीकार करें । इस विद्यालय की पृष्ठ-भूमि, भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों पर आधारित होगी, जबकि इसमें विद्यार्थी को आधुनिक परिवेश की शिक्षा भी दी जाएगी । पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में अनेकता में एकता की संस्कृति साम्प्रदायिक सद्भाव तथा व्यावहारिक ज्ञान आदि से अवगत कराया जाएगा, जिसकी आज नितांत आवश्यकता है । विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखा जाएगा । इसके लिए आचार्यों तथा प्रधानाचार्यों की कार्य-प्रणाली का इस प्रकार किया जाएगा कि वे विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन सकें । इस विद्यालय में कठोर अनुशासन के स्थान पर आत्म-अनुशासन पर बल दिया जाएगा । किसी कवि ने ठीक ही कहा है–यही होगा तुम्हारा समय ज्ञान संचय करने का, संयम, शील, सुशील, सदाचारी बनने का । यह होगा संभव, अनुशासित बनने से, माता-पिता गुरु की आज्ञापालन करने से ।

हम यह भली-भांति जानते हैं कि मनुष्य इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है । यह भी जानते हैं कि अपने ज्ञान, समझ, चरित्र-बल, संयम तथा अनुशासन आदि विशेषताओं के कारण ही वह इस सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी है । हम ध्यान से देखें, तो हम यह पाएंगे कि मनुष्य को मनुष्य बनाने में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है । निष्कर्ष के रूप में, हम कह सकते हैं कि शिक्षा में व्यावहारिक ज्ञान को महत्व देते हुए समग्र विकास संभव है ।

सूचना

मेरठ में 'कान्ति' हासिल करने के लिए संपर्क करें–

AHSAN MUSTAQIMI

1946/1, Gali No. 28, Near Bismillah Masjid,
D-Block, Zakir Husain Colony,
Meerut City-2 (Uttar Pradesh)
Mob. : 09411022708
E-mail : mustaqimiahsan1931@gmail.com

धर्मनिरपेक्षता का ढांचा

■ इरफ़ान इंजीनियर

सोलहवीं लोकसभा के लिए हाल में हुए आम चुनाव में उनकी जीत के बाद, हिन्दू राष्ट्रवादी यह दावा कर रहे हैं कि भारतीय मतदाताओं ने धर्मनिरपेक्षता को ख़ारिज कर दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द का हमारे देश में घोर दुरुपयोग होता आया है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बिहार में आर॰जे॰डी॰ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने धर्मनिरपेक्षता के नारे का इस्तेमाल अपने कुशासन और भ्रष्टाचार पर परदा डालने के लिए किया। इस नारे का इस्तेमाल कर अवसरवादी राजनैतिक ताक़तों ने अल्पसंख्यक समुदाय का मत हासिल करने की कोशिश भी की। उनके लिए धर्मनिरपेक्षता का एक ही अर्थ है, और वह है, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।

इसमें भी वे बुरी तरह असफल रहे। समाजवादी पार्टी के शासन के दौरान उत्तर प्रदेश में 100 से अधिक सांप्रदायिक दंगे हुए। कांग्रेस-शासित प्रदेश भी दंगों की चपेट में आने से बच नहीं सके। सुरक्षा व गुप्तचर एजेंसियों ने आतंकवाद-निरोधक कार्यवाही के नाम पर हिन्दी भाषी राज्यों और हैदराबाद में बड़ी संख्या में निर्दोष मुस्लिम युवकों को हिरासत में लिया, उन्हें यंत्रणा दी और कुछ मामलों में उन्हें जान से भी मार दिया। ये पार्टियां, सांप्रदायिक शक्तियों के बढ़ते प्रभाव को रोकने में असफल सिद्ध हुईं और वे अल्पसंख्यकों को दानवीकरण पर भी प्रभावी रोक नहीं लगा सकी।

तथाकथित धर्मनिरपेक्ष पार्टियों की अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता में शामिल था अल्पसंख्यक समुदाय के कट्टरपंथी तबक़े से हाथ मिलाना ताकि उन्हें अल्पसंख्यकों के वोट मिल सकें। अल्पसंख्यकों में भी कट्टरपंथी प्रवृत्ति वाले लोगों की संख्या बहुत कम है। ठीक उसी तरह, जिस तरह बहुसंख्यक समुदाय में सांस्कृतिक राष्ट्रवादी, अल्पसंख्यक हैं, परंतु समस्या यह है कि साम्प्रदायिक तबक़े सुसंगठित हैं और अपनी बात चिल्ला-चिल्लाकर कहने में सिद्धस्त हैं। इसके विपरीत, जो लोग समझदार और परिपक्व हैं वे चुप्पी साधे रहते हैं। साम्प्रदायिक तत्व भड़काऊ बातें करते हैं और ऐसे काम करते हैं, जिनसे उन्हें मीडिया में ख़ूब तरजीह मिलती है।

> **हिन्दू राष्ट्रवादी संगठन अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता का इस्तेमाल अल्पसंख्यकों को कठघरे में खड़ा करने और उन्हें देश की हर समस्या के लिए दोषी ठहराने के लिए करते हैं।**

हिन्दू राष्ट्रवादी संगठन (एच॰एन॰ओ॰), अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता का इस्तेमाल, अल्पसंख्यकों को कठघरे में खड़ा करने और उन्हें देश की हर समस्या के लिए दोषी ठहराने के लिए करते हैं। एच॰एन॰ओ॰ अत्यंत सुसंगठित हैं और उन्होंने न केवल अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता की हामी राजनैतिक पार्टियों बल्कि अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्यों के प्रति भी आमजनों के मन में घृणा का भाव पैदा कर दिया है। ये संगठन, अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता के लिए धर्मनिरपेक्ष राजनैतिक दलों को नहीं बल्कि राष्ट्र में अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को ही दोषी बताते हैं। वे अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता का विरोध करने की बजाय इस्लाम और ईसाइयत को विघटनकारी प्रकृति वाले धर्म निरुपित करते हैं। एच॰एन॰ओ॰ कहते हैं कि जब तक इस देश में मुसलमान और ईसाई रहेंगे, तब तक ऐसी पार्टियां भी अस्तित्व में रहेंगी जो अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता से राजनैतिक लाभ हासिल करती हैं। एच॰एन॰ओ॰ के विचारकों की नज़र में इस समस्या के दो हल हैं–

(1) यदि संभव हो तो अल्पसंख्यकों को इस देश से बाहर कर दिया जाए या

(2) उन्हें दूसरे दर्जे का अधिकारविहीन नागरिक बनाकर देश में रहने दिया जाए।

एच॰एन॰ओ॰ कहते हैं कि धर्मनिरपेक्षता एक पश्चिमी अवधारणा है जिसे जल्द से जल्द ख़ारिज कर दिया जाना

सर्वमान्य परिभाषा बने

चाहिए । यहां हमें यह स्वीकार करना होगा कि धर्मनिरपेक्षता की कोई सर्वस्वीकार्य परिभाषा नहीं है । फ्रांस, रूस व तुर्की में धर्मनिरपेक्षता से आशय, धार्मिक संस्थागत ढांचे और राज्य के बीच संघर्ष से रहा है । भारत में धर्मनिरपेक्षता को सर्वधर्म समभाव के रूप में देखा जाता रहा है, जिसका अर्थ यह है कि राज्य सभी धर्मों को एक नज़र से देखेगा और सभी धर्मों के लोगों को अपने धर्म में आस्था रखने, उसका पालन व प्रचार करने की स्वतंत्रता होगी ।

जब भी दो विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच संघर्ष की स्थिति बनेगी, तब राज्य निष्पक्ष रेफरी की भूमिका निभाएगा और किसी भी धर्म के व्यक्ति या व्यक्तियों को दूसरे धर्म के मानने वालों के विरुद्ध हिंसा करने की इजाज़त नहीं देगा । एच॰एन॰ओ॰, हिंदुओं को एक उच्च नस्ल मानते हैं, यद्यपि वे ऊपरी तौर पर हिन्दू धर्म की सहिष्णुता की परंपरा का दम भी भरते हैं । एच॰एन॰ओ॰ के प्रमुख विचारक गोलवलकर चाहते थे कि अल्पसंख्यक, हिंदू राष्ट्र, हिंदू परंपराओं और प्रतीकों के गौरव के स्वप्न देखें, उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता, समानता, मानवीय गरिमा और नागरिकता जैसी अवधारणाएं पश्चिमी व हिन्दू संस्कृति के विरुद्ध हैं ।

'हिन्दू' शब्द का एक धर्म विशेष के अर्थ में प्रयोग, हमारे देश में ब्रिटिश शासन के दौरान प्रचलन में आया । इसके पहले तक, हिंदू समुदाय का अर्थ था सिंधु नदी के पश्चिमी व पूर्वी तटों पर रहने वाले सभी लोग, चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों । आमजनों में धार्मिक चेतना का उदय, प्रभुत्वशाली उच्च जातियों, विशेषकर ब्राह्मणों के प्रति रोष के कारण हुआ । ब्राह्मणों ने शुद्ध-अशुद्ध की अपनी परिभाषा विकसित कर ली और उन्होंने समाज को जातिगत आधार पर विभाजित कर दिया । ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरुद्ध जनप्रतिरोध का नेतृत्व कई भक्ति संतों, जिनमें तुलसीदास, कबीर, रविदास, मीराबाई, ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम, चोखामेला, वरकारी संप्रदाय, बहिना बाई, गुरुनानक, बसवेश्वरा, नारायण गुरु व बंगाल में बाउल समुदाय व असम में शंकरदेवा इत्यादि ने किया ।

निचले दर्जे के समुदायों की धार्मिक चेतना, भक्ति संतों की रचनाओं के ज़रिए विकसित हुई, जिनमें उन्होंने ऊंच-नीच की अवधारणा का खंडन किया और ज़ोर देकर कहा कि ईश्वर की नज़र में सब एक समान हैं । ईश्वर कभी अपने बंदों को सज़ा नहीं देता । वह क्षमाशील है । वह राह से भटके लोगों को भी जन्म और पुनर्जन्म के चक्र में फंसाकर प्रताड़ित नहीं करता । ईश्वर की भक्ति का अर्थ है सभी मानवों से प्रेम करना, चाहे उनकी उपासना पद्धति और संस्कृति कोई भी हो और वे किसी भी नस्ल के हों । भक्ति संतों का कहना था कि हमें मनुष्य ही नहीं बल्कि जानवरों और प्रकृति से भी प्रेम करना चाहिए और उनके विरुद्ध भी हिंसा नहीं करनी चाहिए । मुस्लिम भक्ति संत सालबेग ने भगवान जगन्नाथ की शान में कई रचनाएं लिखी हैं और ऐसा कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ का रथ तब तक आगे नहीं बढ़ता था जब तक कि सालबेग, जगन्नाथ यात्रा में शामिल नहीं हो जाते थे । इसी तरह, रसखान ने भगवान कृष्ण पर सैकड़ों पद लिखे हैं । सूफ़ी-संतों का दर्शन भी उतना ही समावेशी था और उसने मुसलमानों व हिन्दुओं, दोनों को आकर्षित किया । भक्ति संतों की तरह सूफ़ी-संत भी सहृदय व क्षमाशील ईश्वर में विश्वास रखते थे और आराधना की समावेशी परंपराओं के हामी थे ।

आम लोगों की धार्मिक चेतना समावेशी थी । पुरोहित तबक़े का प्रभाव केवल श्रेष्ठ वर्ग तक सीमित था । भारत में यह परंपरा नहीं थी कि पुरोहित वर्ग अपने मठ स्थापित करें, अपने समर्थकों की सेना खड़ी करें और उसके बाद धर्म के आधार पर शासन चलाएं । आम लोगों को धर्म से कोई विशेष प्रेम नहीं था । यही कारण है कि सर्वधर्म समभाव हमारे देश के लिए धर्मनिरपेक्षता की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा है । भारत में धर्मनिरपेक्षता, चर्च व राज्य के बीच संघर्ष के रास्ते नहीं आयी है—एक ऐसा संघर्ष, जिसमें एक की जीत होती और दूसरे की हार ।

एच॰एन॰ओ॰ भारत के लोगों को भ्रमित करने के लिए यह कहते हैं कि धर्मनिरपेक्षता नेहरूवादी अवधारणा है जिसे पश्चिम से उधार लिया गया है । आम हिन्दू दूसरे धर्मों के प्रति केवल सहिष्णु ही नहीं है, बल्कि उनका सम्मान भी करता है । उसके लिए सच बहुआयामी है । इसके विपरीत, एच॰एन॰ओ॰ की सोच में असहिष्णुता कूट-कूटकर भरी हुई है । चूंकि हिन्दुओं में ही बहुत विविधता है इसलिए एच॰एन॰ओ॰ जानते हैं कि हिन्दुओं को एक करने का एक ही तरीक़ा है और वह है उन्हें यह विश्वास दिला देना कि कोई दूसरा धर्म उनका शत्रु है ।

हिन्दुओं की आंतरिक विविधता के कारण उनकी एकरूपता के आधार पर उन्हें एक करना दुष्कर है, परंतु एक शत्रु, ज़रूर उन्हें एक बना सकता है । इसलिए वे अल्पसंख्यकों के मुंह पर कालिख पोतने की कोशिशों में लगे रहते हैं ।

एच॰एन॰ओ॰ भी समाज में उदारवादी सोच को दबाना चाहते हैं और धार्मिक सांस्कृतिक विविधता के लिए ख़तरा हैं । वे लोगों से यह अपेक्षा करते हैं कि उनका व्यवहार, उनकी धार्मिक पहचान के अनुरूप हो । यह स्पष्ट है कि एच॰एन॰ओ॰ समाज से उदारवाद का पूरी तरह से ख़ात्मा तभी कर सकते हैं जब वे एकाधिकारवादी राज्य की स्थापना कर दें । एच॰एन॰ओ॰ एक ऐसे सांस्कृतिक एकाधिकारवादी राज्य का निर्माण करना चाहते हैं जो पितृसत्तातमक व उच्च जातियों की प्रभुता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करे ।

हमें अवसरवादी धर्मनिरपेक्षता को इसलिए ख़ारिज करना चाहिए क्योंकि इससे सच्ची धर्मनिरपेक्षता का प्रतिनिधित्व नहीं होता । धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है समाज को चर्च व संस्थागत पुरोहिताई के चंगुल से मुक्त करना । दूसरे शब्दों में, भारत का कोई भी नागरिक किसी भी धार्मिक संस्था के सहयोग के बिना शिक्षा हासिल कर सकता है और धार्मिक ज्ञान, उसकी शिक्षा का अंग हो या न हो, यह निर्णय करने का अधिकार उसे है । धर्मनिरपेक्ष राज्य वह है जिसका पथप्रदर्शक कोई धार्मिक ग्रंथ, सिद्धांत या परंपरा नहीं होती । यद्यपि राज्य का कोई धर्म नहीं होता तथापि वह अपने नागरिकों को यह स्वतंत्रता देता है कि वे अपनी पसंद के धर्म का पालन करें या किसी भी धर्म का पालन न करें या नास्तिकता में विश्वास रखें ।

धर्मनिरपेक्ष राज्य का इस बात से कोई लेना-देना नहीं होता कि उसके किसी नागरिक का धर्म क्या है । नीति निर्धारण, विधि निर्माण, प्रशासन, शासकीय नियोजन, शिक्षा व न्याय प्रदान करने के मामलों में संबंधित नागरिक का धर्म अप्रासंगिक होता है । सार्वजनिक नीतियां केवल और केवल नागरिकों की बेहतरी के लिए बनायी जाती हैं । धर्मनिरपेक्ष राज्य सभी नागरिकों से एकसमान व्यवहार करता है, चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों । आदर्श स्थिति तो यह होगी कि धर्मनिरपेक्ष राज्य किसी भी धार्मिक समुदाय को कोई मान्यता ही न दे । ऐसा इसलिए क्योंकि मान्यता देने से विभिन्न समुदायों के बीच अधिक से अधिक साम्प्रदायिक अधिकार हासिल करने और सत्ता व राज्य के संसाधनों में अधिक से अधिक हिस्सा प्राप्त करने की प्रतियोगिता प्रारंभ हो जाती है । इससे नागरिकों पर उनके समुदाय का नियंत्रण और कड़ा हो जाता है और उनके अधिकारों व पात्रताओं का आधार उनकी इस या उस समुदाय की सदस्यता बन जाती है । इसी तरह विभिन्न संस्कृतियों व धर्मों के बीच संवाद आवश्यक है ।

धर्मनिरपेक्ष राज्य हवा में पैदा नहीं होता । यद्यपि भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्ष है तथापि भारतीय राज्य सांस्कृतिक इजारेदारों को ताक़त देता आया है । चूंकि किसी भी समाज में बहुसंख्यकों का प्रभाव अधिक होता है अत: वे राष्ट्रीय संसाधनों पर अपने उचित हिस्से से अधिक पर क़ब्ज़ा जमा लेता है । इस तरह की प्रवृत्ति के कई उदाहरण हमारे देश में हैं । जैसे–उच्चतम न्यायालय का यह निर्णय कि हिन्दुत्व, जीवन पद्धति है या गोवध निषेध व धर्मपरिवर्तन विरोधी क़ानून । राज्य का कोई भी निर्णय या कार्य किसी समूहगत पहचान पर आधारित नहीं होना चाहिए । कोई चीज़ इतनी पवित्र नहीं है कि उसकी जांच-पड़ताल ही न की जा सके । परंतु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आस्थावानों की भावना का निरादर किया जाए । हमें तार्किक व विवेकशील दोनों होना चाहिए । धर्म को अक्सर धर्मनिरपेक्षता के लिए ख़तरा बताया जाता है । यह सही नहीं है । धर्म नहीं बल्कि धर्म व धार्मिक संस्थानों का दुरुपयोग करने वाले धर्मनिरपेक्षता के वास्तविक शत्रु हैं ।

साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण क्यों ?

■ राम पुनियानी

हमारे देश में लंबे समय से साम्प्रदायिक हिंसा और साम्प्रदायिक अपराधों का इस्तेमाल धार्मिक ध्रुवीकरण करने के लिए किया जाता रहा है । हालिया लोकसभा चुनाव में, सतही तौर पर देखने पर ऐसा लग सकता है कि मोदी को उनके विकास के एजेंडे ने जीत दिलायी । परंतु सच यह है कि मोदी की जीत की पृष्ठभूमि में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण ही था । इसी ध्रुवीकरण की ख़ातिर नरेन्द्र मोदी ने प्रचार के दौरान अनुच्छेद 370, बंगलादेशी घुसपैठियों और पिंक रिवोल्यूशन आदि की बातें कीं । नतीजे में हुए धार्मिक ध्रुवीकरण ने मोदी की जीत में कितनी भूमिका अदा की, यह कहना मुश्किल है ।

कुल मिलाकर, साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण, साम्प्रदायिक पार्टियों का एक प्रमुख हथियार है । गुजरात में हमने देखा कि किस तरह, गोधरा ट्रेन आगज़नी के बाद हुए साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण ने बड़े पैमाने पर हिंसा भड़कायी, जिसमें मारे जाने वालों में से 80 प्रतिशत मुसलमान थे । इस हिंसा ने ध्रुवीकरण को और गहरा किया और भाजपा सरकार, जो उस समय डगमगा रही थी, बहुमत से सत्ता में वापस आ गयी ।

साम्प्रदायिक हिंसा और ध्रुवीकरण के लिए जिन मुद्दों का इस्तेमाल किया जाता है, वे समय के साथ बदलते रहे हैं । ब्रिटिश काल में मस्जिदों के सामने बैंड बजाना, मस्जिदों में सूअर का मांस और मंदिरों में गाय का मांस फेंकना, दंगे शुरू करवाने के पसंदीदा तरीक़े थे । गोधरा में मुसलमानों को हिंदू कारसेवकों को ज़िंदा जलाने का दोषी ठहराया गया तो मुंबई में बाबरी मस्जिद के ढहाए जाने का उत्सव मनाकर अल्पसंख्यकों को भड़काया गया ।

जहां ये मुद्दे हिंसा शुरू करवाने में मदद करते हैं वहीं लोगों के दिमाग़ों में ज़हर भरने का काम लगातार चलता रहता है । मुस्लिम राजाओं की क्रूरता के क़िस्से बयान किये जाते हैं, यह बताया जाता है कि किस तरह मुसलमान बादशाह, मंदिरों को ज़मींदोज़ किया करते थे और अपनी हिंदू प्रजा पर जिज़्या थोपते थे । यह भी कहा जाता है कि इस्लाम को तलवार की नोंक पर भारत में फैलाया गया ।

इसके अलावा, धारा 370 व मुसलमानों की "तेज़ी से बढ़ती" आबादी आदि जैसे मुद्दों पर भी भड़काऊ और झूठी बातें कही जाती हैं । इतिहासविद् व सामाजिक कार्यकर्ता चाहे लाख कहते रहें कि ये बातें सही नहीं हैं और सच कुछ और है तब भी उनकी कोई नहीं सुनता । केवल कुछ लोग, जो कि दूसरों की बातें आंख मूंदकर मानने में विश्वास नहीं रखते, तार्किकता और सत्य की आवाज़ को सुन पाते हैं । अधिकांश लोग आर॰एस॰एस॰ के अतिप्रभावकारी व शक्तिशाली प्रचार तंत्र के जाल में फंस जाते हैं । आर॰एस॰एस॰ ने पिछले कई दशकों से चले आ रहे अपने दुष्प्रचार के ज़रिये यह सुनिश्चित कर लिया है कि देश के अधिकांश हिंदू, मुसलमानों के बारे में ग़लत धारणाएं पाल लें ।

नोम चोमोस्की ने राज्य द्वारा 'सहमति के निर्माण' की बात कही थी । यहां, हिन्दू राष्ट्रवादी संगठन, 'सामाजिक मान्यताओं' का उत्पादन कर रहे हैं और इन मान्यताओं को

हिन्दू राष्ट्र सेना जैसे संगठन सोशल मीडिया का इस्तेमाल समाज को बांटने के लिए कर रहे हैं । इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी, उसकी अस्ली सोच व इरादे को ज़ाहिर करती है । महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव आसन्न हैं और इस तरह की घटनाओं से भाजपा को वोटों की फ़सल काटने में मदद मिलेगी । यह आवश्यक है कि महाराष्ट्र सरकार चुनावी समीकरणों की परवाह करे बग़ैर विघटनकारी ताक़तों को पूरी तरह से कुचल दे ।

आम लोगों के दिमाग़ों में बिठा रहे हैं । इन मिथकों और ग़लत धारणाओं का इस्तेमाल, धार्मिक ध्रुवीकरण करने और साम्प्रदायिक हिंसा भड़काने के लिए किया जाता रहा है ।

साम्प्रदायिक ताक़तों के हथियारों के ज़खीरे में सोशल मीडिया एक नये व अत्यंत पैने हथियार के रूप में उभरा है । इसकी पहुंच व्यापक है । जहां अख़बार व पत्र-पत्रिकाएं अपने लेखन में कम से कम कुछ संतुलन व परिपक्वता रखते हैं वहीं सोशल मीडिया में कोई भी, कुछ भी लिख सकता है और उसे लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है । मुज़फ़्फ़रनगर में हिंसा भड़काने के लिए मुसलमानों के पारंपरिक परिधान पहने हुए लोगों द्वारा, पाकिस्तान में दो चोरों की पिटाई की वीडियो क्लिप का इस्तेमाल किया गया । ऐसा बताया गया कि यह मुसलमानों द्वारा हिंदू लड़कों को मारने का दृश्य है । बजरंग दल के कार्यकर्ता, हैदराबाद के मंदिरों में गो-मांस फेंकते हुए और कर्नाटक में पाकिस्तान का झंडा फ़हराते हुए पकड़े जा चुके हैं । हिन्दू राष्ट्र सेना जैसे संगठन सोशल मीडिया का इस्तेमाल समाज को बांटने के लिए कर रहे हैं । इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी, उसकी अस्ली सोच व इरादे को ज़ाहिर करती है । महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव आसन्न हैं और इस तरह की घटनाओं से भाजपा को वोटों की फ़सल काटने में मदद मिलेगी । यह आवश्यक है कि महाराष्ट्र सरकार चुनावी समीकरणों की परवाह करे बग़ैर विघटनकारी ताक़तों को पूरी तरह से कुचल दे । इसके साथ ही, विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच आपसी प्रेम व सद्भाव को बढ़ावा देने की ज़रूरत भी है । अल्पसंख्यकों के बारे में ग़लत धारणाओं, मिथकों और पूर्वाग्रहों को दूर किया जाना भी उतना ही ज़रूरी है । यह भी उतना ही आवश्यक है कि हम आमजनों को यह समझाएं कि हमारे देश की विविध संस्कृति और उसके बहुवाद का सम्मान करके ही हम आगे बढ़ सकते हैं ।



दीवाना

■ शीरीं नियाज़ी

कोई उसे बंसी पांडेय कहता था, कोई हैदर अली, कुछ लोगों में वह सिर्फ़ ख़ान नाम से जाना जाता था और कुछेक उसे जोज़फ़ भी कहते थे और मुहल्ले के छोटे बच्चों ने उसे सी॰आई॰डी॰ नाम दे रखा था । मगर उसका सही नाम कोई नहीं जानता था ।

वह जब पहले-पहल इस इलाक़े में आया तो उसके चेहरे पर सेहत और मेहनत की चमक थी और उसका रंग गुलाबी था । उसकी आंखें भूरी चमकदार और अंग्रेज़ों की आंखों की तरह रहस्यमयी थीं । उसकी नाक ईरानियों जैसी थी, क़द पठानों जैसा और लहजा राजस्थानी था ।

वह पानी को ''पाणी' कहता था या सुनने वालों को ''पाणी'' सुनायी देता होगा ।

वह जब पहली बार हमारे दरवाज़े पर आकर खड़ा हुआ था तो हमने उसे एक फ़ौजी सिपाही समझा था क्योंकि उसने वैसे ही कपड़े पहन रखे थे । कुछ लोगों ने यह भी साबित करने की कोशिश की थी कि वह जेल से फ़रार होने वाले आतंकवादियों में से है, जिनके लिए तक़रीबन हर रोज़ रेडियो और टी॰वी॰ पर इनामी ऐलान हो रहे हैं । लेकिन जब किसी तरह उसकी असलियत का पता न लगा तो सारे लोग ये सोचकर अपने घरों में जा बैठे कि वह कोई पागल आदमी है । कई महीनों तक उसकी आवाज़ किसी ने नहीं सुनी थी । वह घंटों हर दरवाज़े पर चुपचाप खड़ा रहता और फिर लौट जाता । औरतें उससे डरने लगी थीं और गर्मियों की दोपहर में अपने-अपने दरवाज़े पर ताला डाले रखती थीं । कभी-कभी होटल वाले उसके हाथ में पकोड़े या सिंघाड़े डाल देते थे तो वह उसे चुपचाप खा लेता था । लेकिन अब उसके चेहरे पर पहले सी चमक नहीं थी । उसके कपड़े मैलें हो गये थे और नाख़ून बढ़ चुके थे । बाल धूल से अट चुके थे । दाढ़ी-मूंछों से चेहरा छिप गया था । अब सचमुच वह पागल नज़र आने लगा था । और धीरे-धीरे उसे पागल और भिखारी जान घर की औरतें पुण्य कमाने के लिए बचे चावल और रोटी दे दिया करती थीं ।

एक दिन वह हमारे दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ और उसने आवाज़ लगायी-

''पाणी पिला, पाणी''।

वह गर्मियों की चिलचिलाती दोपहर थी । ज़मीन तप रही थी । मैंने खिड़की से झांका तो वह हमारे गेट पर माथा टिकाये आधा झुका खड़ा था । गर्मी से उसका चेहरा तप रहा था । पेशानी पर से पसीने की बूंदे पानी की तरह टपक रही थीं । और घर में उस वक़्त मेरे या अम्मा के सिवा कोई न था । अम्मां ने कहा वह शायद प्यासा है । उसे पानी दे दे । प्यासे को पानी पिलाने से पुण्य मिलता है ।

मैं ज़रा झिझकती तो अम्मां ने कहा-ला मैं ही दे देती हूं । ''मगर-बर्तन...मैंने अम्मा की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा तो अम्मां बोलीं-लोटे में दे दो, चुल्लू से पी लेगा''।

लोटे में पानी लेकर अम्मा गयी तो वह अपनी हथेली को घूर रहा था जिस पर चुटकी भर आटा रखा हुआ था ।

तब मैंने अल्यूमीनियम का गिलास निकाला और अम्मां को दे आयी ।

पानी पीकर वह बहुत संतुष्ट नज़र आया । हमारे यहां से लौटते हुए उसने वह आटा सामने से आती एक बकरी को खिला दिया । बकरी उसकी हथेली देर तक चाटती रही । बच्चों ने बताया वह ऐसा की करता है । कोई पकी चीज़ मिल जाए तो वह ख़ुद खा लेता है और कच्चे अनाज गाय-बकरियों को खिला देता है । पैसे मिलें तो किसी और को दे देता है या मंदिर-मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक देता है ।

बहरहाल, उस दिन के बाद वह रोज़ हमारे यहां पानी पीने आने लगा । खाना वह कहीं भी खा ले, पानी यहीं आकर पीता था ।

एक दोपहर उसने हमारे दरवाज़े पर आकर आवाज़ लगाई-''रोटी खिला, रोटी ।

अम्मां ने कहा-मोहर्रम का महीना है, इसे ख़ाली न लौटाओ''। घर में इस वक़्त सिर्फ रुखी रोटी थी । सब्जी सुबह ही ख़त्म हो गयी थी । दो रोटियां मैंने अपने मुर्ग़े के लिए रख छोड़ी थीं । गेहूं के दाने उसे कितने भी खिला दिये

जाएं, तसल्ली नहीं होती थी । और वह मेरे पीछे-पीछे फिरता हुआ पैरों पर चोंच मारता रहता । वहीं रोटियां उठा कर मैं उसे दे आयी । दूसरी तरफ़ मुंह किये-किये ही उसने अपने हाथ पीछे कर दिये थे रोटी के लिए । वह न जाने क्यों आकाश तक रहा था ।

उसने रोटी को देखे बग़ैर ही कहा–मिर्ची ।

मैंने आठ-दस हरी मिर्चें लाकर रोटी पर डाल दीं । बहुत तीखी मिर्चें थी वह ।

और जब उसने डंडी समेत तमाम मिर्चें रोटी के बगैर खाली मुंह में लीं तो मैंने अम्मां की तरफ़ देख कर कहा–''सचमुच पागल है अम्मा''।

उसी दिन हमारी चौथी पड़ोसन ने तीसरी पड़ोसन के सामने यह रहस्योद्घाटन किया था कि वह मुसलमान है ।

''तुम्हें कैसे मालूम यह बात-तीसरी पड़ोसन ने पूछा तो चौथी ने जवाब दिया उसके मुसलमान होने का सबूत मैंने अपनी आंखों से देखा है ।

तीसरी पड़ोसन ने बाद में बड़े रहस्यमयी अंदाज़ में मुझे उसके मुसलमान होने की तफ़सील बतायी थी ।

अम्मा बोलीं–चलो अच्छा हुआ जो उसे रोटी खिलायी।

''क्यों अम्मा, क्या किसी दूसरे मज़हब वाले को रोटी नहीं खिलानी चाहिए, अगर वह भूखा हो ?

''मैं ये तो नहीं कहती, मगर अपने मज़हब वाले को खिलाना ज़्यादा पुण्य का काम है'' ।

मैं अम्मा के जवाब से संतुष्ट नहीं थी इसलिए मैंने इसका जवाब तमाम ग्रंथों में खोजने की कोशिश की मगर मेरे सवाल का जवाब नहीं मिल पाया क्योंकि सबमें अपनी-अपनी अहमियत बतायी गयी थी ।

एक दिन कॉलेज के नवउम्र लड़कों ने उसे चारों तरफ़ से घेर लिया । क्योंकि ज़मीन पर पड़ी धूलों में वह न जाने कैसी उल्टी-सीधी लकीरें खींच रहा था । जो उर्दू भी थी, अंग्रेज़ी भी और हिंदी भी, संस्कृत भी और अरबी भी ।

सबने उससे पूछा–''तुम्हारा नाम क्या है''।

वह कुछ देर तक आकाश तकता रहा , फिर जैसे अपने-आप बोला–''मैं 'ईसा' हूं ।''

नयी नस्ल हा-हा कर हंसने लगी । और एक-दूसरे से बोली–

''इसके लिए अब एक सलीब बनानी होगी'' ।

''मैं मूसा हूं'' ।

नयी नस्ल फिर ताली बजायी–''चलो दोस्तो, हम इसके लिए कोहे-तूर तलाश करें ।

''मैं नानक हूं । मेरे अंदर राम का बास है । - वह अपने-आप बड़बड़ाता जा रहा था ।

और तभी कट्टरपंथियों ने अपने-अपने दरवाज़े खोलकर बाहर झांका । वह दायरे की तरह चारों तरफ़ घूम रहा था और जैसे हवाओं से कह रहा था–''मैं ईसा हूं । मूसा भी हूं । नानक हूं और मेरे अंदर राम बसते हैं'' ।

और तब लोग चारों ओर से उस पर टूट पड़े । सबने मिलकर उसे बुरी तरह पीट डाला था ।

उसके कपड़े तार-तार हो गये थे । उसके माथे से ख़ून बह रहा था । और जब सब लोग थककर एक-दूसरे की तरफ़ देखते और एक-दूसरे से नफ़रत का इज़हार करते हुए अपने-अपने घरों को लौट गये तो उसने ज़मीन से मुटठी भर मिट्टी उठायी और अपने ज़ख़्म पर रख ली ।

दो दिन वह नज़र नहीं आया । मुझे बार-बार उसका ख़याल आ रहा है । बेचारा भूखा होगा । पता नहीं ज़िंदा भी है या...।

''मोहर्रम के महीने में प्यासा न मर जाए । जाने उस कमबख़्त को क्या सूझी थी...अम्मा बड़बड़ाईं ।

तीसरे दिन वह फिर हमारे दरवाज़े पर खड़ा अपने सर के पिछले हिस्से को हमारे लॉन के गेट पर टिकाए आकाश में कुछ ढूंढ़ रहा था । उसकी हथेलियां गेट के जाल के अंदर से होती हुई हमारे दरवाज़े की ओर फैली हुई थीं ।

अम्मा ने पानी का गिलास भर कर गेट के खंभे पर रख दिया । उसने जल्दी से पानी का गिलास उठाया और एक ही सांस में पी गया । मगर पानी पीकर उसने एक बार फिर पानी का गिलास आगे कर दिया । इसका मतलब उसे और पानी चाहिए था । अम्मा इस बार बड़े लोटे में पानी ले आयी । वह पानी पीता गया और गिलास सीधा रखता गया ।

उस दिन उसने पूरे बारह गिलास पानी पिया था ।

मैंने पूरे तीन दिन की छह रोटियां और एक मुट्ठी मिर्ची उसकी हथेली पर रख दीं ।

उसके बाद वह फिर कई महीने ग़ायब रहा । अम्मा हर रोज़ उसके बारे पूछा करतीं । मैंने पहले कई दिनों तक रोटियां जमा रखीं । फिर जब वह न आया तो पड़ोसी की गाय को सारी रोटियां दे आयी ।

उन दिनों सारे माहौल पर तनाव की चादर फैली हुई

थी । पड़ोसी एक-दूसरे से डरे-डरे या एक-दूसरे से लड़ने को तैयार नज़र आते थे । जगह-जगह दंगे-फ़साद हो रहे थे । उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम हर तरफ़ से गर्म हवा के थपेड़े आ रहे थे । एक पड़ोसी ने दूसरे पड़ोसी से आंखें मिला कर बात करना छोड़ दिया था । कुछ लोगों के क्वार्टर ख़ाली थे क्योंकि वे लोग अपने गांव गये हुए थे । बच्चों की छुट्टियां थीं, स्कूल-कॉलेज बंद थे ।

कई महीने गुज़र गये । हर रोज़ अख़बारों के पन्ने कहीं न कहीं फ़साद की ख़बर से भरे होते थे । सांप्रदायिक तत्वों की सांप्रदायिकता बढ़ती जा रही थी । मगर आदमी का काम कहां रुकता है । थोड़ी देर को ठहर जाता है । इस तरह स्कूल कॉलेज भी खुल गये ।

और एक दिन वह भी नज़र आ गया । उस दिन जाने क्या सोचकर मैं गेट पर जाकर खड़ी हो गयी । मेरे क़रीब ही अम्मा भी थी । पहली नज़र अम्मा की ही उस पर पड़ी थी । वह अपनी बग़ल में काग़ज़ों का एक पुलिंदा दबाए हुए था । ठीक उसी वक़्त कॉलेज के लड़कों का एक झुंड वहां आ पहुंचा था । कॉलेज हमारे क्वार्टर से कुछ ही दूरी पर था । और कॉलेज के तमाम लड़के-लड़कियां जाते-आते हमारे सामने से ही गुज़रते थे ।

उसे देखकर सारे लड़के उसकी तरफ़ दौड़ पड़े । और बग़ल में दबे पुलिंदे को देखकर चिल्लाए "ख़ान स्कूल पास कर आया । अब कॉलेज जाएगा "। और हंसते-हंसते उससे काग़ज़ों का पुलिंदा छीन लिया ।

अचानक सबकी हंसी रुक गयी । अचानक सन्नाटा हो जाने के कारण महौल अजीब-सा लगने लगा । लड़कों की हंसी का रुकना इतना ताज्जुब करने वाला नहीं था , जितना एक-दूसरे को थरथराते हाथों से वह पन्ने दिखाना ।

मैं ज़रा और आगे बढ़ गयी थी । हमारी दूसरी पड़ोसन ने अपनी खिड़की से झांकने की कोशिश की । और मुझ देखकर फिर अंदर हो गयी । लड़कों ने धीरे-धीरे तमाम पन्ने उसके आगे कर दिये थे ।

उसने उन तमाम पन्नों को संभाला, संभाल कर इकट्ठा किया । उन्हें आंखों से लगाया और फिर बग़ल में दबाकर धीरे-धीरे नदी की तरफ़ जाने लगा । ये वहीं पन्ने थे जो हालिया दंगों में एक-दूसरे से नफ़रत का इज़हार करते हुए फाड़ दिये गये थे–बाइबल, क़ुरआन, गीता और गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ने ।

प्रख्यात बीज गणितज्ञ अबू कामिल शुजाअ

अबू मामिल शुजाअ दुनिया के पहले गणितज्ञ हैं, जिन्होंने 'जब्रोमुक़ाबला' नामक बीज गणित (Algebra) पर एक किताब लिखी और गणित की इस मुख्य शाखा से पूरी दुनिया को पहली बार परिचित कराया । यह बहुत ही विचित्र संयोग है कि जिस साल मुहम्मद बिन मूसा ख़्वारिज़्मी की बग़दाद में मृत्यु हुई, उसी साल इस्लामी जगत के एक दूसरे गणितज्ञ का जन्म हुआ । उनकी सारी उम्र मिस्र में व्यतीत की । उनके ज़माने में मिस्र पर तुलूनियों की हुकूमत ीि, जिसके सुप्रबंध ने इस देश को नवजीवन प्रदान किया था और वहां के वातावरण को ज्ञान-विज्ञान के कार्यों के लिए अनुकूल बना दिया था ।

शुजाअ मिस्री की प्रमुख रचना बीज गणित पर है, जो इस विषय पर ख़्वारिज़्मी की बीज गणित के बाद दुनिया की दूसरी किताब है । यह भी एक वास्तविकता है कि शुजाअ हासिब मिस्री की बीज गणित हर लिहाज़ से ख़्वारिज़्मी के बीज गणित से बढ़कर है । मगर इससे ख़्वारिज़्मी के पद व प्रतिष्ठा में कोई अन्तर नहीं आया, क्योंकि जब शुजाअ हासिब ने बीज गणित की रचना की, तो उसकी रहनुमाई के लिए ख़्वारिज़्मी की बीज गणित उनके सामने मौजूद थी, लेकिन जब ख़्वारिज़्मी ने बीज गणित की रचना की तो उनके सामने इस तरह की कोई रचना मौजूद न थी । ख़्वारिज़्मी के बीज गणित में जो बातें अपूर्ण थीं, उन्हें शुजाअ मिस्री ने अपनी प्रतिभा व महारत से पूरा किया ।

शुजाअ हासिब मिस्री ने यद्यपि बीज गणित की रचना दसवीं सदी में की थी, लेकिन जब उसे बीसवीं सदी की कसौटी पर जांचा-परखा जाता है, तो उसे आधुनिककाल की उच्च गणित में स्थान मिलता है । प्रसिद्ध पश्चिमी गणितज्ञ लेवनार्डो (Leonardo) जो सत्तरहवीं सदी ईसवी में गुज़रा है, इस बीज गणित का प्रशंसक रहा है । शुजाअ हासिब मिस्री की मृत्यु सन 955 ई॰ में मिस्र में हुई और वहीं पर उन्हें दफ़न किया गया ।

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

दीवाली का मतलब दीवाला नहीं !

■ डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव
(नंदनपुरा, झांसी, उ॰प्र॰)

आज इस महंगाई के युग में जब प्रत्येक माह ही कुछ न कुछ खींचातानी लगी रहती है, दीवाली जैसे बड़े और महंगे त्योहार का आना एक समस्या बन जाता है । यदि हम इसे अपने विवेक और समझदारी से न मनाएं तो दीवाली के बाद पश्चाताप के अतिरिक्त हमारे पास कुछ नहीं बचता ।

आज इस कमरतोड़ महंगाई में जब हम अपनी रोज़मर्रा की आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं कर पाते, वहां पैसे को समझदारी से ख़र्च करना अतिआवश्यक हो जाता है । यदि आरंभ से ही अपनाए निश्चित बजट बनाकर पैसे को संयम और समझ-बूझ के साथ ख़र्च किया जाए तो निश्चय ही त्योहार को हम बड़े ही उमंग और उत्साह के साथ मना पाएंगे ।

दीपावली या किसी भी अन्य त्योहार के संदर्भ में मुख्य बात यह है कि अपनी चादर देखकर ही पांव फैलाने चाहिए । दूसरों की देखा-देखी नक़ल की प्रवृत्ति या दिखावे के चक्कर में अपनी हैसियत से अधिक ख़र्च करना बुद्धिमानी नहीं मूर्खता है । यह किसी ने नहीं कहा कि हम उधार लेकर दीवाली मनाएं और अपने घर के पूरे माह का बजट गड़बड़ा दें, जहां तक संभव हो अपने सीमित बजट में ही दीवाली मनाएं ।

त्योहार के दिन आते ही व्यापारी अपनी वस्तुओं का मूल्य आसमान पर पहुंचा देते हैं । अत: जहां तक संभव हो दीवाली की ख़रीदारी दो-एक माह पूर्व ही कर लें । त्योहार को ध्यान में रखते हुए खाने-पीने की चीज़ें भी एक माह पूर्व ही धीरे-धीरे ले आयें । कपड़े आदि भी पहले ही बनवा लें, फिर भी यह आवश्यक नहीं कि दीवाली पर सेवारतजनों को मिला हुआ बोनस नयी-नयी साड़ियां या बच्चों के कपड़ों पर व्यय कर दिया जाए । बोनस की राशि से घर की कोई वस्तु ख़रीदें, जिसका आपके जीवन में विशेष महत्व हो ।

अक्सर हम दीवाली के अवसर पर मित्रों, परिचितों के घर मिठाइयों के डिब्बों और फलों के टोकरों से लदकर ''दीवाली मुबारक'' करने जाते हैं । चूंकि यह दिन मिलने-जुलने वालों का होता है । अनेक लोग घर आते हैं । अत: मित्रों संबंधियों द्वारा उपहारस्वरूप लायी गयी ढेरों मिठाई इकट्ठी हो जाती है, जिसे खाना भी मुश्किल होता है । अत: यह मिठाई कुछ दिन बाद या घर के कूड़ेदान में नज़र आती है । अब आप ही बताएं, ऐसी मिठाई देने से भला क्या फ़ायदा है, जिसका मज़ा भी लेने वाला प्राप्त न कर सके ? इससे तो अच्छा यही है कि दीवाली के मौक़े पर मिठाई आदि के स्थान पर या उसकी मात्रा कम करके कोई ऐसा उपहार दिया जाए, जो लेने वाले के लिए उपयोगी भी हो और लाभदायक भी ।

उपहार के विषय में एक और बात याद रखनी ज़रूरी है । उपहार किसी के भी घर देना हो, दीवाली से एक दिन पूर्व ही देने की कोशिश करें । निश्चय ही इसके दो लाभ हैं । एक तो यह कि दीवाली के दिन आप भी आराम से अपने परिवार व बच्चो के बीच रहकर त्योहार मना सकेंगे और दूसरे यदि उपहार लेने वाले को बदले में आपको कुछ देना हो तो उसे भी त्योहार रहते ही यह अवसर मिल सकेगा ।

हां, उपहार देते समय यह ज़रूर विचार कीजिए कि आपका उपहार लेने वाले के लिए कितना उपयोगी सिद्ध हो पाएगा । उपहार ऐसा होना चाहिए, जिसे दूसरा व्यक्ति उपयोग में ला सके । उपहार केवल अपनी भावनाओं का प्रतीक ही नहीं, अपितु इसका एक व्यावहारिक पक्ष भी है । अनावश्यक व अनुपयोगी वस्तुओं को उपहार में देना एक प्रकार से धन की बर्बादी है । अपने पैसे ख़र्च कर दिये और चीज़ दूसरे के काम नहीं आ सकी तो बताइये, ऐसे उपहार का क्या फ़ायदा ?

किसी भी रिश्तेदार, मित्र, परिचित को उपहार देते समय सैदव एक बात ध्यान रखें कि उपहार आपकी हैसियत के अनुसार हो, बेकार दिखावे के चक्कर में पड़कर कभी भी फ़िज़ूलख़र्ची के शिकार न हों, वरना दीवाली निकलते-निकलते आपका दीवाला ही निकल जाएगा । ध्यान रखें यदि आपका

पर्स पचास रुपये का तोहफ़ा देने की इजाज़त देता है, तो कभी भी सौ रुपये ख़र्च करने का प्रयत्न न करें ।

आजकल महंगाई के युग में मध्यम वर्ग के पास इतना रुपया नहीं होता कि हर किसी को उपहार बांटता रहे । अत: उपहार के बदले में आप भी कोई उपयोगी उपहार ही दें । उपहार मिलने पर उपहार देने वालों को "धन्यवाद" देना न भूलें और उपहार की तारीफ़ भी अवश्य करें ।

ऐसी भी मान्यता है कि दीवाली पर यदि पुताई न कीजिए तो धन-दौलत नहीं रहती । सवाये-ड्योढ़ दाम पर पुताई करवाने से यही अच्छा है, आप यह कार्य दीवाली के कुछ दिन पहले ही करवा लें । जल्दबाज़ी में पुताई न तो अच्छी हो पाती है और मज़दूरी भी अधिक देनी पड़ती है । पुताई का अर्थ घर की सफ़ाई से है, जो हम किसी भी रूप में कर सकते हैं । मात्र घर की पुताई करवा देने से ही कर्तव्यों की इतिश्री नहीं हो जाती ।

अत: सोच-विचार कर, सूझ-बूझ और ज़रा-सी सावधानी के साथ यदि दीवाली की तैयारी कर लें तो दीवाली के बाद घर में प्रकाश ही प्रकाश बिखरेगा, उदासी, मायूसी और पश्चाताप के आंसू नहीं । दीवाली यानी रोशनी, उमंग और उल्लास पर्व । यह भी याद रखिए कि दीवाली का अस्ली मतलब है–"दीपावली" । अत: बिजली के छोटे-छोटे रंग-बिरंगे, असंख्य बल्बों का मोह छोड़कर कुछ सीमित संख्या में ही दीप जलाकर अपना मन संतुष्ट कर लीजिए, क्योंकि ये सजावट करने का धंधा करने वाले हमारे छोटे से मकान को 'स्वप्न महल' में बदलने का प्रलोभन देकर हमारी आंखों को चुंधिया देते हैं ।

दीवाली की रात तो हम अपनी छोटी-सी फुलवारी सी पत्ती में, भिन्न-भिन्न रंगों के बल्बों को देखकर अपने आपको भूले रहते हैं, परंतु जब बिजली का बिल आता है, तो सिर चकरा जाता है । अच्छा यही होगा कि थोड़े से दीप जलाकर उसमें तेल डालने व बत्ती बढ़ाते रहने का काम बच्चों को सौंप दीजिए । आपके बच्चे सारी रात व्यस्त रहेंगे, फुलझड़ी व पटाखे भी कम छुड़ाएंगे ।

दीवाली हो और मिठाई की चर्चा न हो तो बात अधूरी-सी लगती है । त्योहार के दिन भी यह कोई ज़रूरी नहीं कि बाज़ार से आप महंगी मीठाइयां ही लाएं । आजकल बाज़ार की बनी हुई वस्तुओं में मिलावट का अंश अधिक हो गया है । अत: घर पर ही कोई नयी तरह की मिठाई, केक अथवा पूड़ियां बना लें, यह आपकी कुशलता का परिचय तो देता ही है, साथ ही अपने हाथ से बनायी हुई वस्तु को परोसने का आनंद की कुछ अलग होता है । इससे आत्मिक संतोष के साथ-साथ घर का बजट भी नहीं बिगड़ता ।

यह सच है कि दीवाली पूरे वर्ष में केवल एक बार ही आती है । अत: बच्चों में भी पटाखों के लिए अतिरिक्त उत्साह रहता है, बच्चों के लिए यह पर्व विशेष महत्व का होता है । उनकी खुशियों में आपका सहयोग अनिवार्य है । आप उनके साथ मिलकर त्योहार मनाएं । यदि वे ज़िद करें कि पटाखे, बम, फुलझड़ियां आदि चलाने का तो इन्कार न करें । हां, इतना अवश्य ख़्याल रखें कि इसके लिए जगह खुली हो, यदि घर के आस-पास कोई ख़ाली भूखण्ड या खुला मैदान हो तो उसे ही इस काम के लिए प्रयोग में लाएं ।

दीवाली खुशियां लेकर आती है । मुसीबतों या बाद में पछताने के लिए नहीं आती । बच्चों को उम्र के हिसाब से ही पटाखे दिलाएं । इस महंगाई में ढेरों रुपयों के बदले थोड़े से पटाखे आते हैं, जो कुछ ही समय में जलकर राख हो जाते हैं ।

दीवाली एक धूम-धड़ाके वाला त्योहार है, किंतु सरकार अक्सर धूम की आज्ञा देती है और धड़ाकों पर प्रतिबंध लगा देती है । कहा जाता है कि तेज़ आवाज़ वाले पटाखे न छुड़ाये जाएं । बाहर तो यह धूम-धड़ाका होता है और घर के अंदर लक्ष्मी पूजन । यह भी एक अनिवार्य रस्म है, जिसे हर कोई पूरा करता है । इसके लिए एक चांदी का रुपया (चांदी का सिक्का) रखना होता है । हमारे एक परिचित प्रत्येक दीवाली पर चार चांदी के सिक्के ख़रीदते हैं, ऐसा वह किसी रूढ़िवादी परंपरा की वजह से नहीं, बल्कि बचत और संग्रह शौक़ की वजह से करते हैं । ज़ाहिर है, यह "लक्ष्मी" आड़े वक़्त काफ़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है ।

अक्सर लोग त्योहार बीत जाने के बाद उसके अच्छे-बुरे पक्षों को भूलकर अपने दैनिक कार्यों में पुन: व्यस्त हो जाते हैं, दीवाली के बाद आप अपने अनुभवों को मित्रों, संबंधियों को अवश्य लिखें और उनके अनुभव जानने का आग्रह करें । यह प्रयोग निस्संदेह आपको एक नयी प्रेरणा देगा ।

निरंकुश और घमंडी बनाता पैसा और सत्ता

❖ सी॰ के॰ रहमानी

ख़बर आयी कि हरियाणा के कैथल में मोदी के कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की और मोदी की ही मौजूदगी में झारखंड में मुख्यमंत्री सीबू सोरेन की हूटिंग की गयी । हूटिंग किसने की ? ज़ाहिर है भाजपा और संघ के लोगों ने की होगी । हूटिंग का मामला हो या उत्तर प्रदेश में दंगों का, भाजपा कार्यकर्ता और संघ के लोग इस समय अतिउत्साह और निरंकुशता की ओर बढ़ते प्रतीत हो रहे हैं ।

इस बात में शक है कि हूटिंग और दंगों में मोदी की भूमिका होगी क्योंकि अतीत में मोदी ने क्या किया या क्या नहीं किया ऐसे सवाल ज़रूर उठते रहे हैं लेकिन कम से कम इस समय मोदी ने न तो हूटिंग के लिए कहा होगा और दंगों में शह दी होगी, क्योंकि इस समय वे न भाजपा के प्रधानमंत्री हैं, न संघ के, न विहिप के, न हिंदू दल के, न शिव सेना और बजरंग दल के ।

इस समय वह पूरे देश के प्रधानमंत्री हैं इसलिए राजधर्म का पालन करना उनका नैतिक दायित्व भी है । और ऐसा वे कर भी रहे हैं, क्योंकि जब से वह प्रधानमंत्री बने हैं तब से उन्होंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया जो संघीय ढांचे के विरुद्ध हो । अब शायद उनको यह एहसास है कि 'मुखिया मुख सौ चाहिए खान-पान में एक, पाले पोसे सकल अंग तुलसी सहित विवेक' । यानी अब वे देश के मुखिया हैं इसलिए हर वर्ग जाति समुदाय की रक्षा करना और उनका पालन-पोषण यानी उनके विकास की तमाम ज़िम्मेदारी उनकी है ।

उन्होंने लालक़िले की प्राचीर से स्वाधीनता दिवस को खुद कहा कि बहुत हो लिए दंगे, लेकिन उससे क्या मिला । कम से कम दस साल तक दंगे न हो तो देश विकास की राह पकड़ेगा । सवाल यह है कि जब प्रधानमंत्री ऐसा कुछ नहीं चाह रहे तो हूटिंग कौन कर रहा है । कौन है जो कथित लव जिहाद के नाम पर उ॰प्र॰ में वैमनस्यता फैलाने की कोशिश कर रहा है । कौन है जो छोटी-छोटी बातों को सांप्रदायिक रंग दे रहा है । बात-बात पर हिंदू-मुसलमान कर रहा है । दरअस्ल यह ज़्यादातर देखने में आया है कि जहां लोगों को सत्ता या ताक़त का एहसास होने लगता है उनमें निरंकुशता और अतिउत्साह बढ़ जाता है । चाहे वह नवधनाढ्यों का मामला हो, चाहे किसी समूह का ।

यहां एक बारात तक का उदाहरण दिया जा सकता है । तब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता से जुड़े लोगों में भी ऐसा होना स्वाभाविक है । बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिन पर सत्ता-पद का असर नहीं होता । सत्ता पाकर भी वैसे ही रहते हैं और जब उन पर सत्ता-पद नहीं रहता तब भी कोई असर नहीं होता । तुलसीदास ने रामचरित मानस में इस बात का उल्लेख भी किया । लिखा है 'नहिं कोई अस जनमा जग माहीं, प्रभुता पाय ताहि मद नाहिं' । यानी दुनिया में ऐसा कोई शख़्स नहीं है जिसे प्रभुता पाकर घमंड न हो । प्रभुता किसी की भी तरह की हो सकती है जिसमें धन, पद, ताक़त, सत्ता आदि शामिल है ।

जब बारात जाती है तो बाराती निरंकुश हो जाते हैं । ऐसा करने के लिए कोई दूल्हे का बाप थोड़े ही कहता है लेकिन फिर भी वे हुड़दंग करते हैं । कई बार किसी रेहड़ी वाले के पैसे तक नहीं देते, पूरी सड़क घेर चलते हैं । लोगों को रास्ता नहीं देते, क्योंकि उस समय वे समूह में होते हैं इसलिए खुद को ताक़तवर महसूस करते हैं ।

इसी तरह जब कांवड़िये आते-जाते हैं तो वह पूरी तरह निरंकुश और उद्दंड हो जाते हैं । क़ानून उनके ठेंगे पर होता है । लोगों के साथ मारपीट करते हैं । सड़क घेर लेते हैं, रास्ता नहीं देते और लड़ने का बहाना ढूंढ़ते रहते हैं । डेक से श्रद्धा को कोई लेना-देना नहीं लेकिन कान के परदे फाड़ने वाला शोर मचाते हैं । उस समय वे खुद को 'प्रभुता' से संपन्न महसूस करने लगते हैं । उस समय धर्म उनका रक्षा कवच का काम करता है । हालांकि धर्म उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहता है लेकिन वे ऐसा करते हैं यहां तक कि प्रशासन को सख़्ती करनी पड़ती है ।

इसी तरह नवधनाढ्य लोगों का हाल है । जिन लोगों ने

नया-नया पैसा देखा है या जो नये-नये मालदार हुए हैं उनका भी ऐसा ही हाल है । ये वे लोग हैं जो पानी का पप्पा कहते हैं । इन्हीं लोगों के बेटे बाइक लेकर सड़कों पर कोहराम मचाते हैं । बाइक में अलग से हॉर्न लगाकर लोगों का चलना-फिरना हराम कर रहे हैं । इनका नैतिकता, सामाजिक मूल्यों से, संस्कारों और बड़े-छोटे से कोई वास्ता नहीं होता । उनके लिए हुड़दंग मचाना ही लक्ष्य और संस्कार हैं ! यह सब 'प्रभुता' का मामला है ।

जब से भाजपा सत्ता में आयी है तब से हिंदुत्ववादी शक्तियां उत्साहित हैं । अब तक जो उनके अंदर जो कुंठा थी उसे निकाल रहे हैं । कुछ उदाहरण हमारे सामने हैं । उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ ज़िला के एक गांव में 70 ईसाइयों का फिर हिंदू हो जाने का मामला हो या फिर शिरडी के साईं बाबा को लेकर हो हल्ला हो । अब मंदिरों से शिरडी के साईं बाबा की मूर्ति यह कहकर हटायी जा रही है कि साईं बाबा मुसलमान थे और उनका नाम चांद था । ओम नाम के बाबा टी०वी० पर उनकी मां को वेश्या बता रहे हैं ! यही बाबा एक साध्वी को कह रहे थे कि मेरा मुंह मत खोलवा, नहीं तो यहां से भागेगी तो रास्ता नहीं मिलेगा । यह अति उत्साह, उद्दंडता और निरंकुशता का संस्कार है ।

जब से भाजपा सत्ता में आयी है तब से हिंदुत्ववादी शक्तियां उत्साहित हैं । अब तक जो उनके अंदर जो कुंठा थी उसे निकाल रहे हैं । कुछ उदाहरण हमारे सामने हैं । उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ ज़िला के एक गांव में 70 ईसाइयों का फिर हिंदू हो जाने का मामला हो या फिर शिरडी के साईं बाबा को लेकर हो हल्ला हो । अब मंदिरों से शिरडी के साईं बाबा की मूर्ति यह कहकर हटायी जा रही है कि साईं बाबा मुसलमान थे और उनका नाम चांद था । ओम नाम के बाबा टी०वी० पर उनकी मां को वेश्या बता रहे हैं ! यही बाबा एक साध्वी को कह रहे थे कि मेरा मुंह मत खोलवा, नहीं तो यहां से भागेगी तो रास्ता नहीं मिलेगा । यह अति उत्साह, उद्दंडता और निरंकुशता का संस्कार है ।

ये लोग इतने मद में हैं कि लोगों की आस्था पर भी रोक लगाने की कोशिश कर रहे हैं । यह हाल तब है जब साईं बाबा के भक्त हिंदू अधिक हैं । साईं बाबा के भक्तों में मुसलमानों की संख्या न के बराबर है । इसका एक कारण यह है कि मुसलमानों में मूर्ति पूजा निषेध है ।

राम मंदिर मुद्दा मृत प्राय: है, उसकी हवा निकल चुकी है । अब क्या किया जाए ? तो निरंकुश तत्वों ने दूर की कौड़ी ढूंढ़ निकाली है । उन्होंने स्थायी मुद्दा ढूंढ़ निकाला है, जिसका नाम 'लव जिहाद' है । यह मुद्दा भी भावनात्मक के साथ-साथ इज़्ज़त और शान के साथ जोड़ दिया है ताकि विद्वेष की भावना बलवती रहे और हिंदू मुसलमानों के बीच तनाव तथा नफ़रत की फ़ज़ा बनी रहे । इससे संघ परिवार जैसे संगठनों की मनोकामना पूरी होने में मदद मिलेगी ।

यह अलग बात है कि संघीय ढांचे को ख़तरा पैदा हो सकता है । देश की अखंडता और विकास निश्चित तौर पर प्रभावित होगा । भले ही इन सब खुराफ़ात के लिए मोदी सीधे दोषी न हो लेकिन देश का मुखिया होने के नाते वे इस ज़िम्मेदारी से बच भी नहीं सकते । इन सब बातों को रोकना उनकी ज़िम्मेदारी है । जिन संगीत सोम को मुज़फ़्फ़रनगर दंगे कराने का सीधे दोषी माना जा रहा है, उन्हें ज़ेड प्लस श्रेणी की सुरक्षा प्रदान करना मोदी सरकार और नियोक्ताओं पर शक ज़रूर पैदा करता है ।

शान्ति और प्रेम का सन्देश

■ इन्तिज़ार नईम

भारत अपनी व्यापकता, अत्यधिक आबादी और अनेक पहलुओं से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध है । लेकिन विभिन्न धर्मों एवं सभ्यताओं के प्राचीन स्रोत की हैसियत से भी हर ओर इसकी चर्चा है । यहां के सूफ़ी-संतों ने अपने मुहब्बत के संदेश और प्रेमवाणी के माध्यम से देश के कोने-कोने में जो अम्न व शांति का संदेश आम किया उसको भी दुनिया में बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

अफ़सोस कि डेढ़ सौ वर्षों तक भारत पर राज करने वाले अंग्रेज़ों को केवल हमारे देश के धन-संपत्ति को हड़पने की हवस रही । भारत की महानता, प्रसिद्धि और श्रेष्ठ परंपराओं से उसे कोई दिलचस्पी नहीं रही । बल्कि उन्होंने इस देश के नागरिकों के बीच आपसी मतभेद और बिगाड़ का वातावरण पैदा किया । यहां तक कि 1947 में यहां से जाते-जाते इसके नागरिकों के बीच घृणा, द्वेष और दुश्मनी का ऐसा वातावरण छोड़ गये जिसके घातक प्रभाव और परिणाम में हम बार-बार फंसते रहते हैं ।

इसकी बदतरीन शक्ल आज़ादी से लेकर आज तक होने वाले दंगे हैं । ये दंगे कभी भाषा के आधार पर, कभी राज्यों की सीमाओं के नाम पर, कभी विभिन्न राज्यों के लोगों के बीच आपसी मतभेद के आधार पर, कभी आरक्षण और मंडल के नाम पर, कभी ऊंची जाति और नीची जाति से जुड़े होने के कारण, कभी मस्जिद और मंदिर की समस्याओं को लेकर, कभी सिख बिरादरी से संबंध और हिन्दू क़ौम के नाम पर, कभी दो समुदायों के बीच दूरी पैदा करके राजनीतिक हित साधने के उद्देश्य से, अक्सर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच लगातार होते रहे हैं । दंगों के इस लंबे सिलसिले के संबंध में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण सवालात हैं, जो प्रत्येक भारतीय नागरिक को सोच-विचार करने को बाध्य करते हैं ।

नग़मा-ए अम्नो मुहब्बत

आओ सब मिलकर फैलाएं, अम्नो मुहब्बत का पैग़ाम
अम्नो मुहब्बत ही से होगी, सुब्ह मुनव्वर रंगीं शाम

मशरिक़ मग़रिब मुश्किल में हैं, बुग़्ज़ो अदावत नफ़रत से
सौ तूफ़ां हर साहिल में हैं, बुग़्ज़ो अदावत नफ़रत से
कैसा किया अपने ही हाथों इन्सां ने अपना अन्जाम

शहरों शहरों उठते शोले, बस्ती बस्ती चीख़ पुकार
माएं बहनें, बच्चे बूढ़े, झेल रहे हैं दर्द की मार
जहां भी ढूंढ़ें कहीं नहीं है, राहत का तस्कीन का नाम

आओ सोचें आख़िर क्यों है अम्नो मुहब्बत का फ़ुक़दान
आओ सोचें क्यों हर दिल की दुनिया लगती है वीरान
आओ सोचें क्यों हर रूह में बरपा है जैसे कुहराम

आओ सोचें छूट गयी क्यों हम से रिवायत सदियों की
आओ सोचें ख़त्म हुई क्यों रस्मे मुहब्बत सदियों की
आओ सोचें क्यों भूले हम काबा काशी का पैग़ाम

एक ख़ुदा के हम बन्दे हैं, सब हैं आदम की औलाद
सबकी रगों में एक लहू है, कोई कहीं भी हो आबाद
उतनी रहमत होगी जितनी होगी यह सच्चाई आम

आओ अब यह अह्द करें हम अम्न का मौसम लाएंगे
प्यार के नग़मे, गीत मुहब्बत के लिक्खेंगे गाएंगे
सारे जहां में करते रहेंगे रौशन हिन्दुस्तान का नाम

■ इन्तिज़ार नईम

1. क्या दंगों की आग भड़काने वाले और एक-दूसरे को उसमें झोंक कर उन्हें ख़ाक कर देने वाले एक ही अल्लाह के बन्दे, और एक ही इन्सान हज़रत आदम (अलैहि॰) की संतान होने के नाते आपस में बेहद क़रीबी संबंध नहीं रखते हैं ? यदि रखते हैं तो वे अपने पारिवारिक संबंध को स्वयं ही छिन्न-भिन्न क्यों कर दिया करते हैं ?

2. क्या इन दंगों में भाग लेने वाले सभी लोग एक ही देश भारत के नागरिक नहीं हैं ? यदि हैं तो आख़िर वे देशवासी होने के इस रिश्ते को अपने ही हाथों क्यों तार-तार कर देते हैं ।

3. दंगों में दूसरों की दुकानों, घरों को तबाह व बर्बाद करने और वहां रहने वालों को ज़िन्दा जला देने वाले क्या आमतौर पर अपनी ही आबादी और पड़ोस के लोग नहीं होते ? यदि होते हैं तो उनका सदियों का प्रेम और अपनापन का भाव क्षण भर में बर्बरता और दरिन्दगी में किस तरह बदल जाता है ?

4. क्या दंगों के दौरान हमेशा यही होता है कि किसी एक समुदाय या गिरोह का ही नुक़सान होता है ? यदि ऐसा नहीं होता और आमतौर पर इन्सानों की अपने हाथों लायी हुई तबाही में उसके ज़िम्मेदार लोग भी कुछ न कुछ मुतास्सिर होते हैं तो फिर लोग अपने हाथों ख़ुद को क्यों तबाह करते हैं ? क्या किसी सभ्य और शिक्षित समाज को यह बात शोभा देती है कि वे अपने बीच के मतभेद को दूर करने के लिए इस तरह के फ़िल्ले व फ़साद के तरीक़े अपनाएं ? क्या हम अपने आपसी मतभेद को दूर करने के लिए समझने व समझाने का तरीक़ा नहीं अपना सकते ? और ठंडे दिलो-दिमाग़ से समस्याओं का विश्लेषण करके उनका हल नहीं ढूंढ़ सकते ?

दंगे चाहे किसी नवैयत के हों, किसी ढंग से बरपा किये गये हों, उनसे कुछ लोग ही प्रभावित नहीं होते, बल्कि कभी-कभी तो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को अत्यधिक नुक़सान पहुंचता और दुनिया भर में देश और उसका सम्मान प्रभावित होता है । उसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लग जाता है जो बहुत कोशिशों के बाद भी धुल नहीं पाता ।

परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले इन प्रश्नों पर गंभीरतापूर्वक सोच-विचार से यही बात समझ में आती है कि सामयिक भावनाओं में बहकर इन्सान को ऐसा कृत्य नहीं करना चाहिए जो उसके विभिन्न क़ौमों, समुदायों, समाजों और बिरादरियों में रहने के बावजूद उसके मूल मानवीय रिश्तों और सामाजिक भाईचारे और प्रेम के संबंध में बिगाड़ पैदा कर दे ।

इसके विपरीत समाज और देश में मुहब्बत और ख़ैरख़ाही का तक़ाज़ा है कि हम आम इन्सानों से अपने रिश्ते और ताल्लुक़ के महत्व को पहचानें । यदि हमें अपने पड़ोसियों और देशवासियों के सिलसिले में कोई बदगुमानी है तो उसको समाप्त करें, इन्सानों से मुहब्बत और उनकी सेवा को अपने जीवन का हिस्सा बना लें । प्रेम को इतना आम करें कि घृणा और द्वेष की भावना को कहीं पनाह न मिल सके । वातावरण में इतनी खुशगवारी भर दें कि नाखुशगवारियां नापैद हो जाएं और उन सबके नतीजे में समाज और वातावरण में शांति व प्रेम की सुकून देने वाली बयार बहने लगे, जिनसे हमारी आत्माएं सुगंधित हो उठें, देश की प्रगति एवं विकास को चार चांद लग सकें और इस तरह हम अपने ख़ालिक़, मालिक और पालनहार की ख़ुशनूदी हासिल कर सकें ।



दिनकर काव्य में विद्रोह स्वर

■ डॉ॰ अमरसिंह वधान

इसमें शायद ही किसी को संदेह हो कि परिवेशगत प्रतिकूल स्थितियों एवं व्यवस्थागत अप्राकृकि हालातों की सबसे पहले परख-पहचान करने वाला और इनका निर्भीकता से विरोध करने वाला वही व्यक्ति होता है जो चेतना एवं संवेदन संपन्न सृजनात्मक आयामों से जुड़ा हो । अमानवीय स्थितियों के विरुद्ध उसके विद्रोह का उद्घोष मौलिक रूप में मानवीय होता है जो गल-सड़ चुकी परंपराओं, मर्यादाओं, खोखले आदर्शों, रीतियों, अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण एवं स्तरहीन सत्तातंत्र के प्रति व्यापक चेतना जाग्रत करता है । यहां स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि विद्रोह और क्रांति में अन्तर है । क्रांति, दरअस्ल विद्रोह से आगे की चीज़ है, जो किन्हीं निश्चित सिद्धांतों एवं योजनाओं पर आधृत व्यापक परिवर्तन तथा जीवन दर्शन को अपने में समाहित किये रहती है । क्रांति सर्वदा नयी सरकार बनाती है । इस संदर्भ में 1789 की फ्रांसीसी राज्य क्रांति एवं 1917 की बोल्शेविक राज्य क्रांति को देखा जा सकता है । इनमें प्रथम ने पूंजीवादी जनतंत्र की सृष्टि की और दूसरी ने एकदलीय तानाशाही क़ायम की ।

लेकिन विद्रोह में अस्वीकार की भावना एवं नये जीवन मूल्यों की स्थापना का रचनात्मक दृष्टिकोण विद्यमान रहता है । एक कालखंड की विशिष्ट सक्रियता के रूप में यह संघर्ष चेतना को रूपायित करता है और जड़ स्थापित मूल्यों को विस्थापित करता हुआ नयी मानसिकता के लिए भूमि तैयार करता है । विद्रोही का मनोविज्ञान सब कुछ को त्यागने का, किसी भी चमत्कारी सुविधा को अस्वीकार करने का और किसी बिन्दु पर भी समझौता न करने का होता है । वह केवल अपनी शर्तों पर अडिग रहना जानता है और उसके लिए जय-पराजय उतनी अहमियत नहीं रखते जितनी उनके स्वरघोष से उत्पन्न प्रतिध्वनि । यह भी कि विद्रोह सुधारवादी नहीं होता, वह तो संशोधनवादी और परिवर्द्धनवादी होता है । वह अपनी संपूर्ण प्रकृति से व्यवस्था के प्रति उग्र होता है और यह उग्रता कर्म और चिंतन क्षेत्रों में एक नयी दृष्टि को जन्म देती है । कामू ने ठीक ही कहा है कि लेखक को क्रांतिकारी नहीं, विद्रोही बनना चाहिए, क्योंकि सरकार बनते ही क्रांतिकारी लेखक सरकार का प्रचारक बन जाता है, लेकिन लेखक ऐसा नहीं करता । कामू के 'द रिबेल' में विद्रोह की ज्यामिति का तलस्पर्शी वर्णन किया गया है ।

ग़ौरतलब है कि आधुनिक भारतीय साहित्य, विशेषकर हिन्दी साहित्य, की एक प्रखर प्रवृत्ति विद्रोह की रही है और कबीर को इस प्रवृत्ति का जनक मानने में कोई संकोच भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि मध्यकाल में रहते हुए भी उनकी दृष्टि और सोच आधुनिक थी । आश्चर्य नहीं कि उनके विद्रोह के कारण तत्व और आंचमयी तेवर समकालीन हिन्दी कविता के विद्रोह कवियों की बीज भूमि एवं प्रेरणा पुंज बनते हैं । फिर रामधारी सिंह दिनकर इस विद्रोही प्रवृत्ति से कैसे अछूते रह सकते हैं, भले ही उन पर तिलक, इक़बाल, कार्ल मार्क्स, लॉक, रूसो और वाल्टेयर के विचारों का अलग गहरा प्रभाव पड़ा है । इसमें भी कोई अचरज नहीं कि आधुनिक युग में विद्रोह की कर्मशीलता को कार्ल मार्क्स के चिंतन ने एक वैचारिक आधार देकर सुदृढ़ भूमि प्रदान की और अब तक जो शक्तियां वर्ग-भेद के विरुद्ध बिना किसी मज़बूत आधार के लड़ रही थीं, उन्हें एक नवीन दृष्टि मिली । नतीजे के तौर पर एक शोषक जीवन पद्धति का विकल्प समानतावादी जीवन पद्धति में उभरकर सामने आया । माना कि दिनकर मार्क्सवादी कवि नहीं हैं, लेकिन उनकी 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'अतीत के द्वार पर', 'नीम के पत्ते', 'रेणुका', 'कविता की पुकार', 'तांडव', 'हाहाकार', 'विपथगा', 'सामधेनी', 'धूप और धुआं', 'रश्मिरथी' आदि काव्य रचनाओं में विद्रोह स्वर की उद्घोषणा की आंच में मार्क्स का वैचारिक प्रभाव तो है ही । एक विवेकशील कोण से देखें तो द्वंद्व, संघर्ष और विद्रोह दिनकर की रचनाधर्मी चेतना के अभिन्न अंग रहे हैं । इसीलिए वे सफलतापूर्वक विद्रोह की चिंगारियों को

अपनी काव्य कृतियों में चित्रित कर सके । उनके प्रारंभिक दौर की रचनाओं में 'रेणुका', 'हुंकार', 'द्वंद्वगीत' और 'सामधेनी' विद्रोही चेतना का आह्वान करने वाली काव्य कृतियां हैं । 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' प्रबंध काव्यों में भी इसी चेतना की प्रौढ़तम अभिव्यक्ति हुई है । उनके विद्रोही स्वर का चरम निदर्शन 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक लंबी कविता में हुआ है । यह सही है कि दिनकर की विद्रोही चेतना विश्वजनीय महान क्रांतिकारी विचारकों से प्रभावित हुई है, किंतु वे परिवेश के प्रति सदैव जागरूक रहे और विद्रोह का स्वर बुलंद करते रहे । उनके मन में पददलित वर्ग का निर्मम शोषण देखकर विद्रोह की ज्वाला धधकती रही और वे निर्भय होकर तानाशाही राजसत्ता, साम्राज्यवादी, फस्टिवादी और राजतंत्रीय जनविरोधी राजनीतिक विचारधाराओं का विरोध करते रहे ।

दिनकर के लिए धर्म एक व्यापक मानव हितकारी धारणा के रूप में रहा है । जहां कहीं भी धर्म की इस धारणा का खंडन हुआ है, वहीं कवि का स्वर आक्रोशपूर्ण मुद्रा धारण कर लेता है । एक अन्य अर्थ में दिनकर काव्य में विद्रोही चेतना के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य उन्हें एक विद्रोही रचना दृष्टि वाले कवि के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं । सन 1962 में भारत पर हुए चीनी आक्रमण के प्रतिरोध में रचित 'परशुराम की प्रतीक्षा' उनकी विद्रोही चेतना का ज्वलंत प्रमाण है–

है एक हाथ में परशु, एक में कुश है,
आ रहा नये भारत का भाग्यपुरुष है,
जो संत धर्म के लिए खड्ग धरता है ।

सच तो यह है कि दिनकर के हृदय में एक साथ उत्तर और दक्षिण ध्रुव वास करते हैं और आत्मा में चल रही ऋतु के अनुसार वे इस या उस ध्रुव से बोलते हैं । उनकी 'हुंकार' युग की आवाज़ है, सिंहगर्जन है और है तपतपाती ललकार भी । यह काव्य रचना एक ऐसी भीषण और शुद्ध अग्नि थी, जिसमें उदात्त विषमताएं, विसंगतियां और विषम-वस्तुएं सहज ही उस लपट में हवन हो गयी । दिनकर की विद्रोह भावना के मूल में धरती की पुकार ज़्यादा प्रभावकारी है । उनकी हर नयी विद्रोही कविता का प्रकाशन एक जीवित बम विस्फोट सिद्ध होता था । यहां बताना ज़रूरी है कि इक़बाल की विप्लमयी हलचल ने दिनकर की युवा चेतना को गहराई तक प्रभावित किया था । 'रेणुका' और 'हुंकार' को पढ़कर लोगों ने दिनकर को देशभक्त और विद्रोही कहा । लेकिन सच्चाई यह है कि दिनकर एक कवि के रूप में दो अलग-अलग अन्तर्विरोधों से अपना आक्रोश व्यक्त कर रहे थे । 'हुंकार' की प्रत्येक रचना तो ऐसी लगती है, मानो विद्रोह की आग से लिखी गयी हो । दिनकर स्वयं अपने विद्रोही व्यक्तित्व का परिचय इस प्रकार देते हैं–

सुनूं क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा,
स्वयं युग धर्म का हुंकार हूं मैं,
कठिन निर्घोष हूं भीषण अशांति का,
प्रलय गाण्डीव की टंकार हूं मैं,
दबी-सी आग हूं भीषण क्षुधा की,
दलित का मौन हाहाकार हूं मैं,
सजग संसार तू निज को संभाले,
प्रलय का क्षुब्ध पारावार हूं मैं ।

लेनिन, एलेन गिंसबर्ग, ग्रेगोरी कोर्सो, केरुवाक, फिलिप लेमंडिया, माइक मैकल्यूर, लारेंस फलिंगेट्टी, निराला और मुक्ति बोध की तरह दिनकर का प्रश्न है कि क्या न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए विद्रोही बनना कोई पाप है ? अपने प्रति अन्याय करने वाले शासकों का विरोध शोषितों को करना ही चाहिए । कवि अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध विद्रोह को ज़रूरी मानते हैं और शोषित वर्ग को सक्रिय विद्रोह में भाग लेने की प्रेरणा देते हैं । आर्थिक-विषमता की गहरी एवं चौड़ी खाई को देखकर दिनकर शांत नहीं रहते हैं । उन्हें मालूम है कि पूंजीपति एक साथ मिलकर सर्वहारा का भयंकर शोषण कर रहे हैं ।

कवि का विश्वास है कि पूंजीपति वर्ग के अहंकार के प्रति जो घृणा की ज्वाला सर्वहारा के मन में सुलग रही है, उसके विद्रोह की लपटों में परिवर्तित होने में अधिक समय नहीं लगेगा । स्वभावतः विद्रोही होने के कारण कवि आर्थिक विद्रोह का स्वागत करता है जो उनकी कविताओं में तीन रूपों में प्रकट होता है–एक, दलित-शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति के रूप में, जो उनके आक्रोशमय चित्रण द्वारा प्रकट होता है, दूसरा, पूंजीपतियों के प्रति कवि के क्रोध के रूप में, और तीसरा, समता के अभिलाषी होकर विद्रोह का आह्वान करने तथा आदर्श समाज का निर्माण करने में प्रकट हुआ है । कवि अपने आक्रोश में दानव, पिशाच आदि नामों

से उनको अभिहित करके पूंजीपतियों की भर्त्सना करते हैं। आर्थिक समानता के लिए कवि वर्ग-संघर्ष तथा विद्रोह ज्वाला को अनिवार्य मानते हैं। स्पष्ट है कि मार्क्स का प्रारंभिक साम्यवाद कवि को भी मान्य है। कवि आगे राय देते हैं कि अगर विनय से काम नहीं चलता है तो शस्त्र से भी काम लेने के लिए वे तैयार हैं। अनीति पर स्थित शांति की अपेक्षा वे विद्रोह को श्रेष्ठतर मानते हैं, जो पूर्ण रूप से अनीति का नाश कर देता है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' में कवि इस बात पर दृढ़ है–

स्वेच्छा से जो न्याय नहीं देता है, उसको
एक रोज़ आख़िर सब कुछ देना पड़ता है।

एक बड़ा सच यह भी है विश्व साहित्य में विद्रोह पर जितनी कविताएं हैं, दिनकर की 'विपथगा' उनमें से किसी के भी समकक्ष आदर का स्थान पाने की योग्यता रखती है, यद्यपि 'दिगंबरि', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रेणुका', 'हुंकार' आदि काव्य रचनाएं विद्रोह जय यात्रा की शिखर रचनाएं हैं। कारण यह है कि दिनकर की संवेदना समकालीन परिवेश से संयुक्त है और प्राचीन एवं मध्यकालीन संस्कारों, अनुशासनों, रूढ़ियों आदि से मुक्त है। अपने समय के प्रति सजगता, दिनकर की संवेदना की अनिवार्य शर्त बनती हैं। उनकी बौद्धिक एवं वैचारिक विद्रोहात्मकता पुरानी मान्यताओं को तोड़ती है तथा व्यवस्था के खोखलेपन को उजागर करती है। दिनकर की संवेदना आधुनिक सत्य है, जिसके ज़रिये वे सामाजिक एवं व्यवस्थागत यथार्थ को देखते हैं। दरअस्ल, उनकी परिवेशगत सचेतनता में से ही विद्रोह निकलता है। वे विकृत चीज़ों का वास्तविक रूप जान लेते हैं, उनके दबाव को ग़लत समझते हैं, उनका विरोध करते हैं, उन्हें अस्वीकार करते हैं और उनके ख़िलाफ़ विद्रोह करते हैं।

दिनकर के विद्रोह और उनकी आधुनिक संवेदना का प्रारंभ से अंत तक आपसी गहरा संबंध बना रहा। इसीलिए वे यथास्थिति का जमकर विरोध कर सके। लेकिन यह भी अकाट्य तथ्य है कि उनका विद्रोह 'विचार' पर टिका हुआ है, न कि 'भावना' पर। वे अपने विद्रोहात्मक आवेश को विचार द्वारा ही संयत करके उसे कलात्मक अभिव्यक्ति के योग्य बनाते हैं। उनके काव्य में ज़िन्दगी के शासक बनने की प्रेरणा है तो मूल्य व्यवस्था को विकसित करते हुए मानव समस्या का पारदर्शी चित्रण भी है। दिनकर का विद्रोह स्वर लक्ष्यभेदी है तथा समाज, व्यवस्था एवं शासन तंत्र को ठीक-ठीक समझने का कालजयी विचार है। इस तरह के इतिहास रचने के संघर्ष एवं विद्रोह की उन्होंने निरंतर विकासमान परिभाषा दी ताकि कला और साहित्य सुरक्षित रह सकें।

अब्दुर्रहमान सूफ़ी

इस्लामी वैज्ञानिकों में एक और वैज्ञानिक अब्दुर्रहमान सूफ़ी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बूया बादशाहों में अज़दुद्दौला ने अपने अल्पकालीन शासनकाल में मामून रशीद के ज़माने की याद ताज़ा कर दी थी, क्योंकि मामून रशीद की तरह वे न केवल ज्ञान-विज्ञान के संरक्षक थे, बल्कि ख़ुद भी एक कुशल गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। इन विद्याओं में अबुल हसन अब्दुर्रहमान बिन उमर सूफ़ी को उनके उस्ताद होने का गौरव प्राप्त है। अब्दुर्रहमान सूफ़ी ईरान के प्रसिद्ध शहर 'रे' में सन 903 ई॰ में पैदा हुए, फिर इस्लामी राज्य के दूसरे शहरों में गणित और खगोल विज्ञान में अपनी शिक्षा पूर्ण की। मुस्लिम खगोल वैज्ञानिकों में वह एक ऊंचे मर्तबे के मालिक हैं।

अज़दुद्दौला ने गणित और खगोलशास्त्र में जो उच्च पद प्राप्त किया वह सब अर्ब्दुहमान सूफ़ी का उपकार था। खगोलशास्त्र में अब्दुर्रहमान सूफ़ी ने जो विशेष शोधात्मक कार्य किये, वे उन अन्तरिक्ष ग्रह समूहों से संबंधित थे, जिन्हें अरब खगोल वैज्ञानिक ग्रहों के मुक़ाबले में 'तारामंडल' कहते थे। इन शोधों की वजह से उन्होंने खगोलशास्त्र पर एक किताब लिखी थी, जिसका नाम ''अल-कवाकिबुल साबित'' थां।

यह किताब रेखा चित्रों से परिपूर्ण थी, इसमें सितारों के असंख्य नक़शे दिये हुए थे। खगोलशास्त्र पर इस्लामी काल में जो किताबें रचित की गयीं, उनमें से तीन किताबें इस कला में अत्युत्तम कृति की हैसियत रखती हैं और इन तीनों किताबों में पहला स्थान अब्दुर्रहमान सूफ़ी की किताब 'अल-कवाकिबुल साबित' को प्राप्त है। इस किताब का फ्रांसीसी अनुवाद रूस के प्रसिद्ध शहर पैट्ज़वर्ग में सन 1874 ई॰ में प्रकाशित हुआ।

ہماری اہم مطبوعات

مسلم پرسنل لا، یکساں سول کوڈ
اور
حج وقربانی کے احکام ومسائل پر

مسلم پرسنل لا پر اعتراضات کی حقیقت	پروفیسر عمر حیات خاں غوریؒ	70.00
مسلم پرسنل لا - اہمیت، افادیت اور ضرورت	مولانا محمد یوسفؒ	16.00
مسلم پرسنل لا اور یکساں سول کوڈ	مولانا شمس پیرزادہؒ	20.00
مسلم پرسنل لا	مولانا صدرالدین اصلاحیؒ	16.00
یکساں سول کوڈ اور مسلمان	مولانا صدرالدین اصلاحیؒ	35.00
نفقہ مطلقہ ایک علمی جائزہ	مولانا سید جلال الدین عمری	16.00
یکساں سول کوڈ تاریخ کے تناظر میں	پروفیسر عمر حیات خاں غوریؒ	35.00
حج کس لیے؟	مولانا شمس پیرزادہؒ	10.00
حج کیا ہے؟	مولانا سید حامد علیؒ	30.00
حضرت ابراہیمؑ حیات، دعوت اور عالمی اثرات	ڈاکٹر محمد رضی الاسلام ندوی	60.00
آج بھی ہو جو براہیم کا ایماں پیدا	اخلاق حسین	90.00
تفہیم الاحادیث جلد چہارم [روزہ، حج]	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	250.00
حضرت ابراہیمؑ	مائل خیرآبادیؒ	18.00
کلام نبوت جلد دوم [نماز، روزہ، زکوٰۃ اور حج]	محمد فاروق خاں	160.00
خطبات [اردو] پنجم [حقیقت حج]	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	25.00
خطبات حرم	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	12.00
کاروانِ حجاز (سفرنامہ حج)	ماہر القادریؒ	45.00
مشاہدات حرمین (سفرنامہ حج)	ڈاکٹر سید اسعد گیلانیؒ	30.00
سوئے حرم چلا (سفرنامہ حج)	مولانا سید جلال الدین عمری	32.00
حج کا پیغام (سی ڈی)	خرم مرادؒ	30.00
قربانی	مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ	6.00
قربانی تاریخ، حقیقت اور اعتراضات	پروفیسر سید مسعود احمد	50.00

عید قرباں	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	8.00
حج کے احکام ومسائل	بنت الاسلام	50.00
ترجمہ قرآن مجید مع مختصر حواشی [اردو] 20X30/8	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	375.00
ترجمہ قرآن مجید مع مختصر حواشی [اردو] 23X36/32	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	240.00
ترجمہ قرآن مجید مع مختصر حواشی [اردو] 23X36/16	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	400.00
تفہیم القرآن جلد اوّل تا ششم	مولانا سیدابوالاعلیٰ مودودیؒ	2130.00

انگریزی اور ہندی کتابیں

Muslim Personal Law and Unifrom Civil Code	Shams Peerzada	24.00
Muslim Personal Law	Edited By:Dr.F.R.Faridi Dr.M.N.Siddiqi	90.00
Every Man's Guide to Hajj and Umrah	Abdul Aziz Kamal	60.00
Fundamentals of Islam Part-V	Sayyid Abul Ala Maudoodi	32.00
अनूदित कुरआन मजीद 23X36/16	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह)	300.00
मुस्लिम पर्सनल लॉ - धार्मिक व सामुदायिक दृष्टिकोण से	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	10.00
मुस्लिम पर्सनल लॉ और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	18.00
हज और उसका तरीका	सय्यद हामिद अली	20.00
कुरबानी (पाकेट साइज़)	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह)	6.00
खुतबात - 5 (हज की हकीकत)	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह)	22.00
हज़रत इबराहीम (अलैहि)	माइल खैराबादी	16.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह)	18.00

उर्दू، ہندی اور انگریزی زبانوں میں دینی، اصلاحی، تحریکی اور نصابی کتابوں کا اہم مرکز

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D)
• Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा की लघुकथाएं

(1)

बिगड़ते रास्ते

संयम विजय के घर जा ही रहा था कि वह रास्ते में मिल गया ।

"अरे विजय ! मैं तुम्हारे घर ही जा रहा था ।"

"मैं भी तुमसे मिलना चाह रहा था ।"

"क्यों ! कोई ख़ास बात ?"

"हां यार ! अपना वो दीपेन्द्र...।" बात पूरी भी नहीं हुई थी कि संयम ने बात को लपक लिया ।

"मैं भी तो दीपेन्द्र के सिलसिले में ही मिलना चाह रहा था...।"

"किस संदर्भ में ?"

"संदर्भ क्या ! अब तुमसे क्या छिपाना ! पिछले एकाध साल से न जाने उसे क्या हो गया है...जब मिलता है, बस पैसा ही उधार मांगता है...लौटाने का नाम तक नहीं लेता ।"

"यही बात तो मेरे साथ है...अब इतने पैसे मैं भी कहां से लाऊं...अपना ही ख़र्च मुश्किल से सलता है ...फिर हर महीने तो असंभव-सा होने लगा है । इस बार उसे मना कर दिया, तो उसने मुंह बना लिया ।"

"हम उसके मित्र हैं...उसके हित में सोचना तो हमारा दायित्व है...मैं उसके ऑफ़िस गया था, इतनी ही देर में जो मैंने देखा, सुना या महसूस किया...या जब उसके घर गया था तब...उसके आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर आ पहुंचा हूं...।"

"किस निष्कर्ष पर ?"

"वह अपने बॉस से तुलना करने पर तुला रहता है । बॉस ने अपने बच्चो को सोफ़िया स्कूल में डाला, तो उसने भी अपने बच्चों को वहीं डाल दिया । बॉस ने जो सूट सिलवाया...उसने भी । बॉस ने पत्नी के लिए जितनी क़ीमत की साड़ी ख़रीदी...उसने उससे भी क़ीमती साड़ी ख़रीद ली । बॉस जितनी मैग़्ज़ींस ख़रीदता है...वह भी उतनी ही...और क्या-क्या बताऊं !"

"यह तो अति उच्च महत्वाकांक्षा के लक्षण हैं, जिसकी परिणति सदैव नकारात्मक ही होती है...ऐसे में व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रोगों का शिकार भी हो जाता है...।"

संयम ने कुछ सोचते हुए कहा, "यार ! तुम ठीक कह रहे हो । कल जब वह मेरे घर आया, तो मैंने महसूस किया कि वह शनै: शनै: मानसिक रोग की ओर बढ़ रहा है... बात-बात में बिना कारण हंसता, कभी वह एकदम गंभीर हो जाता, रोने लगता तो कभी अकस्मात अप्रत्याशित रूप से क्रोधित हो जाता था ।"

"तुम ठीक कहते हो ! यह तो मानसिक रोग के ही आरंभिक लक्षण हैं ।"

"किन्तु हमें इससे पूर्व कि वह इस रोग का शिकार हो जाए, उसकी पत्नी के परामर्श से उसे किसी विशेषज्ञ से दिखाना चाहिए ।" यह विचार आते ही दोनों दीपेन्द्र के घर की ओर चल दिये ।

(2)

ऊंचे क़द वाला

"डॉक्टर साहेब ! ज़रा इस मरीज़ को देख लीजिए । इसकी हालत लगता है, ज़्यादा ही ख़राब है ।" एक व्यक्ति ने कहा ।

"इसका नाम...उम्र...क्या हुआ है इसे ?"

"सर ! नाम, उम्र कुछ भी लिख लीजिए...क्या हुआ है...यह आप ख़ुद देख लीजिए ।"

"मतलब ! ...तुम कौन हो इसके ?"

"मैं एक आदमी हूं...इसी शहर में रिक्शा चलाता हूं... मुझे यह इसी तरह बेसुध नाले में पड़ा हुआ मिला था...मैंने देखा...इसकी सांस चल रही थी...उठा लाया आपके पास ।"

"इस पर ख़र्च काफ़ी आ जाएगा..." ऊपर से नीचे तक उसके रंग-रूप को देखते हुए डॉक्टर ने कहा ।

"सरकारी अस्पताल में भी...!"

"हम प्रेसक्रिप्शन ही तो लिखकर दे सकते हैं...दवाएं तो बाज़ार से ही ख़रीदनी पड़ेंगी...।"

"मगर सर ! मेरे पास तो (जेब में हाथ डालकर पैसे निकालते हुए) कुल यही है...यानी दो-सौ बयालिस रुपये।"

"फ़िलहाल तो हो जाएगा...मगर पूरी तरह ठीक होने में...लगभग हज़ार-एक तो ख़र्च हो ही जाएगा...।"

"ठीक है सर...आदमी है...इसकी जान तो बचानी है...यूं मालिक की जो इच्छा...।"

कुछ रुककर वह सोचने लगा...बड़े-बड़े नेता...ऑफ़िसर...इन्हें ये लोग कुछ नहीं कहते...मुफ़्त में बढ़िया इलाज करते हैं और हम जैसों का रहा-सहा ख़ून भी चूसने से नहीं चूकते...उसे स्मरण हो आया, इसी तरह वह एक बार रिश्ते में किसी को यहां इलाज हेतु लेकर आया था...कोई नेता दुर्घटनाग्रस्त हो गये थे, तो डॉक्टर यहां के सारे मरीज़ों को छोड़कर, न केवल उसका इलाज करने में जुट गये थे, बल्कि उनके साथ आये लोगों से भी ख़ुशामदी लहज़े में पेश आ रहे थे। इसी में वहां एक मरीज़ दम भी तोड़ गया था। इसी पर भी कहीं कुछ नहीं हुआ था। थोड़ा बहुत मरीज़ों ने ही हल्ला-गुल्ला किया था। बस फिर सब शांत। लाश, घर वालों को सौंप कर डॉक्टरों ने अपनी ड्यूटी की इतिश्री कर ली थी। फिर सोचा कि डॉक्टर से कुछ कहूं। मगर फिर ध्यान आया, इस कहने सुनने में कहीं यह बेचारा...यह ठीक हो जाए, तो चुप नहीं बैठूंगा...यहां सवाल एक मरीज़ मात्र का नहीं है न...।

"सुनो ! ये पर्चा लो...और दवाएं लेते आओ...मैं इसे भर्ती कर लेता हूं...।"

"जी शुक्रिया !" इतना कहकर उसने मरीज़ की ओर देखा...उसे संतोष हुआ...उसका श्रम रंग ला रहा था।

मनमुटाव

बात अभी हुए विधानसभा चुनावों की है। पड़ोसियों के यहां मतदान की पूर्व संध्या को अकस्मात बात चल पड़ी। पोती ने जो पहली बार वोट का अधिकार मिलने और अपनी कालिज-मेट्स के साथ दिन भर इस विषय में बहस करने के बाद विशेष रूप से उत्साहित थी, अचानक दादा जी से पूछ लिया कि वह अपना वोट किसे देंगे। दादाजी कुछ कहते उससे पहले दादी बोलीं, अरे, इनसे क्या पूछती हो। इनकी तो उम्र बीत गयी एक ही पार्टी की वफ़ादारी में प्रत्याशी कोई भी हो यह तो अपना "क़ीमती वोट" उसी पार्टी को ही देंगे। बात शायद आगे न बढ़ती यदि बेटा न बोल पड़ता, "इसी कारण तो आज यह हालत हो रही है !" बात दादाजी को चुभ गयी यह उनके हाव-भाव से भांप कर बहू ने बात संभालने की गरज़ से कहा, "वैसे तो सब ही एक जैसे हैं। वोट पा लेने का बाद इधर का रास्ता ही भूल जाते हैं।

पोती जो कब से मुंह खोलने को उतावली हो रही थी अब और धैर्य न रख पायी और सुनी-सुनायी किताबी भाषा में फूट पड़ी, "वोट का अधिकार तो सबका मौलिक अधिकार है, कोई कुछ भी कहे मैं तो अपनी मर्ज़ी से वोट डालूंगी।"

वोट पड़ गये। नतीजे भी आ गये, किन्तु पड़ोस में मनमुटाव अभी भी बाक़ी है।

• ओमप्रकाश बजाज

गृह प्रवेश

ज़िन्दगी भर वे एक किरायेदार बने रहे। जैसे-तैसे अपना घर हुआ भी तो बुढ़ापे में। गृह प्रवेश को लेकर पत्नी बहुत उत्साहित थीं। अब तक तो वे औरों के ही गृह प्रवेश में जाते रहे हैं। कभी फूलों का गुलदस्ता लेकर, कभी तोहफ़े का डिब्बा लेकर, तो कभी मुख पर ज़बरदस्ती की मुस्कान लपेटे। गृहस्वामी के चेहरे का उल्लास कई दिनों तक उसके मन में टीस बना रहता कि हम तो बेघर ही रह गये। लिहाज़ा, उल्लसित पत्नी मेहमानों की लिस्ट बनाने बैठी ही थी कि पति ने टोकते हुए कहा, "यह क्या कर रही हो भाग्यवान ! हमें नहीं बुलाना है किसी को भी। दूसरों को ख़ुश देखकर किसी को ख़ुशी नहीं मिलती। हम अकेले ही कर लेंगे अपने घर की पूजा।"

पत्नी ने कहा, "ख़ुशी तो कभी हमें भी नहीं मिली किसी को उसके घर की शुभकामनाएं देते हुए फिर भी हम गये न ! बधाई भी दी और तोहफ़े भी। अब जब हमारी बारी आयी है तो मन से मिली सच्ची शुभकामनाओं की उम्मीद कैसी ? यह सब तो ऐसे ही चलता है और चलता रहेगा।"

पति को पत्नी की बात सही लगी, फिर वे भी पूरे जोश और उत्साह के साथ गृह-प्रवेश में बुलाये जाने वाले मेहमानों की लिस्ट बनाने में उसकी मदद करने लगे।

रेनू 'अंशुल'
ग़ाज़ियाबाद

हम नहीं हैं अब पीड़िता !

■ फ्लेविया एग्नेस
■ ऑड्रे डी मेलो

हमारी टीम ने जो मामले कोर्ट में लड़े गये उनके आधार पर कुछ प्रश्नों को उठाया है । हमारी पूरी टीम घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की मदद करती हैं । 2011 में एक चार साल की बच्ची के साथ हुए बलात्कार का मसला एक अशिक्षित, ग़रीब मां लेकर आयी और न्याय की मांग की । इस बच्ची का बलात्कार स्कूल के चौकीदार ने किया । स्कूल की महिला प्राचार्या के दबाव के कारण पुलिस ने तीन दिन तक एफ॰आई॰आर॰ दर्ज नहीं की । अस्पताल के डॉक्टरों ने जब बलात्कार होने की पुष्टि की तब जाकर एफ॰आई॰आर॰ दर्ज हुई । अख़बारों में यह समाचार आने लग गये कि बच्ची की मां पागल है और उसने स्कूल प्रशासन से 10 लाख रुपये मांगे है ताकि केस को निपटाया जा सके । ऐसे समय संस्था ने केस लड़ने का बीड़ा उठाया । स्कूल के शक्तिशाली वकील के सामने खड़े हुए । यहीं से संघर्षशील पीड़िताओं को मदद देने का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । इस केस से पहले इनकी भी सोच यही थी कि बलात्कार अजनबियों द्वारा किया जाता है, जो सही नहीं था । जब मीडिया में यह आता कि न्यायाधीश ने पीड़िता से यह कहा कि क्या तुम इससे शादी करोगी तो सिर शर्म से झुक जाता था । जब पुलिस व अन्य घटक हल्के-फुल्के ढंग से यह कहते कि यह सही है और यह ग़लत तो गुस्सा आता था । उच्च व सर्वोच्च न्यायालय के कई फ़ैसलों को पढ़ा परंतु जो वास्तविकता सामने थी उसके लिए कोई तैयार न कर सका ।

अन्दर की वास्तविकता : पिछले 3 सालों से 350 मामलों का अध्ययन किया । चार्जशीट को पढ़ा । कोर्ट की प्रक्रिया को देखा । इसके अलग-अलग घटक पुलिस, अस्पताल, बचाव पक्ष के साथ वार्तालाप किया । इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण काम पीड़िता की पूरी यात्रा जो जांच से ट्रायल तक की थी उससे जुड़े । इस जुड़ाव से कई पीड़िताओं को बचा पाये और इसी से एक नयी दृष्टि मिली । जो अध्ययन में निकला वह वही था जो 2013 में दिल्ली के 2013 के रेप ट्रायल में हिंदू समाचार पत्र ने लिखा था । तीसरे वे मामले थे जिसमें अपहरण था और एक अन्य वह श्रेणी जिसमें विवाह करने का वादा था । इस तरह के मामलों को सामान्यत: झूठे मामले कहा जाता है, जबकि इसमें लड़की की कोई ग़लती नहीं होती है । इनमें या तो माता-पिता लड़की या लड़के की इच्छा के विरुद्ध शिकायत दर्ज करते हैं इसमें लड़का या पुरुष जबरन लड़की से संबंध बनाता है और उसको छोड़ देता है । पोक्सो क़ानून के तहत रिपोर्ट की अनिवार्यता व बच्चों की उम्र को 16 से 18 करने के बाद काफ़ी किशोरों पर केस दर्ज हुए हैं ।

सज़ा की दर : नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार सज़ा की दर 25 प्रतिशत है, परंतु हमारी संस्था के शोध के अनुसार यह 10 से 12 प्रतिशत के बीच है । इसके अलावा पीड़िता का विद्रोही हो जाना व एफ़॰आई॰आर॰ में देरी होना, ग़लत जांच, पर्याप्त सबूत न होना, गवाहों के विरोधाभासी बयान, सरकारी वकीलों की उदासीनता व कार्यभार, छोटी बच्ची से भी ख़तरनाक तरीक़े से बहस करना, कोर्ट द्वारा प्रोटोकोल की पालना नहीं करना व अनुभवहीन व असंवेदनशील न्यायाधीशों के कारण भी सज़ा होना मुश्किल हो जाता है । जब एक केस को एफ़॰आई॰आर॰ से लेकर अंतिम कड़ी तक जांचा-परखा जाता है और उस पर पूरी निगरानी रखी जाती है तभी फ़ैसले में क्या है यह पता लगता है । कुछ इस तरह के मामलों से इस बात को समझा जा सकता है ।

एक 14 साल की ग़रीब लड़की प्रिया को उसकी मां अस्पताल लेकर गयी क्योंकि उसकी माहवारी नहीं हो रही थी । जांच में पाया कि वह गर्भवती है । उस बच्ची ने बताया कि जिस घर में वह काम करती है, उस घर के मुखिया ने उसके साथ बलात्कार किया । उसने इस बात को किसी को नहीं बताया पर उस घर में जाना बंद कर दिया । प्रिया की मां ने अस्पताल वालों से अनुरोध किया कि वे केस दर्ज नहीं कराएं । वे इसका गर्भ समापन कर दें ताकि उसकी बच्ची बदनामी से बच सके । यह संभव नहीं था क्योंकि प्रिया का

गर्भ 5 महीने का था । जब पड़ोसियों को पता लगा तो उन्होंने उस प्रमुख की जमकर पिटाई की । अंततः इसमें केस दर्ज हुआ ।

झूठे मामले : जब प्रिया व उसकी मां ने हमसे संपर्क किया तो यह दिल तोड़ने वाला दृश्य था । प्रिया को महिला अल्पावास गृह में रखवाया । उसकी मां के पास तो इतने पैसे भी नहीं थे कि वह बस में बैठकर उससे मिलने आ पाती । जो बच्च पैदा हुआ उसे गोद दे दिया । ट्रायल के दौरान प्रिया ने अच्छे से बयान दिये और दूसरी तरफ़ के वकीलों के तीखे सवालों को भी झेला । मां बहुत ही अपमानित महसूस कर रही थी क्योंकि उसके पति ने उसे छोड़ दिया । डी॰एन॰ ए॰ रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि प्रमुख उस बच्चे का पिता नहीं था । जांच अधिकारी व सरकारी वकील ने प्रिया को झूठा कहा । इसमें अब सज़ा का तो सवाल ही नहीं रहा । संस्था ने प्रिया व उसकी मां की मदद करने का वादा किया । अचानक एक दिन अख़बार में समाचार छपा कि जिसमें मां को एक षड्यंत्रकारी महिला बताया और लिखा कि उसने प्रमुख को जान-बूझकर फंसाने का प्रयास किया क्योंकि वह झुग्गी-झोपड़ी विकास योजना में अपना नाम जुड़वाना चाहती थी । इससे प्रिया की दुनिया उजड़ गयी और उसने आत्महत्या करने का विचार किया । मां जो 40 साल से उस बस्ती में रह रही थी उसे घर छोड़ना पड़ा । किसी ने यह सवाल खड़ा नहीं किया कि क्यों 14 साल की बच्ची गर्भवती हुई ? कोर्ट के रिकॉर्ड में यह 'झूठा' केस था ।

एक दूसरा मामला सेल्वी का था । वह एकल मां की बच्ची थी । तमिल स्कूल से इसने पढ़ाई छोड़ी । इस सेल्वी की पड़ोस में रहने वाले एक लड़के से दोस्ती हो गयी । उसे एकदम पता लगा कि वह गर्भवती हो गयी है । उसका परिवार किसी तरह शादी के लिए तैयार हो गया । सेल्वी अस्पताल में जांच के लिए गयी । वह 15 साल की अविवाहित थी और गर्भवती । इस कारण रजिस्ट्रेशन स्टाफ़ ने पुलिस को बुलाया और उसकी एफ़॰आई॰आर॰ दर्ज हुई और लड़का गिरफ़्तार हो गया । लड़की ने संस्था से मदद मांगी कि उसके पुरुष मित्र को जेल से छुड़वाए और उससे उसकी मुलाक़ात कराने में मदद करें । यह संभव नहीं था । एक महीने बाद उसके बच्ची हुई । बाद में वह अपनी बच्ची के साथ हर तारीख़ पर कोर्ट में आती रही ।

कोर्ट से दोष मुक्त होना : संस्था को यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या लड़के का परिवार कोर्ट से दोष मुक्त होने पर शादी के लिए तैयार होगा ? परिवार को काफ़ी बदनामी झेलनी पड़ी और काफ़ी पैसा ख़र्च हुआ । ट्रायल के दौरान जब उस लड़की की उम्र पूछी तो उसने कहा 18 वर्ष । जज ने ज़्यादा जांच-पड़ताल नहीं की और उसे दोषमुक्त छोड़ दिया । कोर्ट के रिकॉर्ड में यह भी झूठा मामला था । अगर साल्वी उच्च घराने की होती तो वह सार्वजनिक अस्पताल नहीं जाती और न ही कोई केस दर्ज होता । 16 साल की चांद की एक लड़के से दोस्ती थी । चांद का पिता उसका एक साल से बलात्कार कर रहा था । यह बात उसकी मां भी जानती थी । चांद ने अपने पुरुष मित्र से मदद मांगी और इसने सलाह दी कि एफ॰आई॰आर॰ दर्ज करवाए । वह रिपोर्ट दर्ज करती उससे पहले ही पुलिस ने लड़की के माता-पिता व समुदाय के अन्य बड़ों को बुलाया । चांद ने तय कर रखा था कि वह कार्रवाई करेगी । अचानक वह सदमे में आ गयी । उसे ट्रामा परामर्श केन्द्र भेजा । उस परिवार व पड़ोसियों ने आरोप लगाया कि उसने अपने पिता को गिरफ़्तार करवाया । ट्रायल के दौरान उसने कहा कि मैंने अपने पिता के ख़िलाफ़ एफ़॰आई॰आर॰ नहीं लिखवायी । पुलिस ने झूठा केस दर्ज किया है । उसने कहा कि उसका शारीरिक संबंध उसके पुरुष मित्र से था ।

चांद का पिता कोर्ट से बरी हो गया । वह उसी घर में रह रहा है । चांद के साथ क्या हो रहा होगा कोई नहीं जानता । पारिवारिक निष्ठा व इस कुंठा से ग्रसित (उसने अपने ही पिता को जेल भेज दिया) लड़कियों को इसी तरह बयान देने पड़ते हैं । एक 13 साल की सीमा को एक पार्टी में चार लड़कों ने उसे नशीली दवा पिलाकर बलात्कार किया । जब उसे होश आया तब जैसे-तैसे वह घर पहुंची । उसकी मां उसे अस्पताल ले गयी । पहचान के समय सीमा ने आरोपियों को पहचान लिया । जब सीमा का ट्रायल शुरू हुआ तो वह अस्पताल में भर्ती हो गयी और आरोपियों को पहचानने से मना कर दिया । हालांकि बिस्तर के ख़ून के धब्बे से डी॰एन॰ए॰ मैच हो गया पर आरोपी कोर्ट से बरी हो गये । यह फ़ैसला उसी दिन आया जिस दिन शक्ति मिल रेप केस का फ़ैसला आया जिसमें अभियुक्तों को फ़ांसी की सज़ा सुनायी गयी । दूसरी तरफ़ वह आरोपी उसी मुहल्ले में खुले घूम रहे हैं । बरी होने के कई कारण होते हैं उन्हें झूठा केस कहना ग़लत है । इसके बजाय हमें जितने घटक हैं उनकी जवाबदेही पूछनी चाहिए और जो संघर्षशील पीड़िता है उसको मध्य में रखकर सारी कार्रवाई होनी चाहिए ।

(विविधा फ़ीचर्स)

महान चिकित्सक इसहाक़ इसराईली

■ मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

इसहाक़ इसराईली मिस्र में फ़ातिमी सल्तनत के संस्थापक उबैदुल्लाह मेहदी के शाही चिकित्सक थे । उनका पूरा नाम अबू याक़ूब इसहाक़ बिन सुलैमान इसराईली है । आप यहूदी नस्ल से संबंध रखते थे, जैसा कि आपके लक़ब इसराईली से मालूम होता है । वे एक बहुत बड़े चिकित्साशास्त्री थे, उन्होंने अपनी निजी शोध और अनुभव की बिना पर निम्नलिखित किताबों की रचना की ।

1. किताबुल हुम्मयात : इस किताब में बुख़ारों की क़िस्में, लक्षण, कारण और निवारण के बहुत से भेद बताये गये हैं और उनका विस्तृत जायज़ा लिया गया है ।

2. किताबुल मुफ़्रदात : इस किताब में अलग-अलग दवाओं की विशेषताएं बतायी गयी हैं ।

3. किताबुलबौल : इसमें पेशाब के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है और पेशाब संबंधी रोगों को दूर करने के उपाय बताए गये हैं ।

इसहाक़ इसराईली की उपर्युक्त किताबें एक ज़माने में यूरोप के विश्वविद्यालयों में पढ़ायी जाती रही हैं और लोग उनसे बराबर लाभांवित होते रहे हैं, क्योंकि ये ऐसी अनमोल किताबें थी, जिनसे बेनियाज़ नहीं हुआ जा सकता है । इसहाक़ इसराईली की मृत्यु उबैदुल्लाह मेहदी के अंतिम शासनकाल में अर्थात मेहदी की मृत्यु से दो वर्ष पूर्व 932 ई० में हुई । चिकित्सा क्षेत्र के एक और महान चिकित्सक अहमद जज़ार का नाम भी उल्लेखनीय है । आपका पूरा नाम अहमद बिन इबराहीम बिन ख़ालिद बिन जज़ार है । आपका जन्म पश्चिमी ट्यूनिस के एक प्रसिद्ध शहर क़ैरवान में सन 900 ई० में हुआ । अहमद जज़ार को चिकित्साशास्त्र से विशेष रुचि थी । इन्होंने अब्दुल्लाह मेहदी के मुख्य चिकित्सक इसहाक़ इसराईली के अधीन काम करना प्रारंभ किया और उनसे चिकित्सा के बहुत से गुण सीखे तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त की । इसके बाद वर्षों वर्ष तक चिकित्सा विज्ञान में शोध कीं और उनको एक किताब के रूप में संगृहीत किया ।

अहमद जज़ार की संगृहीत की हुई उस किताब का नाम 'ज़ादुलमसाफ़िर' रखा गया तथा उस किताब की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें छूत की चार प्रसिद्ध बीमारियों



अर्थात ख़सरा, चेचक, ज़ुकाम और ताऊन के कारण, लक्षण और उपचार पर इतनी विस्तृत वार्ता की गयी है, जैसी वार्ता इससे पहले किसी किताब में नहीं की गयी थी । मध्य एशिया में यह किताब यूरोप में बहुत प्रसिद्ध हुई और इस किताब को छूत की उन चार बीमारियों पर एक सेन्टर की तरह सोचा जाता था । अत: पश्चिम में इस किताब का अनुवाद यूरोप की उन तीनों भाषाओं में अर्थात लातीनी, यूनानी और इब्रानी में हुआ था, जो उस काल में पश्चिम की इल्मी भाषाएं सीखी जाती थीं । इस महान चिकित्सक की मृत्यु दसवीं सदी में हुई ।

सेना में अफ़सरों की पद श्रेणी

स्थल सेना

जनरल, लेफ्टीनेंट जनरल, मेजर जनरल, ब्रिगेडियर, कर्नल, लेफ्टिनेंट कर्नल, मेजर, कैप्टन, लेफ्टिनेंट ।

वायु सेना

एयर चीफ़ मार्शल, एयर मार्शल, एयर वाइस मार्शल, एयर कमोडोर, ग्रुप कैप्टन, विंग कमांडर, रुक्वाड्रून लीडर, फ्लाइट लेफ्टिनेंट, फ्लाइंग आफ़िसर ।

जल सेना

एडमिरल, वाइस एडमिरल, रियर एडमिरल, कमोडोर, कैप्टन, कमांडर, लेफ्टिनेंट कमांडर, लेफ्टिनेंट सब लेफ्टिनेंट ।

● जूही श्रीवास्तव

बिल्ली और अंधविश्वास

बिल्ली से जुड़ी अनेक दिलचस्प कहानियां हम बचपन से सुनते आये हैं । बिल्ली के संबंध में हमारे समाज में अनेक मुहावरे प्रचलित हैं जैसे हज़ार चूहे खाकर बिलार बनी भगतिन, बिलारी के भाग्य से छींका टूट गया वग़ैरह । बिल्ली को लेकर अनेक अंधविश्वास भी प्रचलित हैं । किसी कार्य से घर से बाहर निकलने पर बिल्ली के रास्ता काट देने पर अपशकुन माना जाता है । बिल्ली के रोने को अमंगलसूचक माना जाता है । संसार में अनेक रूप रंग की बिल्लियां पायी जाती हैं ।

आमतौर पर काले भूरे रंग की बिल्लियां हमने देखी हैं जो हमारे घर के आसपास रहती और पायी जाती हैं । विश्व के अनेक भागों में तरह-तरह के रंग वाली बिल्लियां पायी जाती हैं ।

एकदम काली बिल्ली सामान्यत: कम पायी जाती है । ज़्यादातर काली बिल्लियों के शरीर में सफ़ेद धब्बे पाये जाते हैं जो उनकी ठोड़ी अथवा चेहरे पर होते हैं । मध्य काल में बिल्लियों को शैतान का रूप समझे जाने के कारण काली बिल्ली को हेय दृष्टि से देखा जाता था तथा इस प्रकार की भ्रांति और अंधविश्वास के कारण लोग एकदम काली बिल्ली के बजाय सफ़ेद चकत्ते वाली बिल्ली को पसन्द करने लगे । धीरे-धीरे बिल्कुल सफ़ेद अथवा फिर सफ़ेद धारी वाली बिल्ली को पालने का प्रचलन बढ़ गया । बिल्ली के शरीर में सफ़ेद निशान को लोग शराफ़त का चिन्ह या देवदूत की निशानी मानने लगे । परिणामस्वरूप समाज में काली बिल्ली का महत्व कम हो गया तथा सफ़ेद चकत्ते वाली बिल्ली का महत्व बढ़ गया ।

रंग-बिरंगी धारियों वाली बिल्लियां किसके मन को नहीं भाती । चीते की तरह लगने वाली ये बिल्लियां या तो चकत्ते वाली होती हैं अथवा धारी वाली । काली सफ़ेद तथा अन्य रंगों वाली बिल्ली को अमेरिका में कैलिको के नाम से जाना जाता है ।

कुछ बिल्लियों का रंग अदरक जैसा भी होता है । कुछ बिल्लियां दोरंगी पायी जाती है जैसे सफ़ेद और क्रीम, सफ़ेद और नीली तथा सफ़ेद और काली । कुछ बिल्लियां एकदम सफ़ेद रंग की पायी जाती हैं । इनमें से कुछ बिल्लियों के शरीर के निचले हिस्से में अनियमित चकत्ते होते हैं । सफ़ेद बिल्लियों की आंखें सामान्यत: नीली, नारंगी या पीली होती हैं । नीली आंखों वाली सफ़ेद बिल्ली ढीठ मानी जाती है ।

इतिहासकारों के अनुसार बिल्ली और मनुष्य का रिश्ता लगभग चार हज़ार साल पुराना है । पूर्वी इलाक़ों में भी बिल्ली को इस बात का श्रेय जाता था कि वे नुक़सानदायक जीव जंतुओं को समाप्त करने वाली हैं । यूरोप में ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव के समय बिल्ली के संबंध में कुछ लोगों की सोच में ख़तरनाक ढंग से परिवर्तन आया । इसके बाद क़रीबन पांच शताब्दियों तक बिल्ली को शैतान का दूत समझा गया तथा बिल्ली को चुड़ैल परिवार का सदस्य समझकर उससे नफ़रत की जाने लगी । इससे भी ज़्यादा ख़तरनाक स्थिति तब आयी जब अक्सर किसी समारोह में चुड़ैल के किसी रूप तथा बिल्ली को सार्वजनिक रूप से आग में ज़िन्दा जलाया जाने लगा । 17वीं शताब्दी का आगमन होते-होते बिल्ली के संबंध में लोगों की परंपरागत सोच में परिवर्तन आया और लोगों ने बिल्लियों को फिर से अपनाना शुरू कर दिया । इतना ही नहीं, बिल्ली की सुन्दरता और महत्ता को कला और साहित्य में भी उकेरा जाने लगा तथा वे लोकप्रिय हो गयी ।

भारतीय समाज में बिल्लयों को लेकर अनेक अंधविश्वास प्रचलित हैं । किसी प्रयोजनवश घर से बाहर निकलने पर बिल्ली के रास्ता काट देने पर अपशकुन माना जाता है । घर में बिल्ली के तेज़ आवाज़ में रोदन को अमंगलसूचक माना जाता है ।

● विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।



HOTEL

Al-Zam Zam

RESTAURANT & LODGING



The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.
Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com

Posted on 20-21 October 2014
November 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.10.2014

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

HINDUSTAN
Pavers & Blocks
Group
Established Since 1977

Anwar Khan
+91 9822427700
Akbar Khan
+91 9822497700



HINDUSTAN INDUSTRIES
Your Lifestyle Paving Company

Manufacturers Of Solid Concrete Blocks,
Interlocking Pavers, Tiles &
Allied Concrete Products

Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com

www.hindustangroupgoa.com